हरदत्त का ज़िन्दगीनामा

अमृता प्रीतम

पाठकों से अनुरोध

विकास पेपरबैक्स इस पुस्तक के प्रकाशन, आवरण शिल्प तथा इससे सबधित आपके किसी भी सुझाव का स्वागत करेगा जो आपकी पुस्तक-रुचि के सदभ म भावी प्रकाशनो मे सहयोगी होगा।
कृपया प्रकाशक को अपने सुझाव भेजें।

प्रकाशक
विकास पेपरबक्स
IX/221 मेन राड गाधीनगर, दिल्ली 110031

प्रथम सस्करण
1986

मूल्य
पन्द्रह रुपये

मुद्रक
सजीव प्रिंटस,
महिला कालोनी, गाधीनगर, दिल्ली 110031

HARDATT KA ZINDGINAMA (Hindi Novel)
by Amrita Pritam Price Rs 15.00

1

सुबह के नौ बजे थे, जिस वक्त स्कूल के हैड मास्टर ने चपरासी को भेजकर मदन को उसकी जमात में से बुलाया। हैड मास्टर का खयाल था कि सातवीं में पढ़ता कोई चौदह बरस का मदन, जब उसके कमरे में हाज़िर होगा उसका लम्बा-सा कद उसके कंधों में सिमटा हुआ होगा

पर मदन का ऊंचा सिर आज जैसे जवानी को छू रहा था और उसके तराशे हुए नक्श एक पुख्तगी भी लिए थे मासूमियत भी

हैड मास्टर की आवाज़ उसके गले में कुछ तीखी हो गई पर, होंठों तक लाते हुए उसने आवाज़ को धीमा कर लिया, और पूछा— 'कल रात आतिशबाज़ी के समय मैंने तुम्हें देखा नहीं, तुम कहां थे ?''

'जी ! मैं स्काउट नहीं। सिविल लाइन्ज़ वाली ग्राऊंड में सिर्फ स्काउट लड़के बुलाए गए थे।'

जवाब वाजिब था, इसलिए हैड मास्टर ने सवाल को घुमा कर पूछने की बजाय सीधे पूछा—'कल जार्ज पंचम के जन्म दिन की स्कूल में छुट्टी थी, पर तुम छुट्टी वाले दिन दोपहर को यहां स्कूल में क्यों आये थे ?'

'जी ! दोपहर को नहीं, सुबह। आपने ही कहा था कि एक बार आकर देख जाऊं कि लड़कों ने झंडियाँ ठीक से लगाई हैं कि नहीं।'

मदन की आवाज़ कहीं से विचलित नहीं थी। पर आवाज़ की पुख्तगी ने हैड मास्टर की शंका को भी पुख्तगी दी और उसने मदन की आंखों में गौर से देखते हुए कहा—'पर मैंने झंडियां लगाने के लिए कहा था, ताड़ने के लिए नहीं। तुम्हारे साथ और कौन लड़के थे ?'

'कोई नहीं।'

'तुमने हॉल में से बादशाह की तस्वीर अकेले उतारी थी ?'

'कौन सी तस्वीर ?' मदन की आवाज़ अभी भी कहीं से विचलित नहीं हुई थी।

जा तुमने पिछली मार्च में पढ़े ने भोप कर जलाई है तुम्हारे पास आग जलाने के लिए शायद कागज नहीं था, इसलिए पिछली तरफ की सदियाँ तारमर तुमने आग जलाई '

मैं कुछ नहीं जानता ' मदन के मुंह से निकला, पर साथ ही मदन को यह बात याद हो आई जो एक दिन उसने अपने दादा से पूछी थी कि आपके नाम के साथ भी लिखा जाता है—हरदत्त पंडित गंगाराम हरदत्त, और पिता जी के नाम के साथ भी—पंडित सरस्वती दास हरदत्त। यह हरदत्त हमारी जात है कि आपने कोई तखल्लुस रखा था?—और उसके दादा ने बताया था कि यह हमारी जात है। असल में यह हमारी जात हरि दत्त हुआ करती थी, यही ऋषी और सच बोलने वाला की जात, पर वक्त के साथ यह लफ्ज बिगड़कर हरदत्त बन गया और मदन के मन में उसी बिगड़े हुए लफ्ज को सही अर्थों वाले सही लफ्ज से जोड़ने की ऐसी तमन्ना उठी कि जल्दी से उसने अपनी कही बात को दुरुस्त करते हुए कहा—'जी! बादशाह की तस्वीर मैंने जलाई है '

हैड मास्टर की आवाज एक बेंत की तरह तन गई, उसने पूछा—'तुम जानते हो इसका नतीजा क्या होगा?'

मदन मोहन ने जवाब दिया, 'जी हां, जानता हूं? हमारे स्कूल का नाम किंग जार्ज हिन्दू हाई स्कूल है इसलिए स्कूल को बहुत-सी ग्रांट मिलती है। पर मैंने किंग जार्ज की तस्वीर जलाई है इसलिए ग्रांट बन्द हो जाएगी

हैड मास्टर को लगा कि बेंत की तरह तनी हुई उसकी आवाज का जवाब इस लड़के ने बेंत की तरह तनी हुई आवाज से दिया है और हैड मास्टर की रूह बड़े फख्र से उसकी बाहों में धड़क उठी। उसके मन में आया कि वह कुर्सी से उठकर लड़के को गले से लगा ले। पर उसने दोनों हाथों से कुर्सी की दोनों बाहें थाम लीं और संभल कर कहा—'सरकार के बेंत पता नहीं स्कूल को पड़ेंगे कि नहीं, पर तुम्हारे हाथों पर जरूर पड़ेंगे। जाओ! जाकर अपने साथियों को भी बुलाकर लाओ। मैं जानता हूं तुम अकेले नहीं थे '

मदन कमरे में से बाहर आ गया। और अपनी जमात में जाकर उसने

अपने तीनो साथिया को बुलाकर कहा—'मैंने तुममे से किसी का नाम नही बताया। इसलिए तुम चाहा तो कह दा कि तुम लाग मेरे साथ नही थ।'

मदन के तीनो दास्त कितनी देर तक मदन की आर देखते रहे। शायद इस तरह जैसे एक नायक को देख रह हो, और उनमे एक नायक के लिए शायद ईर्ष्या हो आई, इसलिए तीनो कहने लग कि वह कायर नही, वह भी मदन के साथ हाथो पर बत खाएगे—

मदन ने कही से सुन रखा था कि हथेलिया पर अगर मढक की चर्बी लगा ली जाए ता बेत की मार ज्यादा महसूस नही होती। इसलिए उसने तीनो से कहा कि वह किसी बहान स्कूल म से चले जाए, और जाकर पास के तालाब मे से मढक पकड लाए।

मदन खुद चुपचाप जमात मे बैठ गया। जानता था कि उस पर हड मास्टर की जरूर निगरानी हागी, पर बच्च के सामने पडे हुए लकडी क तख्त पर, अपनी एक किताब खोलकर भी, किताब की इबारत की बजाय वह अपनी जिंदगी की अजीबागरीब इबारत पढता रहा—जिसम उसके तार बाबू पिता की गरीबी का बहुत लम्बा वणन था

वह रावलपिंडी के नजदीक छाटे-से कस्ब माणक्याल मे पैदा हुआ था। उसके पिता सिफ एक तार बाबू थे जिन्ह अट्टाईस रुपय महीना तनख्वाह मिलती थी। और उस तनख्वाह म से बहन भाइया के लिए भी घर म पैसे भजन होते थे। इसलिए उसका ज म खुशी की बात होकर भी दूध की चिन्ता बन गया था

मा न बताया था कि तेरा जन्म मुबारक था, क्याकि उस महीन तरे बाप की दो रुपया तरक्की हुई थी। वही दो रुपय तू अपन दूध के लिए साथ लाया था

पर वह जानता था कि गरीबी से घबरा कर उसके पिता न फौज मे नाम लिखवा दिया था, और डेढ सौ रुपय कमान की खातिर वह घर-बार छोडकर मैसापोटामिया चले गए थे। पर आरमी नौकरी से लौटकर उन्ह फिर वही तार बाबू की नौकरी करनी पडी, जहाँ उनक लिए वही तीस रुपये तनख्वाह थी

जून से जून नही मिल पाता था और ऊपर से घर म एक और बच्चा

आ गया था, उसका छोटा भाई।

फिर बड़े हाथ पांव पटक कर पिता को कीनिया रेलवे में स्टेशन मास्टर की नौकरी मिली थी, पर तीन बरस मुश्किल से गुज़रे थे कि ज़िंदगी के सामने दु:खों का एक नया मोड़ आ गया। पिता की एक आंख में ऐसा दर्द उठा, जिससे आंख की नज़र चली गई। साथ ही नौकरी चली गई। और वापस आकर पिता को जगह जगह काम की तलाश में भटकना पड़ा

और मदन को चुपचाप जमात में बैठे हुए सामने रखी किताब में से वह इबारत दिखाई देने लगी, जो किसी किताब में नहीं लिखी हुई थी, कि मां ने ब्राह्मण होने के नाते जब घर घर में से 'हुदा' मांग कर बच्चों के मुंह में निवाला डालना शुरू किया, तो पिता भी 'हुदे' की रोटी खाने से इंकार कर देते थे, और उसको भी वह रोटी देखकर भूख मर जाती थी सिर्फ छोटे तीन भाई और दो बहन झपट कर वह रोटी चबा लेते थे

'हुदे की रोटी का कोई दर्द मदन के गले में से उठकर उसकी आंखों में उतर आया पर उसे उस वक्त एहसास हुआ, जब जमात के मास्टर ने उसके पास आकर उसकी पीठ पर हाथ रखा, और आहिस्ता से कहा 'बहादुर बच्चे रोया नहीं करते '

उसने हथेली से आंखें पोंछ लीं और झट से मुस्कुराकर मास्टर की ओर देखा। समझ गया कि हैड मास्टर की ओर से मिलने वाली सजा का जमात के मास्टर को पता लग चुका है, और वह सोच रहा है कि मैं उसी सज़ा से घबराकर रो दिया हूं

मदन जानता था कि उसे स्कूल की ओर से ऐसी सजा ज़रूर दी जाएगी, पर जानता था कि स्कूल का कोई भी मास्टर उसे अपने मन से यह सज़ा नहीं दे सकता। इसलिए स्कूल के मास्टर ने भले ही इस वक्त उसकी आंखों में आए पानी का मतलब नहीं समझा था, पर उसका मन अपने मास्टर के लिए आदर से भर उठा जो अभी कुछ देर बाद उसके हाथों पर बेंत मारेगा, पर मारने से पहले उसके कान में कह रहा है कि बहादुर बच्चे रोया नहीं करते

मदन को खयाल आया—कि इस वक्त उसके पिताजी को भले ही

दिल्ली मे एक छोटी सी नौकरी मिली हुई है, पर बच्चो का पढाने का उनके पास कोई साधन नही है, इसलिए उन्होने बच्चा को यहा गुज्जरावाला म दादा के पास भेज रखा है, किसी की मुशीगिरी करके बच्चा की फीसें भी देते हैं, और उनकी दो वक्त की रोटी का जुगाड भी करते है पर उसे लगा कि यही गुज्जरावाला है, जहा उसके बचपन को बडी तजी से जवानी चढ रही है और उसकी समझ मे आया कि उसके घर की गरीबी, देश के लाखो घरो की गरीबी है और इस गुलाम मुल्क के लाखा बच्चे उसके जैसे है

और मदन को लगा—यही स्कूल है—जहा दसवी जमात का एक हुक्मचद यह सभी बातें लिखकर स्कूल के बच्चो का बताता है जाने वह कहा से सीखकर आता है, पर जब चोरी से वह कागज बाटता है, तो उन कागजा को पढकर बहुत गुस्सा आता है कि हम ततीस करोड लोग मुट्ठी-भर अग्रेज़ो के गुलाम क्यो है

आधी छुट्टी की घटी वज गई, तो जमात मे हैड मास्टर का हुक्म मिला कि सभी बच्चे और सभी मास्टर, स्कूल के हॉल कमरे मे इक्ट्ठे हा जाए मदन जानता था कि वेंतो की मार के लिए सभी की गवाही चाहिए। मदन के तीनो साथी लौट आए थे, और वह चारो मिलकर जब हॉल कमरे मे सबके सामने हाजिर होन लगे तो एक ने धीरे से मदन को बताया—"सिफ एक मेढक मिला है, रोटी वाला डिब्बा खाली करके उसमे डाल रखा है "

उस वक्त मदन के मुह से निकला—"पर बद डिब्बे मे तो वह मर जाएगा " और साथ ही उसे हसी आ गई कि इस वक्त भले ही मेढक की चर्बी हाथा पर लगाने का वक्त नही रहा था, पर अगर वक्त होता तो चर्बी निकालने के लिए आखिर उसे मारना ही था

2

स्कूल के हॉल मे से बाहर निकलते हुए मदन और उसके तीनो साथि का सिर ऊचा था। हॉल मे, जब उन चारो की हथेलियो पर गिन गि

हरदत्त का जिदगीनामा

कर छह छह बेंत पड रह थे, एक सन्नाटा छा गया था, इतना—कि यह चारो जब हाल मे स बाहर निकले, सन्नाटा उसी तरह हाल म खडा रहा

और मदन ने बडे गौर से देखा था कि सज़ा देने से पहले जब हैड मास्टर न उठकर सारे स्कूल के सामन इस सज़ा का कारण सुनाया था, ता उसकी आख, नीचे ज़मीन की ओर झुकी हुई थी। और बेता की आवाज से, जब स्कूल के सभी बच्चा की आखे हैरानी से खुली रह गई थी तब स्कूल के सब मास्टरा की आख नीची हा गई थी

मदन को एक ही डर था कि उसके साथियो मे से अगर कोई भी दद से चीख उठा, तो उसका अपमान हा जाएगा। पर उसका अपमान नही हुआ। इसलिए वह बारी-बारी से तीना के कधा पर हाथ रखता हुआ—सिर ऊचा करके हाल मे से बाहर निकला।

चारा न जमात मे जाकर अपने-अपन बस्ते उठाए, और बस्त उठात हुए उन्ह लगा कि उनके हाथ अकडन लगे है। स्कूल से बाहर आकर चारा को याद आया कि रोटी के डिब्बे मे वह बेचारा मेढक अभी तक पडा हुआ है जिसकी चर्बी तो बच गई है, पर वह शायद अब तक मर गया होगा। वह जल्दी से डिब्बा खोलन लग, पर उनम स किसी से भी डिब्बा नही खुल पाया। सभी के हाथा पर बेंतो के निशान उभर आए थे। फिर ढक्कन खोलन के लिए जब उन्होने डिब्बे का ज़ोर से ज़मीन पर पटका, तो उन्होन देखा कि ढक्कन के खुलते ही वह मेढक उछल कर बाहर निकला और जल्दी से एक पत्थर के पीछे छुपन लगा

मदन को हसी आ गई—यार! देखो! हम लोगा ने ता बेंत दखकर भी हाथ नही छुपाए, तुम यू ही छुप रहे हा?

उस रात बुआ की नजरा स हाथो का छुपान के लिए मदन ने कह दिया कि आज स्कूल मे मास्टरो न मिठाई बाटी थी इसलिए बहुत मिठाई खा ली, आज और कुछ नही खा पाऊगा

उसे मालूम था कि आज उसकी उगलिया राटी का निवाला नहीं तोड पाएगी

बुआ ने पूछा कि आज स्कूल म काहे की मिठाइ बाटी गई थी ता

मदन को हंसी आ गई। कहने लगा—कल हमारे बादशाह सलामत का जन्म दिन था, इसलिए खुशी में आज गुलामों को मिठाई बांटी गई

मदन की यह बुआ सरस्वती देवी, बहुत छोटी उम्र में विधवा हो गई थी। तब लगभग छह महीने का बच्चा उसकी गोद में था। और तभी यह मदन, उसका भतीजा पैदा हुआ था, जो पैदा होते ही दूध के लिए तरस गया था, क्योंकि मां मरी बीमार हो गई थी। तब इसी बुआ ने मदन को अपने दूध पर पाला था। बाद में बुआ का अपना बेटा जब तीन बरस का होकर नहीं रहा था, तो उसकी सारी ममता मदन के लिए हो गई थी

इसी बुआ को कुछ दिन बाद मदन ने लाड से कहा कि उसका खद्दर का कोट पहनने का मन करता है। और बुआ ने सब्जी भाजी में से पैसा पैसा जोड़कर बचाए हुए कुछ रुपये निकालकर मदन को खद्दर का कोट सिलवा दिया।

मदन की हथेलियों पर जब से बेंत पड़े थे उसे अपना आप कुछ अच्छा लगने लगा था। महसूस होने लगा था कि देश की आजादी के लिए वह कुछ करने लायक हो गया है। और इन दिनों उसने सुना था कि जो भी कोई लाल रंग का कोट पहनता है, पुलिस उसे उसी वक्त पकड़ कर ले जाती है। वह पहले कदम से आगे अब दूसरा कदम रखना चाहता था, इसलिए पुलिस की नजरों में आने के लिए वह लाल रंग का कोट पहनना चाहता था।

बुआ ने खद्दर का सफेद कोट सिलवा दिया, तो मदन ने गली के मोड़ वाले मुसलमान रंगरेज से वह कोट लाल रंग का रंगवा लिया। पर वह कोट पहनकर अभी गली में नहीं निकला था कि बुआ ने वह कोट उसके गले से उतरवा लिया। कहने लगी—ठाकुर पलने में ही पहचाने जाते हैं। जब तू ने कहा था कि आज स्कूल में बादशाह सलामत के जन्म दिन की गुलामों को मिठाई बांटी गई है अब तू जेल में चला गया तो मेरा क्या होगा ?

मदन के मुंह से अनायास निकला—पर इस देश का क्या होगा बुआ,

बुआ ने मदन को सिर्फ इतना कहा—अच्छा पहले बड़ा हो ले। और मदन के गले से वह कोट उतरवा लिया।

हरदत्त

फिर बहुत थोड़े दिन गुजरे थे—जब मदन को लगा कि वह बहुत बड़ा हो गया है।

शहर की 'कणकमंडी' में अचानक लोग गेहूं के दानों की तरह इकट्ठे हो गए। पता लगा कि एक कड़ाह में खारा पानी डालकर नमक बनाया जाएगा, और सरकार का कानून तोड़ा जाएगा। इस सत्याग्रह की आवाजें सारे शहर में गूंज रही थीं—इन्कलाब जिन्दाबाद इन्कलाब जिन्दाबाद

मदन ने पहली बार इन्कलाब का कुछ अर्थ जाना, और उस सत्याग्रह में शामिल होने के लिए जब 'कणकमंडी' में पहुंचा—वहां चारों ओर घुड़सवार पुलिस खड़ी थी

वहां तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं था, और भीड़ में दूर किसी को कद मदन से ऊंचा था। उस वक्त उसकी नजर एक पीपल पर पड़ी, जिस पर चढ़कर—वह दूर से लोहे का कड़ाहा देख सकता था

उस दिन उसने देखा कि कड़ाहे के गिर्द खड़े होकर जब कुछ लोग देश की स्वतन्त्रता की बात करने लगे थे—पुलिस ने सारी भीड़ पर लाठी चार्ज शुरू कर दिया था

मदन पीपल की एक ऊंची टहनी पर था—जब पहली बार उसके माथे में टीस जैसा सवाल उठा कि पुलिस के लोग तो अंग्रेज नहीं, हमारे अपने देश के लोग हैं फिर वह अपने देश के लोगों पर लाठियां क्यों बरसा रहे हैं?

उस रात मदन को नींद नहीं आई। माथे की नसें कई सवालों की तरह माथे में टूटती रहीं

दूसरे दिन पता लगा कि ठीक उसी वक्त, उसी जगह पर, शहर के सभी लोग फिर इकट्ठे होंगे, पर अब वह भी हाथों में लाठियां लेकर आएंगे। उस दिन मदन ने कुछ तीखे नुकीले पत्थर इकट्ठे करके अपना बस्ता भर लिया और 'कणकमंडी' में चला गया। पुलिस का घेरा उस दिन भी उसी तरह था, पर लोगों में से आज कोई भी निहत्था नहीं था, इसलिए बहुत सी तकरीरें हुई, पर पुलिस ने लाठियां नहीं बरसाई।

उस दिन मदन को लगा कि उसके सवालों में से एक सवाल का जवाब यह है, कि जो भी करना चाहिए ताकत के बल पर करना चाहिए।

यह खबर दूसरे दिन सुबह शहर मे फैली कि रात के अंधेरे मे सरकार ने कांग्रेस के कई मुखिया को पकड लिया है। यह सारे शहर मे हडताल का दिन था, हिंदुओ और मुसलमानो की साझी हडताल का दिन। इसलिए मदन स्कूल म जाकर, उन लडको के साथ खडा हो गया—जो कह रहे थे कि आज स्कूल मे भी हडताल होनी चाहिए—

हडताल हुई। और मदन सडक पर खडा होकर कई साथियो के साथ मिलकर नारे लगाता रहा—इन्कलाब जिंदाबाद इन्कलाब जिंदाबाद

शहर का सबसे बडा पुलिस अफसर एक पठान था, जिसे सभी पहिचानते थे और खा साहब कह कर पुकारते थे। वह जब मोटर साइकिल पर गश्त लगाता हुआ स्कूल के सामने से गुजरा—तो मदन ने आगे बढकर जोर से कहा—टोडी बच्चा हाय हाय और मदन के साथ सभी लडको न आवाज उठाइ—टोडी बच्चा हाय-हाय

खान मुस्कराया, और उसने मोटर साइकिल को मदन की ओर मोडकर, लडको के पास आकर कहा—बेटा! इन नारो से कुछ नही होगा, ऐक्ट!

इस वक्त मदन को इल्हाम की तरह अपने एक सवाल का जवाब मिल गया कि जब अपने देश के लोग अपने देश के लोगो पर लाठिया बरसाते है, वह गुलामी का कैसा शाप होता है। और साथ ही मदन को एक तसल्ली हुई कि अगर लाठिया बरसाने वाले अपनी इस मजबूरी को पहचान सकते हैं—तो देश को कोई खतरा नही है

मदन के मन म जितने भी सवाल और जितने भी जवाब उठते रहे, एक दिन उसके लिए वह बहुत आसान और स्पष्ट हो गए—जब सारा शहर रगो से भर उठा। जिन लोगो की बिसात थी, उन्होने दुकानो को झडियो से सजाया, और जिन लोगो की बिसात नही थी उन्होने रगदार चादरो से अपनी दुकान के छज्जे सजा लिए। पता लगा कि आज जवाहर लाल नेहरू इस शहर म आएगे—

गुरुकुल के सामने एक बहुत बडा मैदान था, जिसमे काश्मीरी हातो धान सुखाते थे और आज वह मैदान सफेद चावलो से भरा जा रहा था

उस दिन मदन न पहली बार जवाहरलाल नेहरू को देखा, और उसके

मुह से निकलते एक एक अक्षर को अपनी छाती मे उतार लिया उस दिन जवाहरलाल न तिरंगे झडे का अथ लोगों को समझाया था, और झडे को सलामी दी थी।

आठवी के इम्तिहान तक का वक्त मदन न बडे सब्र से काट लिया, और इम्तिहान देत ही जब दिल्ली स पिता का खत आया कि अब मदन को दिल्ली भेज दिया जाए, तो मदन न छोटे-स सूटकेस म अपन कपडे रखते हुए कपडो की तह के नीचे वह खद्दर का लाल कोट भी छुपा कर रख लिया, जो उसे अभी तक किसी न पहनने नही दिया था।

बुआ और दादा जी जब उसे गुज्जरावाला से दिल्ली जाने वाली गाडी मे बिठाकर चले गए तो गाडी चलने की देर थी, जब मदन ने अपना लालकोट निकालकर पहन लिया

3

लाल कोट पहनने की जुरअत मदन की चढती जवानी म ताब ले आई। एक बार वह सहारनपुर स्टेशन पर उतर कर प्लेट फाम पर भी घूमता रहा कि शायद उस पर खुफिया या जाहिरा पुलिस की नजर पडेगी, पर वह छोटे बहन भाइयो के लिए स्टेशन से कुछ गन्ने खरीद कर फिर डिब्बे म आ बैठा, किसी ने उसके रोम रोम म जाग रही क्राति की ओर ध्यान नही दिया।

पर दिल्ली पहुचकर ज्य उसने घर का दरवाजा खटखटाया, तब पिता ने घबरा कर उसकी मा को आवाज दी— करम देई! देखो तुम्हारा मद्धी आया है पर लडके को बाद म गले लगाना, पहले उसके गले से यह कोट उतरवा दो पहले ही हमारी तलाशी हो चुकी है

पता लगा कि चार छह दिन पहले कोई दो नौजवान लडके चादनी चौक गए थे, और एक सरकारी खरदिमाग की दुकान स कपडा खरीदकर पैसे दे गए थे और बडल बधवा गए थे कि कुछ और खरीदो फरोख्त करके, वह यह बडल ले जाएगे। वह चले गए, तो दस मिनट बाद यह बडल फट गया

और सारी दुकान मे आग लग गई

पुलिस तब से उन लडको की तलाश मे थी। और शहर मे जिसके घर मे भी टाइप राइटर था, उस घर की तलाशी ले रही थी क्योकि उन लडको की टाइप की हुई चिटठी पुलिस का मिली थी कि 'यह वारदात बहुत छोटी है, आगे बहुत बडी वारदातें होने वाली है '

मदन के पिता के पास दो टाइप राइटर थे, क्योकि वह एक स्कूल म लडको को टाइप, शार्ट हैंड और टेलीग्राफी सिखाते थे, इसलिए अभी तीन दिन हुए उनके घर की तलाशी हुई थी

मदन ने कोट का रग अपनी छाती मे सहेजकर रख लिया, और पिता के कहने पर कोट उतार दिया।

दिल्ली का अगला एक बरस मदन के लिए आसान नही था, स्कूल मे उसकी नौवी जमात की फीस चुकाने के लिए और छोटे बच्चो की फीसो के लिए घर मे पैसा नही था। वह कबाडियो से रद्दी कागज खरीदकर ले आता, उसकी मा लेई बना देती, और वह छोटे छोटे बहन भाइयो को भी साथ लगाकर उन कागजो के लिफाफे बनाकर, खारी बावली के एक दुकानदार के पास बेच आता। इस तरह कोई एक या सवा रुपया रोज का बन जाता था

पर नई मुश्किल उस वक्त आई, जब शहर मे किसी ने लिफाफे बनाने की मशीन लगा ली, और उसके लेई वाले लिफाफो की बिक्री बद हो गई। वही वक्त दसवी जमात की फीस चुकाने का था। पैसे नही थे इसी कारण मदन की पढाई छूट गई

यह 1935 का बरस था, जब मदन की पढाई भी छूट गई, और दिल्ली भी। लाहौर से पिता के चचेरे भाई पडित ठाकुर दास का खत आया कि दयानद स्कूल मे कई तरह का तक्नीकी प्रशिक्षण दिया जा रहा है, इस-लिए अगर वह सारा परिवार लाहौर आ जाए तो बच्चे तक्नीकी प्रशिक्षण ले सकेंगे।

लाहौर, कृष्णा नगर मे एक छोटा-सा मकान किराये पर लेकर, पिता ने टाइपिंग का और बुककीपिंग का काम सिखाने की छोटी-सी नौकरी ढूढ ली, मदन का छोटा भाई साइकिलो की मरम्मत का काम सीखने लगा,

और मदन दस रुपये महीना पर बिजली का काम सीखने लगा। पर एक दिन मदन की छाती म से एक चीख निकलकर उसकी जिन्दगी के आने वाले बरसों को चीर गई—भगवान कोइ नहीं—कहीं नहीं

मदन के पिता को सडक पर एक तांगे से टक्कर हो गई थी, जिस वक्त सडक से लहूलुहान को उठाकर एक डाक्टर का दरवाजा खटखटाया गया, डाक्टर न पट्टी करने से इन्कार कर दिया था, क्योकि डाक्टर की फीस चुकाने के लिए उस वक्त एक रुपया भी पास नहीं था। बहुत देर भटकने के बाद पिता को अस्पताल मे पहुचाया जा सका था। अस्पताल म आख का आप्रेशन भी किया गया, पर पिता की यह आख भी नहीं बच सकी। दोनो आखो की नजर खो चुकी थी। उस समय अस्पताल के डाक्टर न कहा था कि अगर चोट लगने के तुरन्त बाद वह पहला डाक्टर पट्टी कर देता, तो नजर बच सकती थी। सो एक रुपया था जिसके लिए पिता की नजर चली गई थी—और मदन की छाती मे एक चीख जम गइ—भगवान कोई नहीं कहीं नहीं

यही वक्त था जब मदन न सियासी साहित्य पढते हुए एक परी कहानी पढी कि सोवियत रूस म सभी लोग समान हैं। वहा अमीर और गरीब नहीं होते और उसे लगने लग गई कि इस परी कहानी को वह आखो से देखगा, और कानो से सुनगा

आखो स मोहताज पिता ने मदन को बुककीपिंग सिखाई, और अनार कली म दवाइयो की सबसे बडी दुकान बिशन चद एड कपनी मे पच्चीस रुपये की नौकरी ले ली। यह नौकरी सुबह दस बजे से शाम के चार बजे तक थी, इसलिए चार बजे से लेकर गइ रात तक का वक्त मदन का अपना वक्त था

और उसका अपना वक्त उसके देश का वक्त था

लाहौर म जिस वक्त लिफाफे की एक पैसा कीमत बढने पर, कांग्रेस की ओर से सरकार के विरोध म शहर का सबसे बडा जलूस निकलने को था और शहर म एक एक आने का छोटा सा कांग्रेस का झडा बिक रहा था, मदन न एक आने का झडा खरीद कर उस धडे पर हसिया और हथौडे का निशान भी बना दिया और वह अनोखा झडा कमीज पर टाग कर

जलूस मे शामिल हो गया

उम दिन सैकडो लागो का मदन का सवाल था कि यह झडा उसन कहा स खरीदा है ? और उस दिन मदन का सैकडो लागो को जवाब था कि यह झडा मैंन आने वाल वक्त से खरीदा है

मदन की यह बात उसकी उम्र से बडी लगती थी—पर उसने दलील दी—मेरी नजर मे गाधी इसलिए बडा है कि उसने लोगो का यह पहचान दी है कि वह गुलाम है। पर इस पहचान को हथियार सिफ कम दे सक्ते है। अहिंसा कभी भी कम नही वन पाएगी।

और मदन के इस खयाल को उस दिन बहुत बडी ताइद मिल गई जिस दिन उमने ट्रिब्यून मे एक लेख पढा—साइटिफिक साशलिज्म। यह लेख किसी अब्दुल्ला सफ्दर का लिखा हुआ था, जिससे मिलने के लिए मदन वेताब हो उठा।

यह वप 1939 का था—और यह शायद होनी का एक इशारा था कि एक शाम मदन के सियासी दास्तो मे से एक ने कहा कि वह अब्दुल्ला सफ्दर को जानता है और वह मदन को उससे मिला सकता है। उसने यह भी बताया कि सफ्दर ने पोलिटिकल ट्रेनिग रूस मे रहकर ली हुई है

ग्वाल मडी का एक मकान था—जहा मदन की सफ्दर से मुलाकात हुई। सफदर चालीस वरस के करीब था और मदन वाईस बरस का, सफ्दर एक प्रभावशाली शख्सियत थी और मदन एक व्याकुल जवानी, पर एक ही मुलाकात मे जैसे दोनो हमउम्र हो गए

उस दिन मदन को सफ्दर ने बताया कि वह जिस लीग आफ रडिकल काग्रेसमैन का मैंबर है, उस लीग की नीव एम एन राय न रखी है। वही 'इडिपडट इडिया' का सपादक है। वह 1914 म जमनी के वादशाह कैसर के पास गया था कि उसकी मदद से वरतानवी राज्य से स्वतन्त्रता हासिल की जाए, पर वरतानवी गुप्तचर उसकी खबर पा गए थे, इसलिए वह वापस हिन्दुस्तान नही लौट सकता था, वहा से अमरीका चला गया था। पर अमरीका जब जग म शामिल हो गया, तो जमनी के साथ उसके सबधा के कारण उसे पकड लिया गया। वह जमानत पर था, जब भागकर मैक्सीको पहुच गया। यहा वह माक्सवाद स इतना प्रभावित हुआ कि

उसने मैक्सीको में कम्यूनिस्ट पार्टी की बुनियाद रख दी। यह सोवियत यूनियन से बाहर दुनिया की पहली कम्यूनिस्ट पार्टी थी

1920 में मास्को में दूसरी कांग्रेस हुई थी, कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल, वहां राय को बुलाया गया था। वहीं पर वह अक्तूबर क्रांति के मुखिया से मिला था। वहीं पर उसकी कई मुलाकातें लेनिन के साथ हुई थीं

मदन के मन में गांधी के लिए आदर था पर वह गांधी के खयालों से सहमत नहीं था। उसके खयाल को ताइद मिली, जब सफदर ने बताया कि लेनिन की नजर में गांधी लोक-लहर का सबसे बड़ा क्रांतिकारी था पर राय की नजर में वह सम्यक क्रांति का नेता था वह भी रुज्जत पसंद रिऐक्शनरी। इसलिए इस नुक्ते पर उनकी बहुत लम्बी बातचीत होती थी। लेनिन और राय कलोनियल नीति के बारे में भी कई बार सहमत नहीं हो पाते थे, पर यह बात उनकी दोस्ती में फर्क नहीं डालती थी।

और सफदर ने बताया कि 1920 से लेकर 1929 तक वह हिंदुस्तान के कम्यूनिस्ट कार्यों का नेतृत्व भी करता रहा और कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल में हिंदुस्तान के फलसफे की भी तर्जुमानी करता रहा

मदन के मन में पूरी कहानी के कई चेहरे उभर रहे थे, जिस वक्त सफदर ने बताया कि लेनिन की मौत के बाद 1927 में स्तालिन ने एक मिशन पर राय को चीन भेजा था, पर राय जब तक चीन से वापस आया उसके आने तक सियासी फिज़ा बदल चुकी थी। लेनिन के कई साथी मारे जा चुके थे। उस वक्त राय को भी पार्टी में से बेदखल कर दिया गया और वह लेनिन के वक्त की याद छाती में डालकर जर्मनी चला गया

—और अब वह ? मदन के सांस उसकी छाती में तेज़ हो उठे।

सफदर ने बताया कि वह हर खतरा मोल लेकर हिंदुस्तान आया था। पर जुलाई 1931 में सरकार ने उसे पकड़कर पांच बरसों के लिए जेल में डाल दिया था। वह जब तक जेल में से रिहा हुआ, तब तक कम्यूनिस्ट पार्टी गैर-कानूनी करार दी जा चुकी थी, इसलिए राय कांग्रेस में शामिल हो गया। वह कांग्रेस में रहकर गांधी की विचारधारा से अलग क्रांतिकारी विचारधारा का विकास चाहता है

यह सफदर की मुलाकातें थीं, जिन्होंने मदन के सुलगते हुए जज्बों को

दिशा दी। मदन के मन की चिंगारियों को सफदर ने सहेज कर उसके मन की लौ बना दिया

मदन के अंगों को भी शहर की जवानी चढ आई, रूह को भी। वह सफदर के लेख टाईप करता, और जो कुछ भी उसकी समझ की पकड से बाहर होता, वह सफदर की मदद से, अपनी सोच के दायरे में ले आता। अब वह भी लीग आफ रैडिकल कांग्रेसमैन का बाकायदा एक मैंबर था। और वह अक्सर सफदर के मुंह से सुनता—कितना अच्छा हो [illegible] हिंदुस्तानी देश भक्त होने के नाते सोवियत रूस से [illegible] सकें।

और मदन के मन में सोवियत रूस का दर्शन [illegible] बन गया, जैसा एक हिंदू के मन में तीर्थयात्रा का होता है, [illegible] मुसलमान के दिल में मक्के के हज का होता है।

मदन क स्कूल की छूट चुकी पढ़ाई ने, मास्को की उसी यूनिवर्सिटी का सपना एक गहरे सास की तरह लिया

सफ्दर न बताया कि वह यूनिवर्सिटी लनिन न 1922 मे शुरू की थी—कि जहा कम्यूनिस्ट एशिया के लिए भविष्य क नता तयार किये जा सकें।

सफ्दर न करीब दस बरस वहा गुजारे थे। एक रूसी लडकी के साथ विवाह भी किया था, पर हिंदुस्तान की सियासत का उसकी जरूरत थी, इसलिए वह अपनी बीवी और बच्ची को छोडकर हिंदुस्तान आ गया था। कुछ देर वह बरतानवी खुफिया पुलिस से बचा रहा था, पर फिर उसे कैद करके लाहौर के किल म डाल दिया गया था।

इसी जेल से रिहाई के बाद वह फिर स राय से मिल पाया था और अब उसके साथ था। पर उदास था कि राय अब सोवियत नजरो मे वह नही रहा था, जो एक ईमानदार साथी हान के नात हाना चाहिए था

सफ्दर का सबसे बडा सपना यह था कि वह एक बार फिर सोवियत रूस मे जाए और स्तालिन की नजर म राय की कद्र पैदा कर सके

यह वक्त था—जब मदन के सपन की भी सफ्दर के सपने से दोस्ती हो गई

3 सितबर 1939 का दिन था, जब इग्लड ने जमनी के साथ जग करन का फैसला कर लिया था और इस जग के दिना मे 1940 का जुलाई महीना था जब सफ्दर को गिरफ्तार कर लिया गया, और मदन जिस शाम सफ्दर से ग्वाल मडी के थाने म मिलकर आया, उसी की अगली सुबह उसने अखबार म पढा कि सफ्दर थाने मे स लापता है, और पुलिस उसे हर जगह तलाश कर रही है।

मदन तफ्तीश की पकड म आया, पर असल म वह हैरानी की पकड म था। सफ्दर के लापता हा जान से उसे लगा कि उसकी जिन्दगी का सबसे बडा सपना लापता हो गया है

4

सामाजिक और सियासी हालात मदन को उदास कर देते, सूरज उसकी छाती मे अस्त हो जाता, और जब क्राति उसकी रगो मे चलने लगती तो जैसे सूरज उसकी छाती म उग आता। पर ढाई हफ्ते हो गए थे, जब से सफदर चला गया था, मदन को सुध नही थी कि रोज सूरज कब चढता है, और कब डूबता है

लाहौर वाले घर मे दो कमरे थे, जहा उसके मा-बाप और भाई बहन रहते थे, और एक बरसाती सी ऊपर की मजिल पर थी, जो मदन के लिए थी। घर वाले सिर्फ इतना जानते थे कि मदन रात को बडी देर तक पढता रहता है, पर यह नही जानते थे कि उसके लिए बिछाई गई निवार की चारपाई को उसने कभी भी शरीर से नही छुआया था।

क्राति वाले रास्ते पर कदम रखकर मदन न सोचा कि उसे आने वाले समय के लिए अभी से तैयार होना चाहिए। इसलिए वह दिन मे फुटबाल खेलता, और शरीर को तैयार करता। रात को वह जमीन पर सिर के नीचे ईंटें रखकर सोता कि कल को जब वह किसी जेल की कोठरी मे होगा, तो उसके सिर को पत्थर के सिरहाने की आदत होगी

फिर पिता को सदेह हुआ कि मदन रात को कोई वर्जित किताबें पढता है। मदन भले ही अपने कागजो और किताबो को चारपाई की निवार मे छुपाकर घर से बाहर जाता था, पर उसके पिता न उसका वह ठिकाना भी खोज निकाला। और पिता को भले ही आखो से दिखाई नही देता था, तो भी जान गए कि वे जरूर काई ऐसे कागज़ पत्र है—जो कानून की पकड मे आ सकते हैं। और वह मदन के घर से जाने के बाद उन कागजो-किताबो को निकालकर गायब करने लगे

फिर सोमवार का दिन था, 19 अगस्त का, मदन जब सुबह कुछ खाकर काम पर जान लगा, उसके पिता बाहर दरवाजे के पास खडे थे, मदन के पैरो की आहट पहचानकर बोले—कौन है, मदन ? तुम जा रहे हो ? अच्छा बेटा जाओ ! न तुम्हे मैं रोक सकता हू, न भगवान रोक सकता है तुम जा तो रहे हो, पर तुम आओगे नही

मदन हैरान हुआ, कहने लगा—कैसी बातें कर रहे हैं ? मैं काम पर जा रहा हू, और मुझे कहा जाना है ? मैं आपको छोडकर कहा जा सकता हू ?

जाने, यह कैसी नज़र थी जो पिता की दृष्टिहीन आखो मे थी। और मदन जब सचमुच काम पर पहुचा जो उसे उसके शाहदरा वाले एक दोस्त का सदेश मिला कि मदन जब भी आय उसे टैलीफान करे। मदन ने फान नही किया, साइकिल लेकर शाहदरा चला गया। और उसके दोस्त न ओट म होकर एक कागज उसके सामन रख दिया, जो सफ्दर के हाथो का लिखा हुआ था कि मैं रूस जा रहा हू, चाहता हू तुम भी मेरे साथ चलो। तुम्हारे लिए अच्छा होगा। अगर तुम्ह जाना हो तो जिस आदमी के हाथ मैंन खत भेजा है, वही तुम्ह मेरे पास ले आएगा। हो सके तो रास्ते क गुज़ारे के लिए कुछ पसा का इतजाम करके साथ ले आना।

मदन न धडकते हुए दिल से दोस्त से पूछा—यह खत कौन लाया है ? वह कहा है ?

दोस्त ने माचिस की तीली जलाकर वह सफ्दर वाला खत जला दिया और कहा—उस आदमी का नाम गुलाम मोहम्मद है। अनारकली वाले मुस्लिम होटल म बैठा वह तुम्हारा इतजार कर रहा है। तुम वहा जाकर तीन बार अपने बालो पर हाथ फेरना, वह तुम्ह इस निशानी से पहचान लेगा—

मदन जल्दी से साइकिल पर पाव रखने लगा तो उसके दोस्त ने उसकी बाह पकड ली। पूछा—तुम जरूर जाओग ? मदन न बाह छुडाकर, दोस्त का हाथ दबाया, और जल्दी मे उस दुकान पर पहुचा, जहा नौकरी करता था। यह उसका बक जाने का वक्त था, दुकान की नकदी और चक जमा करवान का।

मैनेजर ने जब तीन हज़ार रुपये नकद और पाच-छह हज़ार के चैक थमाये तो मदन की छाती म ज़ोर से एक सपना धडकने लगा

मैनेजर कह रहा था—आज बहुत जरूरी बिल्टिया आई हुई ह, वह जरूर छुडानी है, बक म भले ही कितनी देर लग जाए पर वह बिल्टिया लेकर आना

मदन ने सारी हिदायत सुनी, और साइक्लि लेकर अनारकली के मुस्लिम होटल मे चला गया। वैठने के लिए कुर्सी ढूढने की नज़र से, कुर्सियो पर वैठे लोगो का सरसरी नजर से देखा, और तीन बार हाथ से सिर के बालो का सवारा—एक आदमी उठकर जब मदन के पास आ खडा हुआ, मदन ने उससे गले मिलते हुए कान मे पूछा—तुम्हारा नाम क्या है ? उसन भी तपाक से गले मिलते हुए कान मे कहा—गुलाम मोहम्मद, सफ्दर ने भेजा है

दोनो ने कुर्सिया पर वैठकर एक एक प्याला चाय मगवाई। और चाय का घूट भरते हुए मदन ने पूछा—वह कहा है ? गुलाम मोहम्मद ने कहा—पता ठिकाना नही बता सकता, पर उस शहर मे ले चलूगा।

मदन न जेव मे से दस-दस के तीन नोट निकाले, और उसने कहा—अच्छा तुम बस-अड्डे पर जाकर टिकटें खरीदो, मैं पूरे एक घटे वाद वहा पहुच जाऊगा।

उस वक्त लाहौर मे एक वडा वस अड्डा हुआ करता था, नदा वस सर्विस का, जो शहालमी दरवाज़े और लाहौरी दरवाज़े के बीच मे पडता था। इसलिए गुलाम मोहम्मद पैदल उस ओर चल दिया, और मदन साइक्लि लेकर पजाव नेशनल वक की ओर।

मदन ने सभी चैक जमा करवा दिए, और अपन रास्ते के खच के लिए डेढ हज़ार रुपये रखकर, वाकी नकद रुपये भी जमा करवा दिए। और जल्दी से मैनेजर को फोन किया—'आज वक मे बहुत भीड है इसलिए मुझे तीन-चार घटे लग जाएगे ' और वक मे से बाहर आकर, जेब मे रखे हुए डेढ हज़ार रुपया को टटोलता हुआ, वह सालम तागा करके जल्दी से बस-अड्डे की ओर चल दिया

बस अड्डे पर गुलाम मोहम्मद उसकी इतज़ार मे खडा था, क्योकि जिस बस की उसने दो टिकटें ले रखी थी, वह अब चलने को थी मदन जल्दी से बस मे वैठ गया, पर वह अभी तक नही जानता था कि यह बस कहा जा रही है। सिर्फ इतना जानता था कि शहर भले ही कोई भी हो—पर उस शहर मे उसका सफ्दर होगा

और बस की खिडकी मे से वाहर की ओर देखते हुए अचानक मदन

को हवा के झोंके जैसा खयाल आया कि आज सुबह उसके पिता ने घर के दरवाजे पर खड़े होकर कहा था—अच्छा जाओ बेटा ! तुम जा रहे हो, पर तुम आओगे नहीं

और हवा का वह झोंका मदन के सांसों को छूकर—इतिहास के सांसों में मिल गया

5

बस जब लाहौरी दरवाजे वाले उस चौक में पहुंची, जिसके एक मोड से अनारकली बाजार शुरू होता था और उसी मोड के सिरे पर वह दुकान थी, जिसका वह कर्मचारी था तो मदन का दिल सहम गया। लगा—किसी न किसी की नजर बस पर जरूर पड गई होगी और क्या जाने अब तक दुकान के बडे मनेजर चमन लाल ने किसी को थाने में भेज दिया हो और अब तक पुलिस उसके पीछे लग चुकी हो

वैसे भी सफदर वाले मामले की तहकीकात करते हुए जब पुलिस ने मदन को हवालात मे रखा था, तो छोडते समय लाहौर से बाहर जाने की मनाही कर दी गई थी।

साथ ही रास्ते की धूल की तरह एक और उडता हुआ खतरा उसकी आखो मे पडने लगा कि क्या जाने यह गुलाम मोहम्मद ही पुलिस का आदमी हो, और मुझे लाहौर से बाहर ले जाकर मनाही को तोडने के जुर्म मे पुलिस ने मुझे पकडने का यह रास्ता निकाला हो

बस शहर मे से निकली तो अगला थाना—शाहदरा वाला था। और मदन को खतरा महसूस हुआ—कि इस शाहदरा वाले थाने पर उसे बस में से उतार लिया जाएगा

पर शाहदरा वाला थाना गुजर गया, तो मदन ने चैन की सास ली। आगे दो सडकें बट रही थी—बायें हाथ वाली लायलपुर की ओर जाती थी और सीधी सडक गुज्जरावाला की ओर।

बस जब गुजरावाला पहुचने को हुई, तो मदन ने गुलाम मोहम्मद से

पूछा कि उन्हे गुज्जरावाला उतरना है कि आगे वज़ीराबाद जाना है ? मदन जानता था कि यह बस गुज्जरावाला के रास्ते चल पड़ी है, तो वज़ीराबाद तक ज़रूर जाएगी।

उस वक्त गुलाम मोहम्मद ने बताया कि वज़ीराबाद पहुंचकर आगे उन्हें सियालकोट की बस पकड़नी है, आगे गाड़ी मे जम्मू जाना है। उस वक्त मदन ने कहा कि अच्छा हो अगर वह अलग-अलग बसा म जम्मू जाए। उनका मिलकर सफ़र करना खतरे से खाली नही। इस पर गुलाम मोहम्मद सहमत हो गया, और कहने लगा—अच्छी बात है ! मैं जम्मू के मुस्लिम होटल म तुम्हारा इतज़ार करूगा

मदन गुज्जरावाला मे उतर गया और गुलाम मोहम्मद उसी बस मे बैठा रहा। पर गुज्जरावाला की जमीन पर पाव रखते ही मदन के मन मे बुआ का मोह छलक उठा, और उसके पाव बरबस उस घर की ओर उठ गए—जहा उसे अपने दूध पर पालने वाली उसकी बुआ रहती थी

मदन न कभी बचपन मे वह गीत सुना था, जिसमे एक जवान बेटा सन्यासी होने लगता है, और मा उसके गरए वाले की कन्नी थामकर रोती है—रे मेरे दूध का कर्ज चुका जा !

मदन के पाव थम से गए। जमीन की माटी उठाकर माथे से छुआई, और धीरे से कहा—तुम्हारे दूध का कर्ज मेरे सिर पर रहेगा बुआ। पहले इस धरती मा का कर्ज चुका आऊ

और मदन ने अपने पैर एक बाजार की ओर मोड लिए। जहा से उसने काले फूदे वाली एक लाल तुर्की टोपी खरीदकर सिर पर पहन ली, साथ ही एक चश्मा खरीदकर आखो पर लगा लिया। और पैदल तलवडी के रास्ते पर चल दिया।

उसने वज़ीराबाद की बस गुज्जरावाला से नही, उसके अगले स्टेशन तलवडी मे पकडी। पर जब वज़ीराबाद पहुचा तो साझ उतर आई थी। उस वक्त अगर सियालकोट की बस मिल भी जाती, तो आगे जम्मू जाने वाली गाडी नही पकडी जा सकती थी।

रात काटनी थी, इसलिए जेहलम जा रही बस मे बैठकर वह काई

आधी रात के वक्त जेहलम पहुँच गया, और प्लेटफार्म के एक बेंच पर सो गया।

सुबह हुई तो स्टेशन से बाहर जाकर एक ढाबे जैसे मुस्लिम होटल में नहाया भी चाय भी पी, और फिर बाज़ार में से कागज़-पेंसिल और एक लिफाफा खरीदकर—जेहलम दरिया के किनारे चला गया। घर में अपने पिता को उसे अपनी खबर देनी थी, सोचा कि उसका खत अगर पुलिस के हाथ भी लग गया, तो खत पर जेहलम की मोहर होगी, और उसकी खोज अपने आप गलत रास्ते पर पड़ जाएगी

मदन ने माँ के लिए प्रणाम लिखकर, पिता को लिखा—"आप मेरे इन्कलाबी ख्यालों को और मेरे जज़बात को बखूबी जानते हैं। इसलिए आपको मेरे उठाए कदम पर हैरत नहीं होगी। पर आपको यह जानकर दुःख हुआ होगा कि मैं कंपनी के बातों का डेढ़ हज़ार रुपया चुराकर भाग गया हूँ। पिताजी! अगर मैंने यही रकम अपने लिए चुराई होती तो मुझे चोर समझना वाजिब होता। पर मैंने यह रकम एक आदर्श के लिए ली है—जो मेरे लिए बहुत ही मुकद्दस है। मेरा यकीन है कि सरमायेदार कितरतन लुटेरा होता है, और उसके जुर्म ही लक्ष्मी का रोशनी दिखाने वाले चिराग होते हैं। मसलन मैं जिस कंपनी में काम करता था—वह खद्दरधारी हैं, गांधीभक्त। पर वह कितने गांधीभक्त हैं यह तो महात्मा गांधी ही जानता है। मैं यह जानता हूँ कि आज जो दवाई वह बत्तीस रुपये में बेचते हैं थोड़े दिन पहले जंग शुरू होने से पहले वह दो रुपये की हुआ करती थी। ऐसे लोग लूट को कारोबार करार देते हैं। आज मेरी या दूसरे कर्मचारियों की तनख्वाह में तो एक रुपये का भी इज़ाफा नहीं हुआ लिहाज़ा अगर मैंने यह रुपया लिया है तो मैं इसे जुर्म करार नहीं दे सकता। पिताजी! वक्त बहुत कम है, इसलिए मैं अपने उठाए कदम के बारे में तफसील से नहीं लिख सकता। बस यही कहना है कि आपका मदन कभी कोई ऐसा काम नहीं करेगा, जिससे आपके मुकद्दस नाम पर और इज्ज़त पर धब्बा लगे

और मदन यह खत डाक में डालकर वज़ीराबाद जाने के लिए बस में बैठ गया। वज़ीराबाद से सियालकोट पहुँचकर मदन ने जम्मू जाने के लिए

गाडी की टिकट ले ली।

रास्ता खैर खैरियत से गुजर गया। और जम्मू पहुचकर जब वह मुस्लिम होटल तक पहुचा—देखा, होटल के छज्जे पर खडा घबराया सा गुलाम मोहम्मद उसका इतजार कर रहा है, क्योकि वह पहुचने मे एक दिन पिछड गया था।

दोनो न होटल मे चाय पानी पिया, और वहा से श्रीनगर की बस मे बैठते हुए गुलाम मोहम्मद ने मदन को बताया कि सफदर श्रीनगर म है, शेख अब्दुल्ला का मेहमान।

श्रीनगर पहुचकर गुलाम मोहम्मद ने बताया कि वह नेशनल कान्फ्रेस का मेंबर है। उसी कान्फ्रेस के दफ्तर मे जाकर उसन मदन को एक कमरे म बिठा दिया और खुद सफदर तक खबर पहुचाने के लिए चला गया।

मदन बडी बेसब्री से सफदर का इतजार कर रहा था, जिस वक्त कमरे मे एक इमाम आया, जिसके हाथ मे तसबी थी, और लम्बी दाढी पर हाथ फेरता हुआ वह कुछ गुनगुना रहा था मदन न बेचैनी से फिर दरवाजे की ओर देखा, तो वह इमाम जोर स हँस पडा—मदन इडियट! उठकर गले नही मिलोगे?

और मदन न पहचाना—वह सफदर था। सफदर खुश हुआ कि अगर मेरा जिगरी दोस्त मदन मुझे नही पहचान गया तो पुलिस नही पहचान पाएगी

वहा सफदर ने बताया कि वह ग्वाल मडी के थाने मे से किस तरह फरार हुआ था। छोटा सा था, एकमजिला। जिसका गुसलखाना छत पर था। रात को सफदर न पहरे वाले सिपाही से कहा कि उसे हाजत के लिए जाना है। सिपाही उसे छत पर ले गया, तो सफदर न छत से नीचे बाहर की ओर छलांग लगा दी। सिपाही न शोर मचाया, पर छत से छलांग लगाकर उसका पीछा करने की उसकी हिम्मत नही पडी। वही नजदीक ही अमृत धारा की बडी-सी फक्टरी थी—जहा सफदर ने पनाह ली। फैक्टरी मालिक का बटा सफदर का सियासी शागिद था। उसने रात को पनाह दी और सुबह उसे सेठो, कारखानेदारो वाले कपडे पहनाकर, अपनी ग मे बिठाकर वाला शाह काकू तक छोड आया। और वहा से बस

गाडिया पकडता हुआ वह श्रीनगर पहुच गया

उस दिन सफ्दर ने मदन को बताया कि गिलगित के रास्ते से रूस तक पहुचने का सीधा रास्ता था, पर शेख अब्दुल्ला ने आदमी भेजकर खबर मगा ली है कि वहा बरतानवी फौज ने नाकाबदी की हुई है, वहा तो चिडिया भी फटकने नही पाती। सो दूसरा रास्ता सरहदी इलाके की ओर से है, आजाद कबायली इलाके की ओर से, जिसके लिए शेख अब्दुल्ला की सलाह है कि हम पहले ऐबटाबाद जाए। वहा सरहदी गाधी का एक नजदीकी आदमी है—हकीम अब्दुल सलाम, वह हमारे लिए कोई रास्ता निकालेगा

नैशनल कान्फ्रेन्स के दफ्तर मे मदन की सादिक से मुलाकात हुई। मदन को अपनी बाह पर गुदे हुए अपने नाम की चिन्ता थी, जिससे पुलिस उसका पता लगा सकती थी। उस वक्त सादिक ने कहा—मिया हरदत्त ! बाह पर पूरा नाम तो लिखा हुआ नही, सिर्फ एम० एस० एच० लिखा हुआ है। इससे अगर मदन मोहन हरदत्त बन सकता है, तो मिया मोहम्मद हुसैन भी बन सकता है सिर्फ नमाज पढना सीख लो

और मदन ने उसी वक्त बाजार जाकर खाकी कुर्ता, लटठे की सलवार और सात गज की पगडी खरीद ली, साथ ही पठानी चप्पल भी।

उस रात शेख अब्दुल्ला के किसी रिश्तेदार का विवाह था, जहा सफ्दर को भी बुलावा था, और मदन को भी। उस रात सतरगा पुलाव खाते हुए मदन और सफ्दर लजीज खाने का जायका लेते रहे और उस जायके को अलविदा कहते रहे

सुबह होते ही दोनो बस से ऐबटाबाद के लिए रवाना हो गए। वहा पहुचकर जब सफ्दर ने मदन को खेतो मे बिठा दिया, और खुद शहर मे हकीम अब्दुल सलाम को ढूढने चला गया तो मदन खेतो मे बैठकर कागज पर लिखी हुई नमाज याद करने लगा—

जब सफ्दर लौटकर आया तो हकीम साहब उसके साथ थे जिन्होने अपने खेत की एक कोठरी खोलकर उनकी रिहायश का बन्दोबस्त कर दिया और कहा—दूसरे काम मे कुछ दिन लग जाएगे। इसलिए देखने वालो को कहा जाएगा कि सफ्दर बिहार का एक जमीदार है, और छोटे

भाई का यहां इलाज के लिए लेकर आया है

मदन हस दिया—सो मैं जमीदार साहब का छोटा भाई हू, बीमार। पर मेरी बीमारी का नाम भी रख दीजिए। मैं काहे का मरीज हू ?

हकीम साहब उसके दुबले पतले जिस्म की ओर देखकर हस दिए और बोले—मरीज तपदिक का, और काहे का

और मदन खेत की कच्ची कोठरी मे बिछी चारपाई पर जब खेस तानकर लेट गया, तो उसके होठो की तरह कोठरी की दीवारे भी हस दी गुनगुनाने लगी

'बाल नाथ ने साम्मण सद् धोदा, जाम देण नू पास बहा लया सु, कन पाड क झाड के हिरस हसन्त, इक पलक विच्च भुन विखारया सू।"

6

वैसे तो हकीम साहब रोज शाम को अपने 'मरीज' की हालत देखने के लिए सफदर और मदन की कोठरी मे आ जाते थे, पर दिन मे जब कभी दोनो का शहर जाने का मन करता, उसके लिए मदन थोडा-थोडा खासते रहने की आदत डाल ली। इससे मदन के 'मर्ज' ने शहर की औरतो का रहम जीत लिया। एक वह बांका जवान था, उस पर तराशे हुए नक्श, जब थोडा थोडा खासता तो राह चलती हुई औरतें उसे देखकर खडी हो जाती। दोनो हाथ उठाकर कहती—या अल्लाह ! तू इस नौजवान बच्चे को शफा बख्श दे ! इसने तो अभी जवानी भी नही देखी

और दोनो जब पाचो वक्त नमाजी बन जाते, मदन अपने मित्र से कहता—इन नमाजो की एक खूबी है कि इस तरह सभी एक परिवार की तरह रोज मिलकर बैठते हैं, एक दूसरे का दुख-सुख भी सुन लेते हैं, और खुदा के हजूर होकर भी बैठ सकते हैं।

और साथ ही मदन कहता—पर हम तो रगमच के नायक हैं वक्त के नाटक म नमाजी का किरदार पेश कर रहे है

शाम को दोनो का असली किरदार सिर्फ हकीम साहब देखते थे, जब

रास्ते की मुश्किलें वह शतरंज के खेल की तरह सामने रखकर सोचने लगते थे कि अब आगे कौन-सी गोटी चलनी है।

हकीम साहब ने कबायली इलाके का इतिहास उन्हें समझाया कि वहां सदियों से मुख्तलिफ खान अपनी-अपनी डेढ़ इंच की रियासत बनाए रह रहे हैं और जिन पर अंग्रेज़ हुकूमत कभी भी मुकम्मल असर और रसूख नहीं जमा सकी। फिर कोई सौ बरस हो गए हैं—जब हिंदुस्तान से भागकर आए मुस्लिम रिफ्यूज़ी भी वहां जा बसे। उनकी और पठानों की आपस में हमेशा लड़ाई रहती है। मुस्लिम रिफ्यूज़ी ज्यादा खतरनाक हैं—वह इलाके में से गुज़रते हुए आदमी को लूट भी लेते हैं और अक्सर मार भी देते हैं।

हकीम साहब ने तफ्सील से बताया कि सौ बरस से ज्यादा अर्सा हो गया है, जब राय बरेली से सैय्यद अहमद के मुरीद यहां आए थे। सैय्यद अहमद वह शख्स था जिसने जंगजू वहाबी मुहिम की बुनियाद रखी थी। वह लोग अपने आपको मुजाहिद कहते हैं। उनका बुनियादी मकसद है कि हिंदुस्तान में खालिस इस्लाम को जन्म दिया जाए। वह अंग्रेजों को भी और पठानों को भी दुश्मन मानते हैं। पर अब उनमें आपस में फूट पड़ गई है, एक गिरोह पंजाबी मुसलमानों का है दूसरा बिहारी मुसलमानों का। सिंध दरिया के नजदीक जब शहर के पास पंजाबी मुसलमानों का बसेरा है और ड्यूरंड लाइन वाली सरहद के बजौर इलाके में चमरकंद में बिहारी मुसलमानों का। वह बिहार के मुसलमान अपने आपको खालिस मुस्लिम समझते हैं और हिंदुस्तान को दारुल हरब कहते हैं—काफिरों का मुल्क क्योंकि वहां गैर मुस्लिम अंग्रेजों की हुकूमत है। दोनों गिरोह कई बार मेल मिलाप भी कर लेते हैं क्योंकि दोनों की मज़हबी बुनियाद एक ही है—इस्लामी फंडमैंटलिज्म।

मदन और सफदर ने क्योंकि वह इलाका पार करना था इसलिए उस इलाके की सियासत से परेशान हुए। इसके लिए हकीम साहब ने सलाह दी कि पंजाबी गिरोह क्योंकि ज्यादा खतरनाक है इसलिए उस गिरोह के रहनुमा को विश्वास में लेना होगा। वह बादशाह कहलाता है। वह और उसका बेटा 'शहज़ादा', दोनों अंग्रेजों के पिट्ठू हैं पर दोनों

मौका परस्त हैं। इसलिए अगर उन्हे यकीन दिलाया जाए कि उनकी मदद उन्हे बहुत मुनाफा देगी, तो उनकी वफा खरीदी जा सकती है

और हकीम साहब ने यकीन दिलाया कि सफदर और मदन अगर किसी तरह यह कर पाए, तो आगे वहा एक आदमी है—मोहम्मद हुसैन, जो इन्कलाब पसद है। उसकी मदद से वह अफगानिस्तान के शहर जलालाबाद तक पहुच जाएगे। फिर वहा एक हिन्दुस्तान का आदमी है, हाजी मोहम्मद अमीन, जो उन्हे अफगान रूस की सरहद पर पहुचा देगा

लगभग बीस दिनो तक सलाह मशवरे के बाद, जब खानगी का वक्त आया तो हकीम साहब ने एक सरहदी जवान मोहम्मद इस्मायल को रहनुमा के तौर पर उनके साथ भेज दिया, और खुद सिंध दरिया के किनारे तक अलविदा कहने के लिए आए। साथ ही वायदा किया कि वह खैरियत से अफगानिस्तान मे पहुच जाएगे, तो खबर मिलने पर, वह एम० एन० राय तक यह खबर पहुचा देंगे।

सिंध दरिया ज्यादा बडा नही था, पर गहरा था, और तेज रफ्तार था, इसलिए हकीम साहब ने उनके लिए नाव का प्रबन्ध कर रखा था। तीनो ने दरिया पार किया। आगे किनारे किनारे दरिया की चढाई की ओर बढने लगे। कुछ दूरी पर ब्रिटिश पुलिस की चौकी आने को थी, पर मोहम्मद इस्मायल ने बताया कि वह खतरे वाली बात नही। मोहम्मद इस्मायल उत्तर पश्चिमी सरहदी सूबे की अडर ग्राउड कौमी आजादी लहर का कार्यकर्ता था। पर हिन्दुस्तानी रिफ्यूजी के तौर पर, उसका कबायली इलाके मे आना जाना लगा रहता था, जिससे पुलिस चौकी के आदमी उसे पहचानते थे।

वसे भी वह छोटी-सी चौकी थी, कोई तीन मुरब्बा गज म एक मामूली से कमर की सूरत म बनी हुई, जहा पुलिस के सिफ दो आदमी थे। मोहम्मद इस्मायल सफदर और मदन का परे खडा करके, पाच मिनट के लिए चौकी के अदर गया, और बाहर आकर उन दोनो को हाथ से इशारा कर दिया कि वह दोनो उसके पीछे पीछे चल दें।

अगला रास्ता बहुत सकरा-सा और पथरीला था, जिसके दायी ओर

मिध दरिया ठाठ मार रहा था, और बायीं आर ऊचा पहाड था जो आसमान का हाथ से छ रहा लगता था। पर लगभग तीन मील के बाद यह राह और भी दुश्वार हो गया, क्योंकि रास्ते में पत्थर इस तरह चिकन हो गए, जसे किसी कारीगर न रदा फेरकर बिछाए हो। यह रास्ता था जहा मदन की पठानी चप्पल फिसलन लगी थी और उस लगा— कि पाव फिसलकर तूफानी दरिया म जा पडा, तो यही पानी उस गगा-स्नान करवा देगा

मदन न चप्पलें उतारकर बगल म दबा लीं, तो कडकती धूप स तप हुए पत्थर उसके पाव झुलसन लगे। उस वक्त मदन न सफदर की बाह झकझोरकर कहा—यार! सिंध क इस तूफानी पानी न हमार इश्क क तूफानी पानी से होड लगा रखी है। यह भी सलामत रहे पर इसे क्या पता कि हमारे दिलो का तूफानी पानी इसके आगे हारेगा नही

सूरज ढलन लगा था—जिस वक्त सामने एक छोटा-सा मैदान दिखाई दिया, और मोहम्मद इस्मायल न कहा कि वक्त हो गया है, आओ यहा बैठकर नमाज पढ ले।।

वह समतल जगह सचमुच नमाजगाह थी, क्योंकि वहा मिट्टी का एक लोटा भी पड़ा हुआ था, वजू करने के लिए। यह बे दरो दीवार इबादत गाह थी, रास्ते के मुसाफिरो के लिए। और यही से दरिया स जुदाई की इजाजत लेकर, उन तीनो को बायीं ओर की वह पगडडी पकडनी थी, जो एक सख्त चढाई की शुरुआत थी

अब पगडडी के दोनो तरफ पहाड थे—जिनकी हरियाली पर, किरणो ने मुह मोडकर, स्याही बिखेर दी थी। और मदन के पाव थम गए—दायीं आर पहाड के पैरो में, एक पहाड़ी नाला इस तरह बिफर रहा था, जैसे एक बहुत बडा अजगर ज़ोर ज़ोर से फुफकारता हुआ सारे पहाड के पैरो से लिपट गया हो

मदन की आखे ऊपर पहाड की चोटी की आर उठी, तो उसन इस दहशत का हुस्न पहचाना। कल्पना की कि वह चोटी के ऊपर स इस निचली पगडडी का और पगडडी क यात्रियों को देख रहा है जो तीन छोटे छोटे हिरनो की तरह कुलाचे भरते हुए दिखाई दे रहे ह

कुदरत के इस बेमिसाल हुस्न ने जब मदन को गले से लगा लिया, तो मदन के दिल मे इतिहास का वह मज़र तडप उठा—जब इसान की आखो म इस हुस्न की पहचान आ जाएगी, और वह न किसी का गुलाम रहना चाहेगा, और न किसी को गुलाम बनाना चाहेगा

7

सूरज करीब करीब डूब चुका था, जब रास्ते के बसरे वाला गाव सामने आया। मुश्किल से चार पाच घर पठानो के थे, पर उनमे से एक मोहम्मद इस्मायल के दोस्त का था, जिसने हकीकी खुशी से उन्हे खुशआमदीद कहा। पठानी नॉन और गोश्त के शोरबे से भरे हुए प्याले सामने रखे। पहाडी सफर की थकावट से जब वह सिर के नीचे तकिए लगाकर चटाइयो पर लेटने लग तो मेज़बान ने पश्तो म शब खैर जैसा कुछ कहा, जिसका अर्थ मोहम्मद इस्मायल न समझाया कि सिर के नीचे बाह रख कर गमो से आज़ाद होन की यह दुआ है

यह दुआ मदन को शराब के प्याले से भी लज़ीज़ लगी, और सोने के वक्त उसका जायका उसके होठो की मुस्कराहट म घुलता रहा

तडके नमाज़ अदा करके और नमकीन चाय पीकर वह तीनो चल दिए। दोपहर कोई दो बजे का वक्त था कि वह मिट्टी की चारदीवारी वाले उस कस्बे म पहुच गए जहा 'बादशाह' से मिलना था। इस मिट्टी की किलाबदी से बाहर एक मस्जिद थी, जहा उन्होने क्याम किया। सफ्दर और मदन को वहा छोडकर मोहम्मद इस्मायल 'बादशाह' के आगे दरखास्त करन गया कि हिदुस्तान से आए मुलाकातियो को वह मुलाकात का मौका अता फरमाए

आजाद कबायली हवा की तरह यह खबर सारे कस्बे मे फैल गई कि दो मौलाना हिदुस्तान से आए है। अधेड और बूढे मर्द मस्जिद की ओर आने लग तो मदन उर्फ मिया मोहम्मद हुसैन जल्दी से सजीदा सूरत बनाकर तसबी फेरने लगा ताकि वह लोगो की पूछताछ वाली बातचीत से

बचा रहे

कुछ ही देर बाद इस्मायल ने आकर खबर दी कि 'जहापनाह' ने मुलाकात की इजाजत फरमायी है।

वह तीनो जब किलेबदी जैसी चारदीवारी म दाखिल हुए तो देखा—मिट्टी से बनी एक एक कोठरी वाले कोई चालीस घर थे जिनके एक सिरे पर पक्की इटो वाला एक मजिला 'महल' था। भीतर बैठक मे कालीन बिछा हुआ था जिस पर एक तकिए की टेक लगाकर बादशाह' बैठा हुआ था और दोनो तरफ दो खिदमतगार खडे थे

तीनो ने झुककर अस्सलामालेकुम कहा तो बादशाह ने दाया हाथ छाती की ओर ले जाकर थोडी-सी गरदन झुकाई और हाथ के इशारे से बैठने के लिए कहा उसका दूसरा इशारा खिदमतगारो के लिए था जो बैठक म से बाहर चले गए और एक दूसरा खिदमतगार अगूरो और सेबो से भरा हुआ थाल लाकर, मेहमानो के सामने दस्तरखान बिछा कर वह थाल रख गया।

बादशाह की उम्र कोई साठ-बासठ बरस की लगती थी। उसके गोल चेहरे पर सफेद दाढी थी। पर उसकी सफेद पगडी म एक हीरा सा लगा देखकर मदन को वह जादूगर याद आ गया, जिसका खेल देखने के लिए वह एक बार लाहौर के सिनेमाघर म गया था। रस्मी दुआ सलाम के वक्त बादशाह के लहजे म शाइस्तगी थी पर आखो म इतनी चचलता, कि मदन को लगा—वह निगाहो से उनकी छाती म छुपे सपना का जायजा ले रहा है

सफदर तजुर्बेकार और गभीर आदमी था इसलिए मदन की तरह उसकी निगाहो मे कोई बेताबी नही आई। तयशुदा बात के मुताबिक जब इस्मायल अगूरो के चार-छह दाने खाने के बाद बैठक म स बाहर चला गया, तो सफदर ने बात शुरू की—जहापनाह ! इडियन नैशनल काग्रेस ने हम दोनो को एक खास मिशन पर इस इलाके म भेजा है। यह मकसद हासिल करने के लिए हम आप जैसे हिंदुस्तानी देश भक्तो की मदद चाहिए। हिंदुस्तान छोडते वक्त आपके बुजुर्गो ने बेमिसाल हौसले और हिम्मत के साथ मुश्किलो का मुकाबला किया था। फिर आपकी रहनुमाई

मे आवाम ने बहादुरी से जालिम और जाबिर अंग्रेजो से लडाई जारी रखी। इन हकीकतो की रौशनी मे कांग्रेस का सिर्फ आपकी मदद पर भरोसा है "

जवाब मे 'बादशाह' न हलीमी से कहा—आपने हमारे शाही खानदान की तारीफ म जो कुछ फरमाया है, उसके लिए हम तहे-दिल से मश्कूर हैं। हमे यह जानकर बेहद खुशी हुई है कि हमारे मादरे वतन हिन्दुस्तान न हमार शाही खानदान की कुर्बानियो को और हुब्बलवतनी को भुलाया नही। पर यह बात हमारी समझ मे नही आई कि हम नैशनल कांग्रेस का साथ किस तरह दे सकते ह ? गाधी अदमतशद्दुद म यकीन रखता है, जबकि हमारे एतकाद की बुनियाद तशद्दुद और जहाद पर है।"

सफदर न उससे भी ज्यादा हलीमी से कहा—जहापनाह ! आप जहादीदा सियासतदान हैं, इसलिए जानते हैं कि सियासत के मैदान मे दाव पेच बदलते रहते है।

'बादशाह' ने हामी भरी—बजा फरमाते है, क्योकि सरहदी गाधी खान अब्दुल गफ्फार खान चाहे अपने आप को अदम-तशद्दुद का हामी जाहिर करता है, पर है तो पठान ही। जबकि पठान के पास खाना हो न हो, पर उसके पास हथियार जरूर होना चाहिए

'मेरी गुजारिश है ' सफदर कुछ कहने जा रहा था कि 'बादशाह' ने कहा 'बहरहाल दो दिन तक शहजादा साहब पेशावर मे तशरीफ ला रहे हैं, वह फैसला कर सकेंगे कि आपके मकसद के लिए वहा तक मदद की जा सकती है। हम तो अपनी सल्तनत की हुकूमत के कामकाज से दस्त बरदार हो चुके हैं। अब इस काम की बागडोर हमार जानशीन शहजादा साहब के हाथ मे है। जहा तक हमारा ताल्लुक है, हम रब उल-आमीन की इबादत मे दिन रात गुजारते है

और साथ ही 'बादशाह' न अफसोस जाहिर किया कि मुअज्जज मेहमानो ने अपनी आमद की इत्तलाह नही दी थी, वरना उनके सफर के लिए घोडो का बन्दोबस्त कर दिया जाता

उस वक्त एक खिदमतगार ने मेहमानो के सामने—बिरयानी, कोफ्ते के शोरबे से भरे प्याले, भुना हुआ गोश्त, आलू का रायता और

रोटियां लाकर दस्तरख्वान सजा दिया। और 'बादशाह' के इसरार करने पर उन्होंने खाना खा लिया।

शाम की नमाज का वक्त करीब आ रहा था, इसलिए 'बादशाह' का शुक्रिया अदा करके वह तीनों मस्जिद की ओर चल दिए। वहां मोहम्मद इस्मायल उनका इंतज़ार कर रहा था कि मुलाकात का किस्सा सुनकर वह लौट सके, पर तीनों ने उसे 'शहजादा साहब' से मुलाकात के नतीजे का इंतज़ार करने के लिए रोक लिया, ताकि वह लौटकर हकीम अब्दुल सलाम को सफर के पूरे नतीजे से वाकिफ करवा सके।

इतने में गांव के लोग भी मस्जिद में आने शुरू हो गए और जब वह तीन चार कतारों में खड़े हो गए, तो इमाम ने सफदर को दावत दी कि नमाज की रहनुमाई करे। उस वक्त मदन ने कुछ घबराकर सफदर की तरफ देखा, वह था कि इस मामले में सफदर का हाल भी मदन जैसा है, पर सफदर ने बड़े तरीके से वक्त को संभाल लिया, कहने लगा — मुअज़्ज़ बुज़ुर्गवार इमाम साहब की मौजूदगी में मैं नमाज की रहनुमाई करता हुआ अच्छा नहीं लगता

नमाज के बाद, जैसा बादशाह ने कहा था, वह तीनों 'शाही बाग' देखने के लिए चल दिए। वह बाग पहाड़ी नाले के किनारे पर था, बस यही उसकी 'शाहाना' तशरीह थी, या यह कि वहां 'शाही खानदान' के बिना किसी को दाखिल होने की इजाज़त नहीं थी। तीनों ने पहाड़ी नाले में गुसल किया और मस्जिद की ओर लौट पड़े।

इतने में एक खिदमतगार आया कि उनके लिए बिस्तर बिछा दिए गए हैं। तीनों उस खिदमतगार के पीछे पीछे जब एक मकान की छत पर पहुंचे तो दूसरा खिदमतगार उनके लिए दूध से भरे हुए तीन बड़े-बड़े गिलास लेकर हाज़िर था

इस खातिरदारी के बाद, दूसरे दिन जब तीनों 'राजधानी' देखने के लिए गांव की गलियों में गए, तो मदन ने देखा कि ज़्यादातर लोग पंजाबी हैं और तौर तरीकों में उनका रहन सहन, किसी भी साधारण पंजाबी गांव जैसा है। वहां मदन ने कई लोगों के साथ बातचीत की। किसी ने बताया कि वह एक हैबतनाक जुर्म करके हिंदुस्तान से भाग आया था। किसी ने

बताया कि वह एक डाके के सिलसिले मे फरार होकर बादशाह सलामत की पनाह मे आ गया था और इस तरह की दास्तान कइयो से सुनकर मदन को यकीन हो गया कि सारे का सारा गाव डाकुओ और कातिलो का है, और यही डाकाजनी उनका पेशा है

उस रात मदन को इतने भयानक सपन आते रहे कि उसने कई बार साथ की चारपाई पर सो रहे सफदर को टटोल कर देखा

खैर, तीसरे दिन दोपहर की नमाज़ के बाद एक खिदमतगार ने आकर इतलाह दी कि आलीजा शहज़ादा साहब पेशावर से तशरीफ ले आए है, और उन्होने मुलाकात की दावत दी है

वह भी एकमजिला इमारत थी, पर बैठक बहुत बडी थी। चार बडी-बडी शीशे की खिडकियो वाली। फश पर ईरानी कालीन बिछा हुआ था और तकिये रेशम के थे। एक कोने मे शीशम की लकडी का मेज़ था, जिस पर रेडियो सजा हुआ था और बिलकुल बीच मे गो इच ऊचाई वाली, तीन फुट छह फुट की चौकी थी, जिस पर दस्तरखान बिछा हुआ था

मदन के मन मे एक अजीब मुशाहबत आई कि एक दिन पहले उसन 'राजधानी' मे जो कतलो-खून की बू देखी थी, वही बू इस बैठक मे इत्र से भिगो दी गई है। 'शहज़ादा साहब' के लिबास पर इतना इत्र छिडका हुआ था कि सारी फिज़ा इत्र मे भीगी हुई लग रही थी

तीस-पतीस बरस के शहज़ादे के सिर पर कुल्लेदार मुशद्दी लुगी थी, कमर पर लटठे की भारी सलवार, और गले मे सुख रग की पठानी ढग की बटना वाली वास्केट, जिसके सामने छोटी जेब मे से रेशमी रूमाल के रगीन फूलदार कोन ने साप के फन की तरह सिर उठाया हुआ था

दुआ-सलाम के बाद रस्मी सी बातचीत मे दोना पक्ष एक-दूसरे का जायज़ा लेते रहे। दस्तरखान कई तरह के लज़ीज़ खानो से सजाया गया। और उस दौरान शहज़ादा साहब ने तय किया कि अगली मुलाकात शाम को छह बजे होगी।

छह बजे वाली मुलाकात मे फलो के रस से भरे प्यालो की खातिरदारी कबूल करते हुए, सफदर ने वह सभी बातें दोहराईं, जो तीन दिन पहले 'बादशाह' के आगे पेश की थी। और साथ ही कहा—शहज़ादा साहब।

इंडियन नैशनल कांग्रेस वाहिद सियासी पार्टी है, और उसकी इस वक्त की हालत बहुत मजबूत है। वही अंग्रेजों का डटकर मुकाबला करने की हैसियत रखती है। उसके जो बाज दल न फैसला किया है कि अंग्रेजों के खिलाफ जंग आजादी में अदम-तशद्दुद वाले रास्ते के साथ-साथ दूसरा रास्ता भी अपनाया जाए ताकि अंग्रेजों के साथ फैसला-कुन टक्कर ली जा सके। इस वक्त बरतानिया जंग में उलझ चुका है, इसलिए सियासी हकीकत का फायदा उठाना चाहिए। आज हिंदुस्तान में ऐसे सियासी हालात पैदा हो चुके हैं कि अगर मुसल्ला बगावत की जाए, तो हिंदुस्तानी फौज का काफी बड़ा हिस्सा हमारी हथियार बंद बगावत का साथ देगा। हजूर मुतफिक होंगे कि अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ गुरिल्ला जंग की तैयारी और तनजीम की शुरुआत के लिए, आजाद कबायली इलाका बेहतरीन जगह है

शाहजादा साहब ने बड़ी चतुराई से पूछा—यह बताइये कि इस सिलसिले में मुअज्जज मोहम्मद अली जिनाह साहब की क्या राय है?

सफदर ने उसी संजीदगी के साथ कहा—इस आखिरी फैसला कुन लड़ाई में अगर मुस्लिम लीग हमारा साथ दे तो इससे बेहतर और कोई बात नहीं। बहुत सी समस्याएं खुद ही हल हो जाएंगी। मुसलमानों की हुब्बलवतनी बहस की मोहताज नहीं। नुमाया मिसाल की जरूरत हो भी, तो हजूर, आपके बा अजमत शाही खानदान की कुर्बानियां हुब्बलवतनी की जिन्दा शहादत हैं

मदन ने गौर से देखा कि सफदर के लफ्जों 'बा अजमत शाही खानदान' ने फिजा में मिली हुई इत्र की महक के साथ एक जादू भी मिला दिया है, और शाहजादा साहब का चेहरा दस्तरखान के सेब की तरह चमकने लगा है

पूछा गया—मुसल्ला कारवाई की तनजीम के सिलसिले में आजाद कबायली इलाके को इस्तेमाल करने के लिए कोई तैयार शुदा मसूबा है?

मदन इस इलाके के पहाड़ों की तरह खामोश था पर सफदर के होंठों पर पहाड़ी हवा की तरह लफ्ज सरसराए—बेशक तैयार है हजूर। अब जब आपकी असली तौर पर रजामन्दी हासिल हो गई है तो मैं महसूस

करता हू कि इस मौजू पर मैं तबादला ए ख्यालात कर सकता हू। मिशन का मकसद है कि पहले कदम के तौर पर आपके इलाके मे कम अज-कम दो फैक्टरिया चालू की जाए, जहा हथियार बनाए जा सकें। एक फैक्टरी गालबन हिंदुस्तान की सरहद के पास हो सकती है, दूसरी अफगान सरहद के पास। आपकी रहनुमाई मे मिल्ट्री ट्रेनिंग कप खाले जा सकेंगे। हमारे मुसल्ला हमले का सबसे पहला निशाना शहर पेशावर होगा, और फिर शमाल मगरबी सरहदी सूबे के दूसरे बडे शहरा म मौजूद बरतानवी सरकार के मिल्ट्री स्टोज़ और डिपोज़ होगे। इस तरह हमारी हथियारबद, आजादी की जद्दोजहद, सारे हिंदुस्तान मे फैल जाएगी।

और सफ्दर ने हलीमी से पर वजनी लफ्जो मे कहा—शहज़ादा साहब! इस काम के लिए आपको जितनी भी रकम की जरूरत पडे, चाहे कितनी भी रकम की, उसके इतजाम मे कोई शुबहा नही है।

मदन के लिए सफदर की इस पेशकश के लफ्ज़ अजनबी नही थे, यह सभी कुछ दोनो न हकीम साहब से ऐबटाबाद मे साचा हुआ था, पर सफदर ने जिस खूबी से यह बात पेश की, 'शहज़ादा साहब' के चेहरे पर तो रौनक आनी ही थी, मदन को भी महसूस हुआ कि दरअसल इसी बात पर अमल होना चाहिए

इस मुलाकात के आखिर म फैसला हुआ कि अब्दुल्ला सफदर और मिया मोहम्मद हुसैन (मदन) दोनो आज़ाद कबायली इलाके का मुआयना करें, साथ ही वह अफगान सरहद के पास वाली 'शहज़ादा साहब की' सल्तनत का भी मुआयना करे ताकि उनकी वापसी के बाद इस मसूबे के तमाम पहलुओ की रौशनी मे कई ठोस कदम उठाया जा सके।

'शहज़ादा साहब' न खबरदार किया कि किसी हालत मे भी किसी शख्स को इस मसूब की खबर नही होनी चाहिए। चमरकद के हाकिम मोहम्मद लतीफ क आग भी इसका जिक्र नही आना चाहिए।

रात की दावत के वक्त 'शहज़ादा साहब' का रवैय्या बहुत दोस्ताना था। इसलिए सोने के वक्त दोनो ने यह सारा किस्सा मोहम्मद इस्मायल को सुना दिया, ताकि सुबह वह ऐबटाबाद लौट जाए और हकीम साहब को खबर दे सक।

अगले दिन खानगी की तैयारी हुई, तो दाना के लिए घोड़े भी हाजिर थे, और उनकी हिफाजत के लिए मोहम्मद जमान की रहनुमाई में छह हथियार बंद जवान भी।

मदन ने घोड़े की रकाब पर पैर रखा, तो उसे लगा—आज वह जंगल-वन और पर्वत चीरकर, अपने देश की, सौ बरस से सोयी हुई, आजादी की परी को जगाने चला है।

8

लोक-कथाओं का शहजादा जब सौ बरस से सोयी हुई शहजादी को जगाने जाता है तो जिस तरह रास्ते में उसे कई प्रकार की अलाएं-बलाएं मिलती हैं, जिनसे वह दहशत भी खाता है, और जिन्हें जीतकर वह किले में कैद शाहजादी के पास पहुंचने के लिए आगे भी बढ़ता है कुछ उसी तरह का सफर मदन और सफदर का था।

'बादशाह और 'शहजादा साहब' से विदा लेकर जब वह दाना मोहम्मद जमान और छह हथियार-बंद जवानों की 'हिफाजत' में आगे बढ़े, तो चौथे दिन मालकंड ऐजेंसी नामक इलाके में पहुंचे, जहां बरतानवी हुकूमत का अंग्रेज अफसर रहता था। और उसकी हिफाजत के लिए एक पूरी पल्टन थी, जिसके सिपाही हिन्दुस्तानी थे, पर कप्तान और मेजर जैसे अफसर अंग्रेज थे। पता लगा कि इस कसबे का काम 'बंदर-न्यायनीति' है, जो आजाद मुख्तलिफ कबीलों में आपसी नफरत और दुश्मनी बनाए रखती है। और तमाम कबीलों को धीरे धीरे अंग्रेजों की गुलामी के रास्ते की ओर ले जा रही है

इस मालकंड एजंसी से अगला इलाका एक और कबीले का था, जहां पहुंचने पर सूरज डूबने का वक्त हो आया था। पर मोहम्मद जमान ने जब उस कबीले के हाकिम खान का दरवाजा खटखटाया, तो वह खान जमान से गले लगकर मिला। उसने सफदर और मदन का तआरुफ करवाया कि वह आली जाह शहजादा साहब के खास दोस्त हैं, और चमरकंद इलाके की

सैर के लिए जा रहे हैं। वहा खान ने सभी मेहमानो का स्वागत किया।

उससे अगला पडाव दीर नामक कस्बा था, किसी और कबीले के खान की रिहायशगाह। वहा की मस्जिद म शाम की नमाज अदा करने के बाद माहम्मद जमान, साथिया को मस्जिद म छाडकर काजी से मिलन गया, जिसन शहजादा साहब के दोस्ता की आमद की इतलाह पाकर मुलाकात की दावत दी। सफदर और मदन न जब काजी साहब के पास जाकर दुआ सलाम की, तो देखा, कबीले के कुछ आदमी दूध के प्याले लिए आ रहे है, और कुछ शहद के प्याले। पता लगा कि मेहमानो को हर प्याले म स दूध और शहद पीना होगा, भल ही थोडा सा चखे भर। मेहमान नवाजी की यह रिवायत मदन के लिए एक अचम्भा था।

उसी रात जिस पठान के घर म उन्ह ठहराया गया, रात क खाने के वक्त पठान न अपनी जिन्दगी की अजीब दास्तान सुनाई कि जवानी म डाकाजनी और कत्ल, उसके दो ही शगल थे। पर उसे एक हसीना से मोहब्बत हो गई। हसीना के मा बाप ने जब उसके साथ शादी करने स इकार कर दिया तो उसे हसीना का पैगाम मिला कि अगर वह डाकाजनी से तोबा करने का इकरार करे तो वह मा-बाप के चोरी स उसके साथ कहीं भी जाने के लिए तैयार है। उसन अपनी हसीना को वचन दे दिया। पर जिस अधेरी रात को वह दोना कबीले म से गायब हो गए, उनका सुराग पाकर उनका पीछा किया गया। उस वक्त पीछा करने वालो पर गालिया चलाकर वह बच सकता था, पर उसन वचन नही तोडा। जिसका नतीजा यह हुआ कि दोना को पकडकर, लडकी का सिर मुडवाकर उसे कोठरी मे बद कर दिया गया, और खुद उस एक गहरे गडढे म डालकर, गडढे को एक बडे से पत्थर से बद कर दिया गया। दिन मे एक बार वह पत्थर उठाकर एक नान और पानी का एक लोटा गडढे मे रख दिया जाता था। इस तरह तीन हफ्ने गुजर गए तो उस गडढे म से निकाल कर काजी क सामने पेश किया गया। जिसके सवालो के जवाब मे उस नौजवान ने अपने ाबुत इश्क स कहा कि मोहब्बत खुदा की नजर मे गुनाह नही होती। हली जिन्दगी मे उसने जो गुनाह किए थे, उनकी सजा उसने गड्ढे मे कर पूरी कर ली है। इस पर काजी के दिल म खुदा का खौफ आ गया।

और उसन काठरी म वद हसीना को उसकी रजामदी क बारे म पुछवा भेजा। उसका जवाब आया कि वह अपन महबूब के बिना जिन्दा नहीं रहगी। इस पर काजी ने लडकी के मा बाप को हुक्म दिया कि वह लडकी का निकाह उसक साथ कर दें।

जब मदन न यह जाना कि उनक लिए आज का खाना उस पठान की उसी महबूब-बीवी न तैयार किया है तो मदन न कुछ रुपये निकालकर उस नक दिल औरत की नज्र करन चाहे। पठान का मेहमान से कोई भी पैसा लना वाजिब नही लग रहा था पर मदन का वह रात एक जियारत की तरह लग रही थी, जहा उस कोई नियाज जरूर चढानी थी। इसलिए ताहफे की सूरत म वह रुपय इस तरह पेश किए कि उस पठान को कबूल करन पडे।

अगल दिन सुबह की नमाज पहाडी नाले क किनारे पर अदा करके, सभी ने लकडी का पुल पार किया और तमाम दिन के सफर के बाद एक गाव मे रात गुजारी। अब अगल दिन उन्ह पठानी इलाक मे दाखिल होना था, जहा के लोगा की रिवायत, रस्मो रिवाज और तर्जे फिक्र म अफगानी असर नुमाया देखना था। पता लगा कि पठानो इलाक म पिछल दिनो हिन्दुस्तान का एक सय्यद मुल्ला गया था, तब अकाल पडा हुआ था, इसलिए लोग उसके पास यह सवाल लेकर आए कि खुदा को किस तरह राजी किया जा सकता है ? सैय्यद मुल्ला न कहा कि वह हर जुमे को घी के चिराग जलाकर किसी पीर की कब्र पर रखा करें और बारिश के लिए दुआ किया करें। खुदा चाहेगा तो फसल बहुत अच्छी होगी। गाव के लोग मिलकर सोचन लग कि चिराग तो जला लेंगे पर हमारे गाव म किसी पीर की कब्र नहीं है हम वह चिराग किसकी कब्र पर रखेंगे ? और वह सभी सहमत हो गए कि गाव म आए सैयद मुल्ला स बढकर कोई नेक बदा नही है। इसलिए उन्होने मिलकर, मस्जिद म सोए हुए सय्यद मुल्ला को मार दिया, और उसकी कब्र पर हर जुमे को चिराग जलाने लगे

और अगले दिन पठानी इलाके म पहुचकर मदन की देहशतजदा आखो न देखा कि कही कोई गाव नही है, हर जगह एक एक या दो-दो मीनारो वाले छोटे-छोटे किले हैं, और उन्हीं मे ही किला क खान और आवाम

रहते है। मीनारो मे छोटे छोटे गोल झरोखो से हैं, जिनम स दुश्मनो पर गालिया चलाइ जाती थी। पता लगा कि आम लोगो के पास खुद साख्ता बदूक होती है, और खाना के पास विदेशी रायफ्ले और पिस्तौल। एक किले के खान की दूसरे किले के खान से दुश्मनी आम बात थी। और यही दुश्मनी काबिल फख्र समझी जाती थी।

यहा मदन न अग्रेजी हुकूमत की डाली गई फूट एक लानत की सूरत म देखी, जिसन लोगो का ईमान जसा यकीन बना दिया था कि मद वही होता है जिसके बहुत स दुश्मन हो। जिसका कोई दुश्मन न हो, वह नामद होता ह।

और छह घट के सफर के बाद वह सभी खारकी खान मरवजी किले तक पहुच गए। वहा मरवजी दरवाजे पर पहरा देते हुए हथियार बद सतरी को मोहम्मद जमान न कहा कि बडे मुअजज लाग तहसीलदार साहब स मिलने आए ह। दस मिनट के बाद तहसीलदार साहब आकर मोहम्मद जमान से गले मिले, तो उसन सफदर और मदन का तआरुफ करवाया—"जनाब अब्दुल्ला सफदर साहब और जनाब मिया मोहम्मद हुसैन साहब, आली जा शहजादा साहब के दोस्त ह। चमरकद के इलाके की सैर क लिए जा रहे है, सोचा कि रास्त मे आपका दीदार भी हासिल कर ले।"

मोहम्मद जमान सचमुच ही जहीन आदमी था, बडी खूबी से सफर का बदोबस्त कर सकता था। पजाबी, उर्दू, पश्तो तीनो जुबानें बखूबी जानता था। तहसीलदार न उसके तआरुफ पर दोनो मेहमानो को दुआ-सलाम की, और कहा—"आपन मुझे मेहमान नवाजी का शफ बख्शा है, यह आपकी, नवाजिश है। आपकी तशरीफ आवरी से बदा बेहद खुश है '
और उसन सभी को अदर बुलाकर फल और शरबत पेश किया।

तहसीलदार की मादरी जुबान पश्तो थी। पर वह उर्दू बखूबी समझ बोल सकता था। उम्र कोई पतीस बरस के करीब होगी। वह खारकी खान का सबस बडा सलाहकार था। अचानक मदन को लगा कि वह तहसील-दार से काइ गहरा लगाव महसूस कर रहा है। मदन कुछ हैरान-सा कभी नजर झुका लता, कभी फिर एक बेबसी स तहसीलदार के चेहरे की ओर ताकने लगता। और फिर मदन को एहसास हुआ कि उसका चेहरा, तस्वीरो

मे देखे हुए शिवाजी से इतना मिलता है कि उसे देखे जाने की वह बेबसी-सी महसूस कर रहा है।

साथ ही बातो-बातो मे मदन ने महसूस किया कि जब तहसीलदार उसके बारे मे और सफदर के बारे म कुछ ज्यादा जानने की कोशिश करता है तो मोहम्मद जमान बडी होशियारी से बातो का रुख किसी दूसरी तरफ मोड देता है। पर इतना मदन और सफदर न भाप लिया कि तहसीलदार, फरारशुदा हिन्दुस्तानी कम्यूनिस्ट मोहम्मद हुसैन को जरूर जानता है।

एक घटे बाद तहसीलदार ने किले से बाहर जाकर घूम आने की तजवीज पेश की। मदन बोला—'भाईजान ! मैं तो पहले ही यह गुजारिश करने वाला था।' इस पर तहसीलदार हस दिया—'आप तो खुदा के खास बदे हैं। पर अल्लाह न मुझे भी इतनी तौफीक दी है कि किसी की हाजत को जान लू '

सारे उठकर बाहर जाने लगे तो सफदर न मदन को आख से इशारा सा किया, जिससे मदन समझ गया कि उसे जमान को बातो म लगाकर, उन दोनो को कुछ देर अकेले म चलने का मौका देना है। उस मौके के दरम्यान सफदर ने तहसीलदार साहब को बताया कि उनके बारे मे जो बताया गया है, वह काफी नही है। वह असल म हिन्दुस्तान के कामरेड मोहम्मद हुसैन के दोस्त हैं।

रात तहसीलदार के घर मे गुजार कर, अपनी सुबह वह चमरकद के रास्ते पर चल पडे। रास्ते मे मदन कुछ परेशान था कि सफदर को तहसीलदार से कामरेड मोहम्मद हुसैन का पता मिल पाया है कि नही, पर वह मुहाफिजो की मौजूदगी मे सफदर से कुछ पूछ नही सकता था।

सूरज डूबने का वक्त था जिस वक्त वह लोग चमरकद पहुचे। शहजादे की अफगान सरहद के पास वाली सल्तनत' के कमाडर मोहम्मद लतीफ से वाकिफ करवाते हुए मोहम्मद जमान न वही फिकरे दोहराए जो हर जगह कहता आया था, पर मदन ने गौर किया कि मोहम्मद लतीफ शहजादे से कही ज्यादा होशियार, पढा-लिखा और चालाक आदमी है। सभी न रात वही गुजारी, और जब अगली सुबह मोहम्मद लतीफ ने सभी को इलाके की सैर की दावत दी तो मदन न कहा कि वह अभी वही आराम करना

चाहेगा। असल म मदन की नजर कमरे की उस अलमारी पर थी, जिसमे बहुत सी किताबे थी।

वहा मदन न देखा कि किताबो म स्तालिन की स्वाने उम्र भी है और कम्यूनिस्ट मैनीफ़ेस्टो भी। मदन का राम राम खिल उठा। जब सफ्दर वापस आया मदन न मौका पाकर उस पर अपनी खुशी और तसल्ली जाहिर की। पर हैरान हुआ कि सफ्दर का चेहरा उदास और गम्भीर था। सफदर न धीरे से कहा—'देखा ! यह आदमी बहुत खतरनाक लगता है, इस सारे जाल से हम बहुत होशियार रहना चाहिए।'

मदन न हैरत से सफ्दर का हाथ दबाया—'पार्टी के आदमी से खतरा है।'

रात को अकेले मे सफ्दर न कहा—'मैं नही मान सकता कि यह हज़रत किसी भी आइडियालोजी के पाबद हो सकते हैं। यह लतीफ, शहज़ादे स ज्यादा खतरनाक है, क्योकि ज्यादा पढा लिखा है।'

मदन ने फिक्रमद होकर पूछा—'क्या खयाल है—अब तक शहज़ादे ने हमारे बारे म पशावर के हाकिम को इतलाह कर दी होगी ?'

'नही', सफ्दर ने एक पल सोचकर कहा—'इन लोगो की वफादारी की नीलामी म जो शख्स या पार्टी सबसे ज्यादा बोली दे, यह उसी के ज़र-खरीद हो जाते हैं। हमने उसके सामने जो तजवीज रखी है, उसके लालच मे शहज़ादा उस वक्त तक हमारे खिलाफ कोई कदम उठाने की जुरअत नही करेगा, जब तक उसे सबूत न मिल जाए कि वह सिर्फ लफ्फाज़ी थी। पर अब हमे इन हमसफरो से किसी तरह छूट जाना चाहिए। मेरे खयाल म वापस तहसीलदार तक पहुचना चाहिए। मुझे यकीन है कि हमारी खानगी के बाद उसने कामरेड मोहम्मद हुसैन के साथ जरूर राबता पैदा किया होगा '

चमरकद पहुचते ही वहा स लौटना मुनासिब नही था। इसलिए तीन दिना बाद सफ्दर ने लौटने की तजवीज सामने रखी। इस दौरान मोहम्मद लतीफ का रवय्या ज़ाहिर तौर पर ठीक ही था, पर मदन और सफ्दर न कई बार लतीफ को जमान मे साथ सरगोशियां करते हुए पाया था।

अगली सुबह जाना तय हुआ था, इसलिए सुबह की नमाज के बाद दोना ने पुरे ज़ोर लफ्ज़ा मे माहम्मद लतीफ का शुक्रिया अदा किया, और अपन 'रखवाला' का साथ लेकर लौट पडे।

दोनो रात तक खार मे तहसीलदार के पास पहुच जाना चाहत थे, पर शाम को उसके साथ लगत एक गाव मे जा पहुचे ये, खरकी खान के इलाके की हद से बाहर, कि मोहम्मद ज़मान ने रात वही गुज़ारन के लिए कहा। बताया कि वह सब बहुत थक गए है।

उस रात जब कुछ खा पीकर सब लेट गए तो 'हमसफरो म से एक सफ्दर की टागें दबान के लिए आ गया, और एक मदन उफ मिया मोहम्मद हुसैन की। दोना हैरान हुए कि उनकी इस तरह की खिदमत आज क्या की जा रही है

इतने दिनो की थकावट के बाद मदन के बदन को सुख मिल रहा था, पर फिक्र से उसे नीद नही आ रही थी। कुछ देर के बाद मदन न उस 'खिदमतगार' का शुक्रिया अदा किया, और कहा कि वह अब जाकर सो जाए। पर 'खिदमतगार' का कहना था कि जब तक वह सुला नही देगा, तब तक दबाता रहेगा।

मदन ने कुछ देर बाद ज़ाहिर किया कि वह पूरी तरह नीद म डूब गया है। और महसूस किया कि खिदमतगार के हाथ पैरो और पिंडलियो से ऊपर उठत हुए उसकी कमर टटोल रहे हैं। ज़ाहिर था कि उसके हाथ खोज रहे थे कि आखिर सारा पैसा किस जगह पर रखा हुआ है

मदन इस तरह जागा, जैसे अचानक गहरी नीद मे से जागा हा। जोर स कहन लगा—'बहुत रात हा गई है अब जाकर सो जाओ!'

सफ्दर का बिस्तर कमरे के दूसरे सिरे पर था, मोहम्मद जमान के नज़दीक। उसकी भी ऊची आवाज आई— हा, हा, अब सब लोग जाकर सो जाओ!'

मोहम्मद ज़मान ने चौंककर नीद' से जागते हुए पूछा— क्या, क्या बात है?'

'कुछ नही' सफ्दर नेजवाब दिया बहुत रात हो गई है, मैं इन्ह सोने के लिए कह रहा हू।'

वह लोग चले गए, पर मदन और सफ्दर सारी रात आखें मूदकर जागते रहे

9

पौ फूटने को थी, जब सफ्दर ने दबे पाव उठकर मदन का पैर झकझोरा, और कमरे से बाहर आने का इशारा किया। बाहर सारा गाव गहरी नीद मे सो रहा था सिर्फ आसमान मे हल्की-सी रौशनी झप रही थी, जब दबी आवाज मे सफ्दर ने कहा—'मदन! जाहिर है कि हमारी रकम की खातिर यह लोग हमे कत्ल करने पर तुले हुए हैं। यही बाद मे जाकर शहज़ादे से कह देंगे कि रास्ते मे दोनो फरार हो गये थे। मैं सारी रात सोचता रहा कि इनसे किस तरह जान छुडाई जाए। सो एक तजवीज सोची है '

और सफ्दर ने जब अपनी तजवीज मदन के कान मे डाल दी, तो दोनो दबे पाव आकर अपने बिस्तर पर लेट गए। फिर आसमान मे जब रौशनी फैलने लगी, तो सफ्दर ने धीरे धीरे कराहना शुरू कर दिया। इतने मे मोहम्मद जमान ने अगडाई ली, तो उसे बिस्तर से उठता देखकर सफ्दर ने टूटी सी आवाज मे उसे कहा—'जमान भाई! मेरी तो हड्डी हड्डी कसक रही है लगता है तेज़ बुखार चढेगी आज जाना भी जरूरी है, पर मुझसे चला नही जाएगा, अगर एक घोडे का बदोबस्त हो जाए तो अच्छा है '

मदन भी घबराया सा सफदर के पास आकर उसका माथा टटोलने लगा, और कहने लगा—भाई जान! बेहतर यही होगा कि हम दो चार दिन इसी गाव मे रह जाए।'

मोहम्मद जमान ने जल्दी से मदन की बात काटकर कहा—'इस इलाके म कोई काबिल हकीम नहीं है। अगर हम जल्दी से जल्दी शहजादा साहब के पास पहुच जाए तो उनका हकीम जनाब अब्दुल्ला सा[illegible]र साहब के मर्ज की शनाख्त कर लेगा '

मदन ने उसकी हा म हा मिलाई कहा—'आपका कहना बजा अब नमाज़ के बाद अगर घोडे का बन्दोबस्त हो जाए, तो रवाना

जाएग '

'शाहज़ाद' न जो घोडे उनक सफर के लिए पश किए थ, वह सिफ उसी इलाके की हद तक उनके पास रहे थ। आग वह सारा सफर पदल तय करत हुए आए थे।

नमाज़ के बाद सबने कुछ खाया पिया, पर सफ्दर न कुछ भी खान से इकार कर दिया। उस वक्त मदन न बडी मिन्नत-समाजत से उसे दूध का एक गिलास पिला दिया, कहा—भाई साहब ! बहुत लम्बा रास्ता है, कुछ नही खाएगे तो और कमजोरी हो जाएगी

सफदर की कराहट बढती गई तो मदन न मन म कहा—आखिर वह मेरा उस्ताद है, मरीज़ का किरदार भी मुझसे बढिया पेश कर रहा है

कोई ग्यारह बजे तक जमान ने घोडे का इतज़ाम कर दिया। और जब जमान और मदन ने सहारा देकर सफ्दर को घोडे पर बिठाया, उसने सारा जिस्म इस तरह ढीला छोड दिया जैसे घोडे पर आदमी नही, बिनौला की बोरी रखी हो। उस वक्त सफ्दर न टूटती सी आवाज म कहा—'बहुत कमजोरी है मैं शायद घोडे से गिर पडूगा, अच्छा हो अगर एक आदमी मेरे दायी ओर चलता रहे और एक बायी ओर

जमान ने अपने दो आदमियो को घोडे के दोनो ओर कर दिया, और खुद पीछे-पीछे मदन के साथ और बाकी चार आदमियो के साथ धीरे धीरे चलने लगा।

इस तरह कोई मील भर रास्ता गुजर गया तो वह खारकी खान के इलाके मे दाखिल हो गए। उस वक्त मदन न सफ्दर की बताई हुई तजवीज के मुताबिक, साथियो को एसे चुटकले सुनाने शुरू किय कि सभी की हसते हसते रफ्तार धीमी पड गई। एक ऐसा रौ बन गया कि वह भी सारे बारी-बारी स चुटकले सुनान लगे।

इस तरह दोनो दलो मे फासला बढता जा रहा था। और जब चुटकलो का रौ कुछ धीमा पड गया, तो मदन ने लाहौर कालेज के मनगढे दिनों के दिलकश किस्से सुनाने शुरू कर दिए। बीच-बीच म शेरो शायरी भी होन लगी। और दोपहर के कोई तीन बजे तक दोनो दलो का दरम्यानी फासला कोई तीन फर्लांग हो गया।

अब दूर से सारकी सान का किला दिखने लगा था। यह दूरी कोई आधा मील होगी, जब सफ्दर न अचानक घोडे को एडी लगाई, और उसकी लगाम ढीली छोड दी। घोडा दोनो अगली टागें उठाकर एक बार जार से हिनहिनाया, फिर सरपट भागन लगा

मदन इसी वक्त के इन्तजार मे था, जोर जोर स चीखने लगा—दौडा दौडा ! मेरे भाई साहब को बचाओ ! या अल्लाह रहम कर ! रहम कर !

अल्लाह मिया ने मदन का खूब लम्बी टागें दे रखी थी, साथ ही फेफडो का दम-खम भी। इसलिए वह दौडने मे सबसे आगे हो गया।

जमान भी तगडा जवान था, मदन से ज़रा दो कदम ही पीछे था कि मदन एसी फुर्ती से जमीन पर गिर पडा कि ज़मान भी उसके साथ टकरा-कर, एक चक्कर-सा खाकर ज़मीन पर गिर पडा। और इस तरह उस किले के दरवाज़े मे से उन्होने सफदर को घोडे समेत गुज़रते हुए दूर से देखा था।

मदन का झूठ मूठ का और जमान को सचमुच का लगडाना पड रहा था। वह जब लगडाते हुए किले के दरवाज़े तक पहुचे तो पहरेदार न उन दोनो को और उनके साथियो को गुजरने से रोक दिया। कहा—जब तक तहसीलदार साहब खुद आकर शनाख्त नही करेंगे, किसी को किले के अन्दर जाने की इजाज़त नही मिल सकती।

वह सभी दरवाज़े पर इन्तजार कर रहे थे, जब पहरेदार न बताया कि अभी-अभी एक घोडा सवार समेत आया था, दरवाज़े से टकरा गया था। हमने बडी मुश्किल से घोडे पर काबू पाया, और जख्मी सवार को तहसीलदार साहब के घर पहुचाया है।

कोई पन्द्रह मिनट बाद तहसीलदार ने आकर सबको दुआ सलाम किया, और भीतर उस बैठक मे ले गया, जहा कालीन पर लेटा हुआ सफ्दर कराह रहा था। सफदर के सिर पर पट्टी बधी हुई थी, पर तहसीलदार न सबको हौसला दिया कि बाहरी जख्म कोई नही, सिर मे अन्दरूनी चोट लगी है। चोट से भी ज्यादा सदमा पहुचा लगता है। और तहसीलदार ने मदन का खास तौर पर हौसला दिया—जनाब मिया मोहम्मद हुसैन ! आप

रत्ती भर फिक्र न करें। आपके बुजुग भाई साहब इशा अल्लाह ! चार-छह दिन म सहतयाब हा जाएग।

मोहम्मद जमान न जल्दी स मदन स कहा—मुझे पूरा यकीन है कि दो चार घटे आराम करने क बाद आपके भाई साहब सफर जारी रख सकगे। अगर हम जल्दी स जल्दी शहजादा साहब के पास न पहुचे, तो मेरे खिलाफ लानत-मलामत बजा हागी कि हमन मरीज को उनक जाती हकीम तक क्या नही पहुचाया।

मदन ने जमान को समझाया—जनाब आप फिक्र न कर, मैं खुद शहजादा साहब की तसल्ली करवा दूगा। पर इस वक्त भाई साहब के लिए सफर करना खतरे स खाली नही है। मैं इस वक्त उन्ह सफर की इजाजत नही दे सकता।

उस वक्त मोहम्मद जमान का लहजा सख्त हो गया। और उसने तकाजा किया कि और चार घटे बाद यहा स चलना ही होगा।

यह वक्त था, जिस वक्त तहसीलदार ने दखल देना मुनासिब समझा, और जमान स कहा कि वह सारे आदमी वापस जाकर शहजादा साहब को इत्तलाह कर दें। वह यकीन रखें कि उनके दोस्त हैं। ज्यो ही मुअज्जज मेहमान सफदर साहब सफर के काबिल हो जाएगे, मैं जाती जिम्मेदारी पर उन्ह सही सलामत शहजादा साहब के दौलतखाने पहुचा दूगा।

मोहम्मद जमान बहुत नाखुश था इसलिए उसन मदन को एक ओर बुलाकर कहा कि यह तहसीलदार बिल्कुल भरास के काबिल नही है आप दोनो का यहा रहना खतरनाक साबित होगा। उस वक्त मदन ने उसे यकीन दिलाया कि उसकी नेक सलाह के मुताबिक दोनो भाई तहसीलदार से चौकन्ने रहगे। और एक हफ्ते के भीतर यहा से चल देंगे।

तहसीलदार जब मोहम्मद जमान को और उसके साथियो को बाहर किले के दरवाजे तक छोडन के लिए गया, मदन को सफदर से बात करने का मौका मिल गया। उस वक्त सफदर ने बताया कि उसने तहसीलदार से मिलते ही सारी बात बता दी है कि असल म वह हकीम अब्दुल्ला सलाम के दोस्त हैं, और यहा कामरेड मोहम्मद हुसैन से मिलना चाहते हैं जो उन्ह अफगानिस्तान के हाजी मोहम्मद आमीन के पास पहुचा देगा। उन्ह असल

म हाजी साहब की मदद से रूम की सरहद पार करनी है।

मदन को सफदर की दूरअदेशी पर शक नही था, तो भी घबराहट हुई कि यह सब कुछ तहसीलदार को बता देना जाने मुनासिब बात हुई है कि नही।

तहसीलदार जब लौटा, उसने एक खिदमतगार को बुलाकर दोना के लिए खाना लान का हुक्म दिया, और मदन की घबराई-सी सूरत देखकर, उसके कधे पर हाथ रखत हुए कहा—'मिया माहम्मद हुसैन ! मैं भी तुम्हारा भाई हू, पठान भाई ! आप दोनो खारमी खान के इलाके म है, जहा कोई आख उठाकर आपकी ओर देखने की जुरअत नही कर सकता मोहम्मद जमान को अलविदा कहते हुए मैंने खबरदार कर दिया है कि उनमे से किसी ने भी अगर आपके खिलाफ कोई कदम उठाया ता इस हरकत का नतीजा उनको भुगतना पडेगा।

और तहसीलदार न तफ्सील से बताया कि शहजादे के आदमियो को अपन एक इलाके से दसरे तक जान के लिए, यहा से गुजरना पडता है, इसलिए किसी हालत मे भी हमारी नाराजगी मोल लेन की उनमे तौफीक नही है।

उस वक्त तहसीलदार ने यह भी वताया कि पहली मुलाकात के दौरान ही वह समझ गया था कि वह दोनो शहजादे के आदमी नही है। उनके जाने के बाद वह कामरेड मोहम्मद हुसैन से भी मिला था, और दोनो परेशान हुए थे कि वह शहजादे के आदमियो मे फस गए हैं। पर दु ख यह था कि अब उनकी मदद किस तरह की जाये।

यह शाम मदन और सफदर की पहली शाम थी जो बहुत दिनो की—तन और मन की थकावट के बाद, उन्ह पूरे सकून की मिल पाई। उस रात का खाना सिफ लजीज नही था, एक दोस्त के साथ म था, एक दोस्त की पनाह मे।

रात को खुले आगन मे दोनो के बिस्तर लगाए गए। उस रात उन्होने मखमली लिहाफ भी अग लगाया, और मखमल से मुलायम दोस्ती का एहसास भी।

वह रात चौदहवी के चाद वाली रात थी। मदन ने कभी चाद को इस

मद्र खूबसूरत नही पाया था, पर उसके मकसद का जादू चांदनी के जादू से कम नही था। सोवियत रूस का मुग देखना उनके लिए यार का दुस दसन के बराबर था। और उसी मुद्दत से भूला हुआ एक टप्पा याद आने लगा—
'चन्न चढेया कुल आलम देग, मैं भी वेखा मुख यार दा

10

तहसीलदार न एक बडा मुनासिब कदम उठाया मदन और सफ्दर दोनो का खारकीखान से मिलाकर, दोनो को इलाके की हिफाजत दिलवा दी। खारकी खान बाअसूल आदमी था और अपने मोहतबर सलाहकार पर यकीन रखता था। इसलिए उसन मदन और सफ्दर से कोई पूछताछ नही की।

अगली रात तहसीलदार के घर मदन और सफ्दर की मुलाकात एक उस बुजुग आदमी के साथ हुई, जिसे तहसीलदार उस्ताद साहब कहकर मुखातिब होता था। उसने बताया कि पहली बडी जग के वक्त यह बरतानवी फौज मे था। जहा टर्की मे वह जमन फौज के हाथ पड गया था, जिन्होन उसे फौजी प्रशिक्षण देकर बरतानवी फौज से लडने के लिए तैयार किया था। वह जब जग के बाद हिदुस्तान लौटा तो बरतावनी जासूस उसके पीछे लग गए। उस वक्त वह खारकी खान की पनाह मे आ गया। अब वह बीस साल से यही है और ब्रिटिश राज्य का सख्त मुखालिफ है।

उस्ताद साहब की मुलाकात ने मदन और सफ्दर का यकीन और पक्का कर दिया कि तहसीलदार को उन दोना की बगावती रुचियो से किसी तरह की शिकायत नही है।

अगली दोपहर तहसीलदार दोना को एक जिला हाकिम के गाव म ले गया, जो अनाज और शहद की सूरत म खारकी खान को जजिया चुकाता था। पर जिले का सारा इतजाम उसके अपने हाथ मे था खुद मुख्तार हाथा मे। वह खारकी खान के इस असूल का बडा पाबद था कि उसके इलाके मे चोरी और डाका, मौत की सजा के कम जुम नही गिने जा सकते।

इस जिला हाकिम ने मदन और सफदर की बहुत खातिरदारी की। कुछ देर बाद दोनो ने यह भी जाना कि वह जिला हाकिम कामरेड मोहम्मद हुसैन की अडर ग्राउड सियासी पार्टी का मैंबर भी है।

यहा उन्होने जाना कि कामरेड मोहम्मद हुसैन खारकी खान के इलाके से बाहर, पर नजदीक ही, एक किले म रहता है। वह किला दरिया के दूसरे किनारे पर था, जिला हाकिम खान के गाव से कोई सात मील दूर। खान और तहसीलदार ने चाहा कि उसके साथ मदन और सफदर की मुलाकात किसी तरह भी खारकी खान की इतलाह म नही आनी चाहिए। इसलिए कोई आधी रात के वक्त उन्होने कामरेड मोहम्मद हुसैन को यह खबर भेजी कि दोनो मुलाकाती रात इसी गाव मे गुजारकर, अगले दिन उमस मुलाकात के लिए आएग।

मदन आमतौर पर चुप रहता था, पर उस रात सियासी हालात पर बात होती रही तो मदन न बडे खलूस से अपना नजरिया पश किया कि दुनिया दो हिस्सो मे बट जाएगी, एक बडी ताकत सोवियत रूस होगी, अवाम की और कामगारो की हिमायत म, और एक ऐंग्लो अमेरिकन ब्लाक होगा, जागीरदारी के लुटेरे निजाम वाला। मदन ने साफ लफ्जो मे यह भी कहा कि आजादी की जद्दो जहद कर रहा हिदुस्तान, और दूसरे कलोनियल मुल्क, सोवियत रूस की आइडियोलोजी की हिमायत करके, बडा अहम रोल अदा कर सकत ह।

मदन को उस रात हैरानी भी हुई, तस्कीन भी कि जिला हाकिम और तहसीलदार गहरा सियासी इल्म रखते हैं।

रात गुजारने के लिए जिला हाकिम का मेहमानखाना बहुत बडा था, पर मुनासिब समझा गया कि मदन और सफदर दोनो गाव की मस्जिद मे चले जाए। और एक हथियार बद आदमी का इतजाम कर दिया गया, जो सुबह की नमाज के बाद दोनो को कामरेड मोहम्मद हुसैन के पास ले जाएगा।

दरिया उन दिनो तकरीबन सूखा पडा था। सुबह जब मदन और सफदर अपन साथी के साथ दरिया पार करके दूसरी सीमा मे दाखिल हुए, तो जल्दी ही वह किला दिखाई देने लगा, जो बाहर से ऊची-ऊची

मिट्टी की दीवारों से घिरा हुआ था।

किले की रक्षा के लिए हथियारबन्द पहरा था, पर पिछली रात पैगाम पहुंच चुका था, इसलिए कोई मुश्किल नहीं हुई। मदन ने देखा कि भीतर एक मस्जिद के गिर्द कोई तीस घरों की आबादी है, जिसमें एक छोटे से कमरे में कामरेड मोहम्मद हुसैन रहता है।

मोहम्मद हुसैन एक लम्बा-पतला कोई पचास बरस का शख्स था, जिसके खूबसूरत चेहरे की गहरी लकीरें उसके इल्म का और गंभीरता का आईना थीं। पश्तो उसकी मादरी जुबान थी पर उर्दू और अंग्रेज़ी भी उसकी मादरी जुबान जैसी हो गई थी। नर्म जुबान में और बड़ी शाइस्तगी से बोलने वाले इस शख्स को देखकर यह अन्दाज़ा नहीं होता था कि हिन्दुस्तान के सब सूबों में पुलिस को इस बागी की सख्त तलाश थी।

हिन्दुस्तान के कम्यूनिस्टों की तरह, मोहम्मद हुसैन ने भी यह सियासी रास्ता हिन्दुस्तान के आज़ादी आंदोलन में रहकर अपनाया था। वह पेशावर में पैदा हुआ था सरकारी नौकरी करता था जब इस्तीफा देकर गांधी मूवमेंट में आ गया था। गांधी की अहिंसा नीति से वह सहमत नहीं था, इसलिए उसकी जाती आइडियालाजी ने उसे कम्यूनिज़्म के साथ जोड़ दिया था। फिर जब बरतानवी ने उसे पकड़कर पेशावर जेल में डाल दिया, वह किसी तरह जेल में से फरार हो गया था, और तब से इस कबायली इलाके में जलावतन होकर रह रहा था

मोहम्मद हुसैन का विनोदी स्वभाव सियासत पर भी व्यंग्य कस लेता था खुदा पर भी। मदन को हंसी आ गई, जब शाम की चाय पीते हुए मोहम्मद हुसैन ने कहा—'चलो भाई साहब! नमाज़ का वक्त हो गया है, चल कर खुदा के साथ ठगी कर आएं।'

और मोहम्मद हुसैन खुद भी हंसने लगा—'भई, लोग कहते हैं कि खुदा की मर्जी के बिना पत्ता नहीं हिल सकता, सो इस बात की हम भी ताइद कर आएं और पत्ते हिला आएं!'

सफ्दर होंठों में मुस्करा रहा था, जब मदन ने कहा—'अगर खुदा कोई है, तो वह ज़रूर हमारे जैसे पाज़ियों से मोहब्बत करता होगा। जो यह ठगी सिर्फ उसके साथ करते हैं, उसके बन्दों के साथ नहीं करते।'

नमाज़ अदा करनी थी, सो तीनो ने किले की मस्जिद मे जाकर अदा की।' और फिर कमरे मे आकर गभीरता स सोचने लगे कि आगे क्या करना चाहिए। माहम्मद हुसैन ने कहा कि इतज़ाम होगा ज़रूर, पर अफ्गानिस्तान मे दाखिल होने के लिए कुछ हफ्ते ज़रूर लग जाएग, क्योकि सिफ हाजी मोहम्मद आमीन उन्हे रूस की सरहद तक पहुचा सकता है, और उस तक काई भी पैगाम सिफ वादशाह गुल के जरिए भेजा जा सकता है, जिसे बरतानवी सरकार अपना सबसे बडा दुश्मन समझती है।

मदन और सफदर ने इस बातचीत से मुनासिब यह समझा कि दोनो को जिला हाकिम के गाव मे रहना चाहिए, क्योकि वहा स यह किला नज़दीक पडता है।

तहसीलदार ने भी कुछ दिन जिला हाकिम के पास ठहरने का वदोबस्त कर लिया, ताकि वक्त वे वक्त मदन और सफदर उससे मिल सकें। वैस भी यह रमज़ान के दिन थे, और दोस्तो के साथ मे यह दिन अच्छे गुज़ारे जा सकते थे। सभी का रोजे रखन थे, पर सफदर ने कहा—कि उसस सारा दिन भूखा नही रहा जाता। इसलिए जिला हाकिम ने कहा कि उन दोनो का मस्जिद मे रहकर रोजे तो रखने ही पडेंगे, पर उनके लिए वह बढिया शक्करपार बनवा देगा, जो वह मस्जिद के किसी कान मे छुपाकर रख लें, और दिन मे जब भूख लगे, वह छुपकर खा लिया करें।

सुबह मदन और सफदर जिला हाकिम के साथ लम्बी सैर के लिए निकल जाते। दो चार दिन रहकर तहसीलदार लौट गया था, पर वह भी दूसरे-तीसरे दिन आ जाता, और इस तरह इतज़ार के दिन और सफदर के लिए बहुत आसान हो गए।

रमज़ान का बारहवा दिन था, जब कामरेड माहम्मद हुसैन का पैगाम मिला कि अगले दिन वह दोनो का बादशाह गुल के पास ले जाएगा। इस रास्ते के लिए जिला हाकिम ने दा हथियार वद पठान उनकी हिफाज़त के लिए तैयार कर दिए।

अगले दिन नियत वक्त जब मदन और सफदर खामकी खान की सरहद स दो मील आग पहुच गए, तो मोहम्मद हुसैन दो दोस्तो समेत,

उनसे आ मिला। उन्ह जो अगला रास्ता पकडना था, वह तग रास्ता पहाडी दर्रे जैसा था, जहा अक्सर मुसाफिर लूट लिए जाते थे, और कत्ल कर दिए जाते थे। इस रास्ते के लिए माहम्मद हुसैन न मदन और सफदर को एक-एक पिस्तौल दे दिया और कहा कि किसी भी झाडी की ओट म अगर उन्ह कोई शक सुबहा लगे तो वह बदरेग गाली चला दें।

इस एक घटे के रास्ते के बाद वह बादशाह गुल के इलाके म दाखिल हो गए और सबने पिस्तौल जेबो म डाल लिए। पर वहा पहुच कर सभी को सख्त मायूसी हुई कि बादशाह गुल को किसी अचानक आ पडे काम क लिए काबुल जाना पड गया था। सबने मस्जिद म जाकर नमाज पढी और फिर मोहम्मद हुसैन के इशारे पर मदन और सफदर चुपचाप मस्जिद म से बाहर आकर गाव की गलियो मे चलने लगे। वहा माहम्मद हुसैन ने बताया कि इटरनैशनल हालात एक नया मोड ले गई है। लगता है कि रूस और जर्मनी का आपसी मुआमदा टूट रहा है। सो कबायली इलाके के मुस्तिकबल के लिए बादशाह का काबुल जाना जरूरी हो गया था। *अब रात यहा गुजारकर सुबह सोचेंगे कि क्या करना चाहिए।*

अगली सुबह माहम्मद हुसैन न बताया कि उसे बादशाह गुल के लौटन की कोई खबर नही मिल पाई इसलिए उसन तहसीलदार के पास आदमी भेज दिया है कि अफगान सरहद के नजदीक, मदन और सफदर के रहन का इतजाम किसी गाव मे कर दिया जाए। और साथ ही उसने बताया कि जो आदमी हाजी मोहम्मद अमीन के पास गया हुआ था, वह एक या दो दिनो तक लौटने वाला है।

दोपहर तक तहसीलदार की ओर स इत्तलाह मिल गई कि खारकी खान की जो सरहद अफगानिस्ता के करीब है, वहा के एक गाव मे दाना के रहने का इतजाम कर दिया गया ह। वहा वह दोनो उस्ताद साहब के मेहमान होग। उनसे वह तहसीलदार के घर मिल चुके हैं।

दोनो शाम तक उस्ताद साहब के गाव पहुचे, तो देखा कि वह ऊचे पहाडा के पाव म बसी एक वादी थी, जहा पहाडी चश्मा से गिरते पानी की आवाज हर वक्त सात सुरा की तरह गूजती रहती थी। यह कुदरत का बडा ही हसीन मजर था। उस्ताद साहब न बताया कि इन वादी को

सबसे पहले बौद्धो ने आबाद किया था, जो इसकी गुफाओ मे आकर बसे थे। उन्होंने ही एक गुफा से दूसरी तक पानी के इतजाम के लिए नालियां बिछाई थी। और मदन सारा सारा दिन एक से दूसरी, और दूसरी से तीसरी गुफा मे जाता, समय के पद चिह्न खोजता रहता।

इस गाव मे रहते हुए मदन और सफ्दर को करीब महीना हो चला था, जब दिसम्बर के दूसरे हफ्ते मोहम्मद हुसैन की ओर से इत्तलाह मिली कि हाजी साहब कबायली इलाके मे आने वाले है, और उनसे दोनो की मुलाकात जल्दी हो जाएगी।

मदन और सफ्दर ने तहसीलदार को यह खबर भी भेजी, और आज तक की मदन के लिए शुकराना भी, जिसके जवाब मे तहसीलदार ने खुद आकर उन्हें अलविदा कही।

मदन और सफ्दर खारकी खान के इलाके की सरहद पर जाकर मोहम्मद हुसैन से मिले, जहा से वह दोनो को हाजी मोहम्मद आमीन के पास ले गया। वह तीनो शाम को उस गाव मे पहुच गए थे, पर रास्ते से हटकर, झाडियो म बैठे रहे और सूरज डूबने की इतजार करने लगे, जब वह लोगों की नजर बचाकर हाजी साहब से मिल सकें।

हाजी साहब जहा ठहरे हुए थे, वह मिट्टी की ईटो वाला एक बड़ा-सा कमरा था, जिसके एक कोने मे जलती हुई लकडियो ने दिसबर की रात को गर्मा दिया था। उनके पहुचने पर हाजी साहब ने उठकर मोहम्मद हुसैन को गले से लगाया, और बडी गर्म जोशी से मदन और सफ्दर को खुशआमदीद कहा। उस वक्त हाजी साहब के पास बहुत से लोग बैठे हुए थे, जब कुछ देर बाद विदा हो गए, तो हाजी साहब ने बताया कि वह इसी गाव के बजुर्ग हैं, दावा करते हैं कि उनके पास हज़रत मोहम्मद साहब के सिर का एक बाल है, जिसे बडे अदब से उन्होंने सभाल कर रखा हुआ है। उसी के दीदार के लिए वह कल की दावत देने के लिए आए थे। और हाजी साहब न बताया कि इस गाव के लोग उनकी बहुत इज्जत अफ्जाई करते हैं, इसलिए हाजी साहब के दोस्तो को इस गाव मे कोई खतरा नही हो सकता।

मोहम्मद हुसैन ने उस वक्त मदन का हकीकी तआरुफ करवाया

और बताया—'यह मुल्ला साहब, मिया मोहम्मद हुसैन, असल मे हिंदू हैं, मदन मोहन हरदत्त, जो सफ्दर साहब के साथ मिलकर सोवियत रूस पहुचना चाहते है, ताकि वहा से सियासी अगवाई लेकर अपने मुल्क हिंदुस्तान को आज़ाद करवा सके ।

हाजी साहब ने मदन की पीठ ज़ोर से थपथपाई और कहा—शाबास ! बहुत खूब ! खूब वेश बदला है

और फिर गभीर होकर हाजी साहब कहने लगे— आप लोग जो भी मदद चाहेगे, मैं करूगा । मैं हिंदुस्तान के सियासी हालात से अब वाकिफ नही हू, इसलिए उसके बारे मे कुछ कहना मुनासिब नही समझता । पर सोवियत रूस के बारे म कह सकता हू कि आज का रूस लेनिन के वक्त का रूस नहीं रहा । इसलिए आप लोग जो तमन्ना लेकर जा रहे हैं, आपका नाउम्मीदी हासिल होगी '

हाजी साहब ने मदद का वचन दे दिया था, इसलिए सब उनसे विदा होकर सोने के लिए चल गए । पर मदन बहुत परेशान था, इसलिए सफ्दर ने उससे कहा 'हाजी साहब के बगावती ख्याला पर मजहब की अफीम का रग चढ गया लगता है । रूस के मौजदा हालात से हाजी साहब नावाकिफ लगते हैं । हमारे मकसद की अहमियत सिर्फ हम लोग जानते हैं, हाजी साहब नही जान सकते ।'

मदन, सफ्दर को हर तरह से अपने से ज्यादा समझदार समझता था, इसलिए उसने सफदर की बात पर यकीन कर लिया, पर उस हाजी साहब की दयानतदारी पर शका नही हुई ।

सुबह सुबह कामरेड मोहम्मद हुसैन को उनसे विदा लेकर लौट जाना था, इसलिए मदन की रात वाली उदासी और गहरी हो उठी । दोनो अपने दोस्त को विदा करने के लिए गाव से बाहर तक उसके साथ गए । और जब जाते हुए मोहम्मद हुसैन ने मदन को गले से लगाकर कहा—मेरे हम नाम ! मुझे याद रखना ! तुमसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई है । तो मदन की आखें भर आइ । मुह मे सिर्फ इतना निकला 'भाई-जान ! मैं हमेशा आपके नक्शे कदमो पर चलूगा '

वह दोनो वहा से लौटकर हाजी साहब के कमरे म पहुचे तो उस

वक्त तक कमरे में अच्छी खासी भीड़ जमा हो चुकी थी। हाजी साहब के मुरीद ज़ोर ज़ोर से "अल्ला हू अल्ला हू" कह रहे थे। एक दीवानगी का आलम सभी पर तारी छा गया लगता था। और फिर वह सब उठकर गांव के मुखिया के घर की ओर चल दिए—जहां हज़रत मोहम्मद साहब के बाल का दीदार पाना था।

मदन और सफ्दर भी हाजी साहब के साथ चल दिए। वहां मुखिया के घर में एक छोटी सी सन्दूकची थी, जिसे हाजी साहब ने पहले होंठों से चूमा, फिर सन्दूकची को खोला। मुरीदों में से एक एक ने आगे बढ़कर रेशमी रूमाल पर रखे हुए बाल का दीदार पाया। और उस वक्त हाजी साहब ने कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं।

इसके बाद उस घर में भी हाजी साहब की दावत थी, और उसी दिन बाकी मुरीदों के घरों में भी। इसलिए मदन और सफ्दर को साथ लेकर हाजी साहब हर मुरीद के घर में गए, और हर घर की दावत कबूल करके जब वापस लौटे तो शाम होने को आ गई थी।

मदन और सफ्दर को और दो दिन हाजी साहब के पास रहना था। इसलिए पहले दिन की सरगरमी के बाद, उन्हें सियासी बातें करने की अच्छी फुरसत मिल गई। मदन को यह जानकर हैरानी हुई कि हाजी साहब कट्टर मुसलमान थे, पर मोहम्मद जिनाह की दो-कौम थ्योरी के सख्त खिलाफ थे। और उनकी नज़र में हिन्दुस्तान के लिए आज़ादी हासिल करने का एक ही रास्ता था। हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद।

हाजी साहब ने अपनी ज़िन्दगी के बारे में भी रोशनी डाली कि वह फ़रीदकोट के रहने वाले थे। और हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए कई साल बरतानवी हकूमत की जेलों में गुज़ार चुके थे। आखिर में वे फरार होकर अफगानिस्तान में आ गए। अफगान हकूमत ने उनको पनाह दे दी और वे अफगानिस्तान के शहर जलालाबाद में आ बसे हैं।

अगले दिन हाजी साहब ने मदन को एक ओर ले जाकर कहा—'आप दोनों के जाने का बन्दोबस्त हो गया है। मैं तुम्हारे ख्यालों की शिद्दत समझता हूं, और वह ब-खिन्न भी जो तुम्हें सोवियत रूस ले जा रही है। पर एक बात याद रखना कि असली बगावत वह होती है जो आवाम की

ख्वाहिशों की बुनियाद पर रखी जाती है। असल में इंसान वही होता है जो आवाम की खुशी का सच्चा मकसद सामने रखकर, अपनी तमाम ज़िंदगी उस मकसद के लिए लगा देता है। बगावत तब कामयाब होती है जब आम लोग उसके लिए तैयार हो चुके होते हैं। बगावत कभी भी बाहर से लाकर लोगों पर लादी नहीं जा सकती।'

हाजी साहब ने मोहम्मद अली नाम के एक जवान को मदन और सफदर के साथ के लिए तैयार कर दिया। उन्हें रात होने पर गांव से चल देना था। पर उससे पहले हाजी साहब ने फिर एक बार मदन को अकेले में बुलाकर कहा—'तुम्हारी जवानी पर मुझे रहम आता है। तुम नेकदिल बंदे हो। मेरे पास बहुत से बगीचे हैं, अगर तुम यहीं बस जाओ, मैं तुम्हें कोई बगीचा दे दूंगा। तुम किसी बहुत खूबसूरत लड़की से निकाह कर लेना ' और हाजी साहब ने हंसकर यह भी कहा—'मदन मियां ! तुम चाहो तो चार बीवियां तुम्हें मिल सकती हैं '

उस वक्त मदन बहुत हंसा, कहने लगा 'मैं आपका बड़ा मशकूर हूं हाजी साहब ! पर मुझे एक ही परीज़ादी का इश्क लगा हुआ है। जब तक मैं अपने मुल्क की आज़ादी का मुंह न देख लूं, तब तक मुझे एक भी बीवी दरकार नहीं।

11

मदन और सफदर ने डयूरीन लाइन को नक्शे पर देखा हुआ था, पर पैंग तले नहीं देख सके। वह रात के अंधेरे में चलते हुए, पता नहीं किस वक्त उनके पैरों के नीचे से गुज़र गई। सिर्फ मोहम्मद अली की आवाज़ ने उन्हें आगाह किया कि वह अफगानिस्तान की हद में आ गए हैं।

जलालाबाद के उत्तर की ओर काबुल दरिया के किनारे जब एक गांव आया, मोहम्मद अली ने कहा कि इस गांव में हाजी साहब के कुछ मुरीद रहते हैं, इसलिए यहां की मस्जिद में बिना किसी खतरे के रात काटी जा सकती है, तो रात वहां रहकर, अगली सुबह की नमाज़ अदा

करके, और गाव म हाजी साहब के एक मुरीद के घर म खाना खाकर, वह तीना जलालाबाद क राह चल दिए। वहा पहुचकर मदन और सफ्दर का एक मस्जिद म छाटकर, मोहम्मद अली काबुल को जाती हुई किसी लारी का पता लगाने चला गया। यह शाम का वक्त था, और सबब से आलुआ स भरी बोरिया का एक ट्रक काबुल जा रहा था, जिसे सुबह सुबह काबुल की मडी म आलू पहुचाने थे। उस टक के ड्राइवर ने उन तीना मुसाफिरा का ट्रक म बिठाना मान लिया तो तीनो ने जल्दी से हाथ-पैर अडाकर उन बोरिया म अपने बैठन की जगह बना ली।

ट्रक के हिचकाला से कभी तीना मुसाफिर बोरिया पर जा गिरते, और कभी बोरिया मुसाफिरा पर आ गिरतीं और सुबह काबुल पहुचकर जब वह ट्रक में से नीचे उतरे ता उनका जोड-जोड हिला हुआ था, पर गिरते-पडते स जब वह साथ की मस्जिद म पहुचे तो उन्ह तसल्ली हुई कि उनके मौलाना चागा और तसबिया सरकारी कागजो से ज्यादा अहमियत रखती हैं।

वहा एक दिन सुस्ताकर वह बस म मज़ार-ए शरीफ चले गए जो वहा से एक सौ पचास मील दूर थी। यह जगह उस आमू दरिया के किनारे पर थी, जिसके उस पार उज़बेकिस्तान था, और वह इस दरिया को पार करके सोवियत रूस की हद मे दाखिल हा सकते थे।

रात एक सराय म गुज़ारकर, सुबह-सुबह सफ्दर न कहा कि दरिया पर जाकर पता लगाना चाहिए कि कब और कहा से दरिया पार किया जा सकता है। तीना का मिलकर जाना मुनासिब नही था, इसलिए मदन मौलाना चागा पहने शहर मे घूमता रहा, और सफ्दर और अली दरिया की ओर चले गए।

मदन जब शहर म घूमता हुआ थककर, शहर की सबस बडी मस्जिद की सीढिया पर बैठ गया, तो उसके हाथ मे पकडी हुई तसबी देखकर एक नौजवान अफगान उसके पास आ बैठा कि उसके सिर मे सख्त दद है, इसलिए मौलाना साहब कोई झाड फूक कर दें।

मदन न इस नई आफ्त से घबराकर आखें मूद ली, और हाठा मे खुदा के आगे इल्तिजा की कि उसे इस आफ्त से छुडाए। दाहिन हाथ के

अगूठे से यह कुछ देर तक पठान की कनपटिया दबाता रहा, फिर उठकर मस्जिद के भीतर चला गया। पर उसने देखा कि वह पठान भी सीढ़ियां स उठकर उसके पीछे-पीछे आ गया, और आते ही उसके पैर पकड़कर कह रहा है—'तुम खुदा के पहुचे हुए आदमी हो, कुछ सिक्के निकालकर उसके पैरो म रख दिए। उस वक्त मदन की आवाज का हौसला हुआ, और उसने हँसकर कहा—'ददं तो अल्ला ताला ने रफा किया है, यह सिक्के भीतर जाकर उसकी दरगाह पर रख दो ! मैं नहीं लूगा।'

इस तरह मदन जब कुछ हुलसा हुआ सा वापस सराय मे आया, तो सफदर और अली उसका इतजार कर रहे थे। पर मदन का सारा उत्साह ठडा पड गया, क्योकि सफदर का चेहरा उतरा हुआ था। सफदर ने बताया कि दरिया बहुत गहरा है, किसी तरह भी पार नही किया जा सकता। नाव का ख्याल मदन के मन मे आया पर सफदर ने कहा कि नाव का सवाल ही पैदा नही होता, क्योकि हर जगह बरतानवी जासूस हैं।

उस वक्त मोहम्मद अली ने कहा कि अब जलालाबाद लौटने के सिवाय कोई सूरत नजर नही आती। वहा जलालाबाद म हाजी साहब के दोस्त भी हैं, और मुरीद भी, शायद वह कोई रास्ता निकाल सकें। सफदर ने रजामदी जाहिर की, पर कुछ सोचकर कहने लगा—इससे बेहतर है कि हम काबुल म रहकर कोई राह निकालें !

यह जनवरी का महीना था। सारा काबुल बर्फ से ढका हुआ था। मदन और सफदर ने एक कबाड़िए से मोटे-मोटे कोट खरीदे पर जाडा उनकी हड्डियो मे उतर गया था। सफदर को सर्दी मे निमोनिया हो गया, और मदन के दोनो पाव सूज गए। सिर्फ गनीमत थी कि मोहम्मद अली काबुल म रहते एक हिंदुस्तानी डाक्टर नूर मोहम्मद को जानता था, जो काबुल के फौजी अस्पताल का डाक्टर था।

डाक्टर नूर मोहम्मद की सिफारिश पर सफदर को अस्पताल मे दाखिल कर लिया गया, पर मदन कभी सराय मे रात काटता, और कभी मस्जिद म। वैसे डाक्टर नूर मोहम्मद के कहने पर वह गरम पानी मे नमक डाल कर अपने पैरो को सेंकता रहा, और उसके पैरो की सूजन उतरने लगी।

सफदर को अस्पताल में से खारिज होते हुए कोई दो हफ्ते लग गए। पर वह अभी भी इतना कमजोर था कि सफर के काबिल नही था। उस पर मोहम्मद अली का इतनी देर तक एक ही जगह पर रहना शायद खतरे से खाली नही लगा था। एक दिन वह बिना कुछ कहे और बताए, दोनो को उसी हालत म छोडकर लापता हो गया।

अब काबुल मे सिफ डाक्टर नूर मोहम्मद था, जिसे वह दोनो जानते थे, और कोई भी साधन उनके पास नही रह गया था। इसलिए मदन और सफदर ने नूर मोहम्मद के सामने अपना मकसद भी रख दिया, और अपनी मुश्किल भी। नूर मोहम्मद ने पूछ ताछ करके उनसे कहा कि वह बस मे हैरात चले जाए, वह शहर काबुल के पश्चिम की ओर है, और वहा से सोवियत रूस की सरहद सिफ पचास मील है। साथ ही नूर मोहम्मद ने रास्ते के लिए उन्ह कुछ रुपये देने चाहे, पर नूर मोहम्मद की दोस्ताना मदद ही उनके लिए बहुत कीमती थी, पैसो के बिना अभी चल सकता था।

हैरात से अगला पचास मील का रास्ता जाने वीरान था कि आबाद, इसलिए मदन और सफदर ने उस रास्ते के लिए दो दजन उबले हुए अडे और आठ नान खरीदकर साथ रख लिए। डाक्टर नूर मोहम्मद ने बताया कि हैरात से कुछ दूरी पर सडक फट जाती है, जिसका दायी ओर वाला रास्ता सोवियत रूस की ओर जाता है, और दूसरा रास्ता ईरान की ओर। दोनो ने अदाजा लगाया कि उस सफर मे उन्ह पाच दिन से ज्यादा वक्त नहीं लग सकता।

हैरात से अगले सफर पर रवाना होते हुए दोनो के पैरो मे उतावली भी थी और मदहोशी भी, क्योकि उनकी मजिल का यह आखिरी पडाव था। पहली रात के आश्रय के लिए उन्ह रास्ते के एक ओर बनी मस्जिद मिल गई, जहा से सुबह उठकर उन्होंने अगला राह पकडा। दोपहर ढलने तक वह खानाबदोशो के एक डेरे म पहुच गए, जिन्होंने बडे सलूक के साथ उनकी खातिरदारी की। रात का खाना भी खिलाया, और सोने के लिए अपना एक तम्बू द दिया।

रात किसी तरह गुजर गई, क्योकि डेरे वालो के कम्बलो म पिस्सू पडे हुए थे, जो रात भर उन्ह काटते रहे। पर सुबह वह बदन खुजलाते हुए

जल्दी से अगल रास्ते पर चल दिए।

अगला रास्ता बहुत बीरान था। सिफ दोपहर के वक्त उन्हें एक तबू दिखाई दिया, जिसके नज़दीक भेड बकरिया चर रही थी। वह तबू के पास पहुचे तो अधेड उम्र की एक औरत तबू मे से बाहर आई, जिसन उन्हें दूध का प्याला भी दिया, और तबू मे बठकर आराम करन के लिए भी कहा।

वह तम्बू मे कुछ देर ही बैठे थे कि मदन का हमउम्र पर कुछ छोट कद का एक लडका आया, जिससे वाकिफ करवाते हुए उस औरत ने बताया कि उसका बेटा मोहम्मद है।

मोहम्मद का लहजा दोस्ताना था, इसलिए सफ्दर ने उससे पूछा—माहम्मद, तुम जानते हो कि अफगान सरहद की फौजी चौकी यहा से कितनी दूर है ?

'बहुत नजदीक' मोहम्मद न कहा 'मुश्किल स दो दिन लगेंगे वहा पहुचने मे'

'तुम कभी वहा गए हो ?' सफ्दर ने पूछा तो वह जल्दी से बोला—'कई बार'

सफ्दर कहने लगा—'मैं और मेरा छोटा भाई, हम दानो हैरात सरकार के खास मौलाना हैं। हाकिम साहब सरहदी चौकी का मुआयना करने आए हुए हैं, पर बदकिस्मती स वह सवारी हमसे छूट गई, जिसम हमे आना था। हम डर है कि हम रास्ता ही न भूल जाए, हम तुम्हारे बहुत मशकूर होंगे अगर तुम हमारे साथ चलकर राह दिखा दो। इस मदद के लिए हम तुम्हे तुम्हारा हक देंगे।'

मोहम्मद तयार हो गया, पर जब मा के साथ सलाह करन लगा तो मदन और सफ्दर तबू म से बाहर आ गए। मदन ने कहा यह झूठ क्या बोल दिया ?' तो सफ्दर कहन लगा 'हम रास्ता दिखान के लिए कोई चाहिए था। चौकी के नज़दीक पहुचकर कोई और बात बनाऊँगा, कि वह हैरात सरकार वाली बात भूलकर हम सरहद पार करन का राह बताए। वह इस इलाके का वाकिफ है। पर अभी उसकी मा के सामने म और कुछ नही बताना चाहता।'

मोहम्मद उनके साथ जान के लिए तयार हो गया। यह कोई दोपहर

दा बजे का वक्त था, और रात होने तक काफी सफर तय हो सकता था। अगला रास्ता चढाई का था। उस टीले की दो घंटे की लगातार चढाई के बाद मदन और सफदर इतने थक गए कि उन्होंने मोहम्मद से सुस्ताने के लिए कहा। पर मोहम्मद ने आसमान की ओर देखते हुए कहा कि रात को आसमान से बहुत बर्फबारी होगी, इसलिए किसी उस जगह पर पहुंचना जरूरी है जहा रात गुजारने के लिए कोई आसरा हो।

बर्फबारी के खौफ ने दोनो को नया हौसला दे दिया, और वह टीले के दूसरी तरफ सूरज डूबने तक पहुच गए। वहा तीनो ने नमाज अदा की, और बीस मिनट के सफर के बाद एक गाव मे पहुच गए। उनकी लम्बी दाढियो और हाथ की तसबियो ने गाव की मस्जिद मे उनके लिए इज्जत अफजाई का बन्दोबस्त कर दिया। वहा उन्हें गम नान और शोरबा पेश किया गया। उस रास्ते से कभी-कभार ही कोई मुसाफिर गुजरता था, इस लिए गाव वालो के लिए दो मौलानो का उनके गाव मे आना बहुत खुशी की बात है।

कुछ मुश्किल भी पेश आई, जब गाव वाले हजरत मोहम्मद साहब की तालीम के बारे मे कुछ सुनने के लिए मस्जिद मे आ बैठे। सफदर को कुरान का इल्म ज्यादा नही था, पर उसके पास बातो का ऐसा लहजा था कि गाव वाले बड़ी तसल्ली से उसकी नसीहतें सुनते रहे।

सुबह उठकर जब दोनो ने पीछे दूर छूट गए टीले की ओर देखा तो वह सचमुच बर्फ से लदा हुआ था। उस वक्त दोनो को एहसास हुआ कि मोहम्मद ने रात की बर्फबारी से उन्हें बचाकर उनकी जान सलामत रखी है।

अगले सफर की नमाज के बाद सफदरने मोहम्मद से कहा 'तुम दोस्त-नवाज आदमी हो काबिले एतबार, इसलिए आज तुम्हें सच्ची बात बताता हूं कि हम दोनो भाई सावियत रूस मे जाना चाहते हं, 1977 के इन्कलाब के वक्त हमारे बाप दादा वही स जान बचाकर आए थे और अपना सारा सोना और कीमती चीजे वही गाड आए थे, और हम वही सोना लेने जा रहे है। अगर तुम हमें सरहद पार करने का रास्ता बता दो, हम आते वक्त तुम्हें बहुत-सा सोना दे जाएंगे।'

मोहम्मद की आखें सोने की कल्पना से चमकने लगी, और वह उनकी मदद करने के लिए तयार हो गया।

दिन के थका देने वाले सफर के बाद वह एक उस गाव में पहुच गए, जहा मोहम्मद का एक दोस्त रहता था। वह दोनो को अपने दोस्त के घर म ल गया, जहा उन्हे गम राटी भी मिली और रात का ठिकाना भी।

मोहम्मद का वह दास्त चोर बाजारी का धधा करता था, जिसने बताया कि वह कई बार सरहद चीरकर रूस मे जाता है जहा तरह-तरह की चीजें बचकर वह बहुत सा मुनाफा कमा लेता है।

मदन के हाथ म पकडा हुआ रोटी का निवाला उसके लिए जहर हो गया। उसे लगा कि मोहम्मद का वह दोस्त सरासर झूठ बोल रहा है, और अपनी मक्कारी से सोवियत रूस के सिर पर इस तरह का इल्जाम लगा रहा है।

रात को मदन और सफदर एक कमरे मे थे, और मोहम्मद और उसका दोस्त दूसरे कमरे मे। सफदर का नीद आ गई, पर मदन के मन में हलचल थी, उसे नीद नही आ रही थी। रात का सन्नाटा इस कद्र था, कि पतली-सी दीवार के उस पार से मोहम्मद की और उसके दोस्त की आवाजें उसके काना मे पडने लगी। दोना फारसी म बातें कर रहे थे, जो मदन ने स्कूल म पढी थी, और अफगानिस्तान मे रहते हुए उसके लिए सरल हो गई थी। मदन ने अच्छी तरह कान लगाकर सुना कि मोहम्मद का दोस्त उन दोना का मारकर उनका पैसा लटने की बात मोहम्मद को सुना रहा है, और मोहम्मद बार-बार उन्हे मुल्ला कहकर, उनके कत्ल को गुनाह कह रहा है।

मदन ने जल्दी से पर धीरे से सफदर को जगाया, और उसके कान मे सारी बात बताई। दोना की जान खतरे मे थी, इसलिए दोना ने अपने हाथा, जितना भी पसा उनके पास बचा हुआ था, वह देकर, अपनी जान बचाने की तज्वीज सोची।

मदन हाजत के बहाने कमरे मे से बाहर निकल गया, और कुछ मिनटा के बाद वह वापस लौटते हुए मेजबान वाले कमरे के आगे जा खडा हुआ। कहने लगा—आप अभी तक जाग रहे है ? क्या बातें हो रही हैं ?

उस वक्त मोहम्मद ने हलीमी से कहा—'आजतक मेरे दास्त को पैसे की किल्लत आई हुई ह, वह बडे फिक्र म है, इसलिए उसके साथ वही बातें कर रहा था।'

मदन ने जल्दी से कहा—'वह मेहरबान आदमी है, इस वक्त हमारे पास जितने भी पैसे है, हम उसे देन के लिए तैयार हैं।' और मदन ने सफदर को आवाज देकर बुलाया, कहा—'भाई जान ! हमारा मेजबान कुछ मुश्किल म है, आप कुछ पैसा की मदद जरूर करें।'

उस वक्त सफदर ने हामी भरी— हमे ना कल वहा पहुच जाना है, जहा हमारी बहुत सी दौलत पडी है, सो जितन भी पैसे हमारे पास ह, हम सब दे सक्ते है। बल्कि लौटते हुए और भी दे जाएगे।

उन दोना के पास काई चार सौ रुपये बचे हुए थे, जो उन्होने बटुए को उलटा कर 'मेज़बान' के सामने रख दिए। इस पर मेजबान' ने उनका शुक्रिया अदा किया, और कहा कि रास्ते मे उन्ह कुछ जरूरत होगी, इस-लिए कुछ रुपये वह अपन पास रख ले। फिर हो सके तो लौटते वक्त उसकी कुछ और मदद कर जाए।

मदन न मुस्कराकर उन रुपयो मे से दस का एक नोट उठा लिया, और उसे यकीन दिलाया कि वह लौटते हुए भी रात को उसी के घर मे ठहरेंगे।

सुबह होत ही, रात को जान बच जाने की खैर मनाकर, वह दोना मोहम्मद को साथ लेकर आगे चल दिए, और दिन ढलन तक परवाना नाम के गाव के नज़दीक पहुच गए, जो बिल्कुल अफगानिस्तान और सोवियत रूस की हद पर था।

यहा स मोहम्मद का पीछे लौट जाना था, पर रात को उसके सामने मदन और सफदर ने अपना बटुआ उलटा कर सार पसे उसक दास्त का दे दिए थे, इसलिए मोहम्मद जानता था कि अब उनके पास काई पैसा नही था। उसने इसरार किया कि वह उनके साथ सावियत रूस मे जाएगा। मदन और सफदर को इस पर एतराज नही था। इसीलिए माहम्मद अभी भी उनके साथ था।

तारा से भरी रात भी उतर आई थी, जिस वक्त मदन और सफदर

न उस नदी म पाव रखा, जिसके उस पार उनके सपना ने देश था।

ठडे पानी की कपकपी उनकी रगो म उतरती रही, पर मदन को लगा—इस पानी की आवाज इलाही सुरा म उन्हे खुशामदीद कह रही है

12

3 फरवरी 1941 का दिन था

मदन न नदी के पानी म सुन हो चुके, कापते हुए पाव जब दूसरे किनारे पर रखे, पावो के नीचे पहले किनारे जैसी ही रेत और मिट्टी थी, पर मदन को लगा—जैसे उसन सितारो पर पाव रखे हो

सफदर ने देखा कि परे कुछ दूर सूखे घास फूस का एक ढेर सा पडा है उसने जेब म से माचिस की डिबिया निकाल कर उसे जलाया और सुन हो चुके हाथ-पाव सेंकने लगा

मदन न भी उस धूनी पर हाथ सेंके, पर उस पर वजद तारी हो गया था, उसन दोनो बाहे फैलाकर ऊँची आवाज म हूक लगाई—'हाजी लोक मक्के नू जावा असा तख्त हजारे '

सफदर ने उठकर मदन को गले से लगा लिया और धीरे से कहा 'यार ! तख्त हजारे म तो पहुच ही गये हैं, पर अभी इतनी ऊँची आवाज में न गाओ, अफगान हद से जरा दूर तो चले जाएँ '

मदन हसकर उसके साथ आगे चल दिया, पर अपना और सफदर का मौलानाओ वाला वेष अब उसे सजीदा मुह बनाकर चलने की बजाय हसा रहा था। धीमी आवाज़ म वह सफदर से कहन लगा—देखो ! राँझा जोगीडा बण आया '

चार दिन पहले जो नामुमकिन सा था, इस वक्त मुमकिन हो गया था इसलिए मदन की आखो मे खुशी का पानी भर आया। और वह झूम कर कहने लगा—'इस जोगी दी की वे निशानी, 'हत्थ विच्च तसबी अक्ख विच्च पाणी '

कुछ दूरी के बाद ऊचे ऊचे टीला जैसी चढाई आ गई, और फिर उन्ही टीला की उतराई। और घटा भर समतल जमीन पर चलने के बाद जब परे एक छोटी-सी सफेद इमारत दिखाई दी, मोहम्मद ने कहा वह सोवियत रूस की फौजी चौकी है।

वह चौकी के पास से गुजरे तो एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आई, पर कोई आदमी चौकी से बाहर नही आया। इसलिए वह तीनो अपनी चाल चलते हुए चौकी से आगे गुजर गए।

अभी भी पौ नही फूटी थी। वह कोई मील भर चले होग कि अधेरे मे से एक गैबी आवाज आई—कडकती हुइ सी। सामने कोई नही दिखाई दिया पर वह चौंककर खडे हो गए। सफदर को रूसी जुबान आती थी, उसने मदन को बताया कि यह जो आवाज आई है, इसका मतलब है कि रुक जाओ, नही तो गोली चला देंगे।

'क्या मतलब ?' मदन ने हैरान होकर पूछा, और सफदर से कहा—'यार ! तुम्हे रूसी आती है, तुम ऊची आवाज मे बोलकर बताओ कि हम आए है।'

सफदर ने उस आवाज का जवाब दिया, जिसके जवाब मे फिर से कडकती हुई आवाज आई, और सफदर ने उसका मतलब बताया—'वह कहता है, खबरदार एक कदम नही उठाना, चुपचाप हथियार फेंक दो।'

मदन ने हैरान होकर अपनी जेब मे डाली हुई तसबी की ओर भी देखा, और सफदर के चोगे मे रखी हुई तसबी की कल्पना भी की। सफदर ने कहा—'यह तसबिया तो इस्लामी इलाको मे हमारे हथियार थी, पर यह यहा हथियार कैसे बन गइ ?

इतने म अधेरे मे से दो रायफलो वाले आदमी प्रकट हुए, जिन्हाने न पुलिस की वर्दी पहन रखी थी, न फौजी वर्दी। पर उनमे से एक ने सामने खडे होकर राइफल तान दी, और दूसरे ने उनके पीछे खडे होकर। और जब उन्हे तनी हुई राइफलो के बीच मे आगे चलने के लिए कहा गया, तो सफदर मदन से कहने लगा—'यह नजदीक के किसी कुलक्टिव फाम के आदमी लगते है, बेचारो को हमारे बारे मे गलतफहमी हुई है।'

जल्दी ही एक इमारत सामने दिखायी दी और वह राइफ्ला वाले उनको इमारत के भीतर एक छोटे से कमरे म ल गए। मदन न देखा कि एक सफेद दीवार पर बहुत बडी-सी स्तालिन की तस्वीर लगी हुई है, और दूसरी दीवारों पर छोटी छोटी, लेनिन, माक्स, वोरोशीलोव, मोलोतोव और कुछ दूसरे नेताओ की तस्वीरें लगी हुई हैं। और एक पुराने ढग के ग्रामोफोन पर एक रिकाड बज रहा है

सामने कुर्सी पर एक बहुत मोटा-सा आदमी बठा हुआ था, जिसने हाथ म एक गिलास पकडा हुआ था। मेज पर ही उसकी कोहनी के पास ही दो बोतल पडी हुई थी, जिनम से एक खाली थी और एक आधी भरी हुई। वही मेज के एक ओर एक प्लेट पडी थी जिसम दो चार पत्ते बद गोभी के, एक टुकडा खीरे का और एक खायी हुई मछली के कुछ काटे पडे हुए थे

एक राइफल वाले ने आगे बढकर उस कुर्सी वाले से कुछ कहा, पर उसने ग्रामोफोन बद करके जब मदन सफ्दर और मोहम्मद पर नज़र डाली, उसकी नज़र टिक नही पा रही थी। जिससे मदन न अनुमान लगाया कि वह बहुत नशे मे है।

उस वक्त सफ्दर ने उस अफ्सर को कुछ बताने की कोशिश की, पर उसने मेज पर मुक्का मारकर उसे चुप रहन के लिए कहा। सफ्दर फिर भी बताता रहा, ज़ाहिर था कि वह अफ्सर उसकी कोई बात नही सुन रहा था।

मोहम्मद ने आगे बढकर सफ्दर से कहा—'यह किस तरह के लोग हैं, हम इनके घर मे मेहमान आये हैं, यह हम न चाय-पानी पूछत हैं, न बठने के लिए कहते है

सफ्दर ने मोहम्मद की बात रूसी अफ्सर को बताई, और वह जो कुछ बोला, सफ्दर ने तर्जुमा करके मोहम्मद को बताया—'वह कह रहे हैं कि हम बरतानवी जासूसो को चाय नही पिलाते।'

इतन म वर्दी वाले और बन्दूको वाले दो आदमी कमरे मे आ गए। मदन न बाहर सडक पर किसी गाडी के खडे होने की आवाज़ सुनी। और उस अफ्सर के कहने पर वह वर्दी वाले तीनो को बाहर ले गए।

बाहर एक ट्रक खडा हुआ था, जिसम तीना को बैठने के लिए कहा गया। ट्रक मे कोई सीट नही थी, इसलिए तीनो ट्रक मे नीचे बैठ गए।

"यह हमे कहा ले जा रहे हैं ?" मदन ने पूछा, पर इसका जवाब मदन की तरह सफदर का भी नहीं मालूम था।

चलत हुए ट्रक म बैठा हुआ मदा सोच मे पड गया कि यह कुलैक्टिव फाम वाले भला हमे जासूस क्यो समझ बैठे है ! ठीक है, हमारे पास राहदारी के कागज नही ह, पर सफदर न बता जा दिया है कि किन हालता मे हम अग्रेज सरकार से बचत बचाते आए हैं। फिर वह हमारे साथ इस तरह बदसलूकी से क्यो पेश आ रहे हैं ?

एक घट से ज्यादा की दूरी के बाद वह शहर के फौजी महक्मे म पहुचे, जिसका नाम कूशका था। यह एक नीची छत वाली लम्बी सी इमारत थी, जैसे घोडो का अस्तबल हा। उसके दरवाजे मे से गुजरते हुए मदन को सचमुच अस्तबल जैसी तीखी गध आई। मदन और सफदर आगे-आगे थे, मोहम्मद उनके पीछे था, पर मदन और सफदर जब अदर दाखिल हुए, मोहम्मद को बाहर ही रोक लिया गया। और मदन न जब पीछे मुडकर देखा, पिछला दरवाजा बद हो चुका था

पैरा के नीचे सीमेट का फश था, पर गीला और बहुत ठडा। मदन ने घबराकर सफदर की ओर देखा, तो सफदर कहने लगा—"यह कोई मूख लगते हैं, पर मूख लोग दुनिया मे हर जगह होते है। हमारी बदकिस्मती यह है कि आते ही मूर्खों के साथ पाला पड गया। कल जब उनको अपनी गलती का पता लगेगा, हम भी पेट भरकर आज के दिन पर हसेंगे "

मदन और सफदर इतने लम्बे रास्ते से, और सारी रात के जगराते से इतने थके हुए थे, कि जो ओवरकोट उन्हान पहने हुए थे, उन्ही म ही गुच्छा-गुच्छा होकर नगे फश पर सो गए।

वह घटा भर सोचे हांगे, कि दरवाजा खुलने की आवाज आई। एक आदमी हाथ म पिस्तौल लिए भीतर आया, जिसने कडी आवाज मे कुछ कहा। जवाब मे सफदर न कुछ कहा, पर वह उसी तरह कडी आवाज म कुछ कह बाहर चला गया। दरवाजे की आवाज ऐसे आई कि उस चाबी से ताला लगा दिया गया हा।

सफदर ने बताया—'मैंने उसे कहा था कि हमें गलती से आपने पकड़ लिया है। यह मेरा साथी हिन्दुस्तान का क्रांतिकारी है, जो बहुत उम्मीदें लेकर सोवियत रूस में आया है और इस तरह के सलूक से उसका सारा सपना टूट जाएगा, और सफदर ने गहरा सांस लेकर कहा 'पर यह फौजी लोग दुनिया में हर जगह एक से होते हैं अपने दिमाग से कुछ सोचते ही नहीं सिर्फ इतना पता चला है कि उन्होंने मोहम्मद को भी एक कोठरी में डाल दिया है'

कोई एक घंटे बाद दरवाजा फिर खुला, इस बार दो हथियारबंद फौजी सिपाही आए, जिनके साथ मोहम्मद भी था। और वह तीनों को बाहर के लम्बे बरामदे में से गुजार कर, उसके साथ लगती एक मंजिला इमारत में ले गए, जहां और भी हथियारबंद फौजी सिपाही थे। और उन्होंने तीनों को एक कतार में खड़ा करके, सारे कपड़े उतारने के लिए कहा

गुस्से और शर्म से कपड़ों के बटन खोलते हुए मदन के हाथ कांपने लगे

जिसका जो भी कपड़ा उतारता था, एक संतरी उसके हाथ से छीन लेता और उसे उलटा करके उसकी सिलाइयां तक टटोल कर परे रख देता।

उस दिन मदन को पता नहीं चला, पर उसने अपनी तसबी को, छोटे से चाकू को, और दस के नोट को आखिरी बार देखा था

उतारे हुए कपड़े पहनने से पहले उनका अंग-अंग भी टटोला गया। मुंह खुलवाकर—उंगलियों से जीभ के भीतर तक भी, कानों के सुराखों तक भी और घुटनों के बल औंधे करवा कर टांगों के पिछले हिस्से तक भी

उसके बाद मदन और सफदर को एक नयी कोठरी में बंद कर दिया। यह कोठरी उस अस्तबल के मुकाबले में 'आलीशान' लगती थी क्योंकि इसमें दो चारपाइयां भी थीं, चारपाइयों पर मोटी चटाइयां भी, और कोठरी के एक कोने में लोहे का स्टोव और लोहे की चाय दानी भी थी। उसके पास एक छोटे से मेज पर दो मग थे। साथ डबल रोटी के टुकड़े,

मछली का डिब्बा और दो सेब।

सपनो वाले देश का पहला अन्न था, जो मदन और सफदर न मुह से लगाया। और मदन की आखो म पानी भर आया

आज की सुबह जब होने को थी, मदन ने इस जमीन पर पहला कदम रखते हुए अपनी आखो मे पानी आ गया देखा था, और अब जब सुबह हो चुकी थी, उसकी आखा मे फिर पानी भर आया था। 'पर यह पानी का कैसा अतर है ?'—मदन ने अपने आपसे पूछा, और यह अतर खोजने के लिए दोनो आखे मूदकर चारपाई पर निढाल-सा होकर बैठ गया।

आदर और निरादर के बीच के फासले को नापत हुए मदन थककर सो गया था, जब जागा तो देखा सफदर भी बेकरार होकर कोठरी मे एक दीवार से दूसरी दीवार तक चलता हुआ, दीवारो का और आजादी का फासला नाप रहा था

मदन को जागता देखकर सफदर ने कहा कि सतरी शाम की रोटी रख गया है। पर इस रोटी की भूख मदन के भीतर जैसे मर गई थी, कहने लगा—"पहले यह जिल्लत गले स नीचे उतार ल, फिर रोटी खा लूगा, अभी ता गले से नहीं उतरती। तुम क्या सोचते हो ?'

'मैं इस सलूक का कारण ढूढने की कोशिश कर रहा हू, पर कोई तुक और तक नही मिल रहा।' सफदर ने कहा, और साथ ही कहन लगा—"इलाके के अफसर हमे समझ नही पा रहे। शायद उनका कसूर नही, क्यो कि हमारे पास न पासपोर्ट है, न वीजा। पर अफसरो को हमारी इत्तलाह कर दें, वह सभी मुझे जानते हैं। जब उनसे हुक्म मिलेगा तो यह बेचारे पछतायेंगे।'

मदन उसकी बात से सहमत हुआ, पर कहने लगा—'तो भी इन्हे हमारे साथ ऐसा नही करना चाहिए था। आखिर हमारे कसूरवार होन का इनके पास कोई सबूत नही था। इनको हमारे मास का इच इच टटोलने का क्या हक था ? अगर मुझे रूसी जुबान आती, तो मैं इन लोगा को खरी-खरी सुनाता '

सफदर ने मदन के कन्धे पर हाथ रखकर दिलासा दी 'वह तो जो तुम कहना चाहो, मैं उसे रूसी म बोलता जाऊगा, पर मुझे एक ही अफसोस है

कि आते ही तुम्हारे मन पर इसका कैसा असर पड गया '

दाना के लिए जब सतरी ने चाय दी, भले ही चाय दूध के बगर थी और बदमजा भी, तो भी उसके गम घूट न उनके अदर कुछ गर्मायश डाली। काली डबल रोटी के कुछ निवाले भी उन्होने चाय के साथ निगल लिए और सो गए।

मदन सो रहा था, जब सफदर न उसे झकझोर कर जगाया, और मदन ने देखा कि सफदर का मुह उतरा हुआ है।

कोठरी से बाहर के बरामदे मे से फौजी बूटा की आवाज़ आ रही थी। सफदर ने कहा, 'पक्का नही कह सकता पर लगता है वह हमे शूट कर देंगे।'

'क्या ?' मदन का मुह एक बार खुला, और फिर कोठरी के दरवाजे की तरह बद हो गया।

सफदर कहन लगा—'अभी तो कुछ मिनट पहले हमारी कोठरी म डाक्टर आया था, कहने लगा कि जान क लिए तैयार हो जाआ ! यहा इसी तरह जब आधी रात को डाक्टर आता है, ता उसका मतलब हाता है कि कैदियो को मार दिया जाएगा।' और सफदर की आवाज़ हकला-सी गई मे मे मेरा खयाल है कि अभी हम फायरिंग स्क्वैड के आगे ले जाएग बाहर फौज का दस्ता आ गया लगता है।'

मदन ने पहली बार सफदर को इस तरह घबराते हुए दखा, तो उसके भीतर अपन हिन्दू सस्कार जाग उठे। कहन लगा—'मौत से सिर्फ शरीर का चोला बदलता है। अच्छी बात है फिर नया चाला पहनकर दुनिया मे आ जाएगे। आत्मा ता अमर होती है '

मदन शायद कितनी देर तक जिंदगी और मौत के फलसफे पर कुछ कहता पर उसी वक्त कोठरी का दरवाजा खुलन की आवाज आई। साथ ही चार हथियारबद फौजी सिपाही भीतर आ गए। उनमे से दो न मदन और सफदर की बाह खीचकर, कोठरी से बाहर उनको एक ट्रक मे बिठा दिया। यहा ट्रक मे माहम्मद का भी बिठा रखा था। गिर्द बीस हथियार बद फौजी खडे हा गए।

और मदन ने देखा तीन ट्रक थे, हथियार बद फौजिया से भरे हुए,

जो उनक टक के दायें-बाये और पीछे की ओर खडे थे । उन तीनो ट्रको मे मशीनगन ठुकी हुई थी, सिफ उनमे घिरा हुआ, मदन, सफदर और मोहम्मद वाला एक ही ट्रक था, जा अधेरे से भरा हुआ था, और फिर एक सीटी की आवाज पर चारो ट्रक चलने लगे—पता नही किस ओर।

कोई आध घटे बाद ट्रक खडे हा गए, और उन तीनो को ट्रक म से उतरन के लिए कहा गया। मदन न देखा—सामने गाडी के एक स्टेशन का प्लेटफाम है, और लाइन पर एक गाडी खडी है। मदन और सफदर को जब गाडी के एक खाली डिब्बे मे चढाया गया, तो पचास से भी अधिक हथियार वद फौजी उस डिब्बे मे आकर उनके गिद बैठ गए। और मदन ने देखा कि वह मोहम्मद को किसी अगले डिब्बे मे बिठाने के लिए ले गए ह।

पहर रात रहते यह गाडी चली थी, और दोपहर हो गई थी, जब वह एक स्टेशन पर रुकी, जहा उन्ह खाने के लिए कुछ दिया गया। सफदर ने खिडकी मे से दिखत स्टेशन का नाम पढा—तख्ता बाज़ार।

फिर शाम तक वह गाडी कही नही रुकी। शाम के वक्त जिस स्टेशन पर उन्ह उतारा गया, उसका नाम 'मारी' था। और यहा से उन्ह शहर के थाने म ले जाया गया। उस थाने म मदन और सफदर को एक ही कोठरी मे रखा गया, और मोहम्मद को दूसरी अलग कोठरी मे।

यह कोठरिया बहुत गन्दी थी। पर मुश्किल स रात गुजारी थी कि उनको हाजत के लिए बाहर ले जाकर, चार हथियार वद फौजियो की निगरानी मे एक और गाडी मे बिठा दिया गया। अब मोहम्मद उनके साथ नही था। दोपहर होने के बाद उनको जिस स्टेशन पर उतारा गया, वह शहर अश्काबाद का स्टेशन था, तुकमानिया की राजधानी। शहर की जिस इमारत म उनको ले जाया गया, सफदर ने उसका नाम पढा—**NKVD** और मदन को बताया कि वह मिनिस्ट्री आफ इटरनल अफेयज़ की इमारत है।

वह चार हथियार वद फौजियो की निगरानी मे एक लम्बे बरामदे मे से गुजर रह थे कि एक फौजी सफदर की बाह पकडकर एक ओर ले

गया। यह बात इतनी अचानक हुई कि मदन और सफदर को आपस मे एक भी बात करने का मौका नही मिल पाया।

299
87

13

अब मदन अकेला रह गया था

जिस कोठरी मे मदन को बद किया गया, वह बहुत छोटी थी, मुश्किल से एक अलमारी जितनी। छत इतनी नीची थी कि अगर वह सीधा होकर खडा हो, तो उसका सिर छत से टकरा जाता था। उसे रूसी जुबान नही आती थी, इसलिए सिफ कुछ इशारे ही उसकी जुबान बनकर रह गए थे। और फिर जब उसकी कोठरी बद कर दी गई, क्योकि भीतर कोई रोशनी नही थी, मदन को लगा—वह किसी खाई में पड गया है

पता नही, कब, एक सतरी आया, जिसने मदन को इशारो से समझाया कि वह सारे कपडे उतार दे। उसने साबुन का एक टुकडा भी पकडाया, जिससे मदन समझ गया कि उसे गुसल के लिए वहा जा रहा है। कोठरी के बाहर एक गुसलखाना था, जहा सतरी के इशारे पर, उसने जाकर देखा कि गरम पानी रखा हुआ है। यह पहला गुसल था, जो मदन को पहला इसानी बरताव लगा।

इसके बाद मदन की कोठरी बदल दी गई। उस नई कोठरी में दो चारपाइया भी थी, चटाइया भी थी। एक चारपाई पर कोई सो रहा था, पता नही कौन, मदन चुपचाप दूसरी चारपाई पर लेट गया, और ऊघती हुई आखो से सफदर का तसव्वुर करने लगा कि उसे रूसी जुबान आती है, अब तक शायद उसने इस मिनिस्ट्री के अफसरो के साथ कोई बातचीत कर ली होगी, और सुबह शायद

इस 'शायद' लफ्ज ने मदन की आखो मे नीद भर दी। रात की पूरी नीद लेकर जब वह सुबह जागा, देखा कि उसकी कोठरी का दूसरा साथी बद पिजरे के शेर की तरह कोठरी म टहल रहा है।

मदन को जागता हुआ देखकर उस आदमी ने फारसी मे पूछा—'तुम

कहा से आए हो ?' मदन का फारसी आती थी, इसलिए बता सका—'हिंदुस्तान मे।' वह आदमी अपनी चारपाई पर बैठते हुए कहने लगा 'मैं ईरान से हू, हुसैन, एक चरवाहा'—और उसने अपनी आपबीती सुनाई कि रूस और ईरान की सरहद पर वह अपने इलाके म भेडें चरा रहा था, कि कुछ भेडे चरती-चरती परे चली गइ, रूस वाली हद मे। वह भेडा को लौटाने के लिए उनके पीछे गया था कि अचानक उसे सरहदी फौजियो ने पकड लिया कि वह जासूस है

मदन और हुसैन को एक तसल्ली हुई कि वह आपस म बात कर सकते हैं। एक सतरी को भी टूटी फूटी फारसी आती थी, जिसे कभी कभी मदन पूछ बैठता कि उसकी सुनवाई कब होगी, पर वह कधे झटककर चुप रह जाता। इस तरह कोई हफ्ता गुजर गया तो मदन को एक अफसर के आगे पेश किया गया, जिसने उसका नाम पता और उम्र अपने कागज़ो पर दर्ज करके, टूटी फूटी फारसी मे पूछा 'तुम हरदत्त बरतानिया के जासूस' हो ?' उस वक्त मदन मोहन हरदत्त न चीखकर बताया 'मैं सच्चा इन्कलाबी हू, किसी कीमत पर भी किसी का जासूस नही हो सकता। बरतानिया के साम्राज्य से अपन मुल्क का आज़ाद करान के लिए, मैं यहा सियासी अगवाई लेने के लिए आया हू। मैं और प्रोफेसर, सफदर अग्रेज़ो की पुलिस से भागकर यहा आए थे

अफसर ने ताडना की 'इस तरह ऊचा बोलने की ज़रूरत नही है। तुम झूठ बोलकर हमे नही बहका सकत। सारे सबूत मिल चुके है, अच्छा हो अगर तुम खुद ही हलफिया बयान दे दो '

हरदत्त गुस्से से चीख उठा ता सफदर न एक आदमी को बुलाकर उसे फिर से कोठरी मे बद करवा दिया। उस वक्त हरदत्त को एक ही खतरा महसूस हुआ कि मोहम्मद ने ज़रूर वही बयान दिया होगा कि रूस मे हमारा सोना गडा हुआ था, जिसे खोजने के लिए हम आए थे। और इस तरह मेरा और सफ्दर का बयान मोहम्मद से अलग हो गया होगा

आ खुदाया !—मदन निढाल-सा होकर चारपाई पर पड गया।

एक दिन दा सतरी उसे कोठरी मे से निकालकर बाहर लाए तो देखा बाहर काले रग की कितनी ही बद गाडिया खडी हुई थी, यह उसे बाद मे

पता लगा कि इन काली गाड़ियों को कैदियों की जुबान में 'कारली करान' कहा जाता था जिसका मतलब था 'पहाड़ी कौवे'। उस वक्त हरदत्त को एक कागज पकड़ाया गया, जिस पर '54' अंक पड़ा हुआ था। उसे कुछ समझ में नहीं आया, पर बाद में पता लगा कि पहली रात की तलाशी के वक्त जो उसका दस रुपये का एक नोट लिया गया था, उसके हिसाब में ये यह 54 कापिक्स बचते थे। इस नई काठरी में उसे उसी हिसाब में से एक मोटा पायजामा मिला था, कुछ पालतू रोटी और एक सेर शक्कर भी।

कैदियों की यह लारी जब स्टेशन पर पहुंची, तो उनको लारी में से निकालकर एक बंद गाड़ी में बिठा दिया गया। यह बंद गाड़ी भीतर से भी साह की जालियों से खानों में बटी हुई थी। कोई खाना अकेले कैदी के लिए था और कोई दो-दो तीन-तीन के बैठने के लिए। हर खाना बंद हो जाता था, पर उसकी एक छोटी-सी खिड़की थी—कैदी को रोटी देने के लिए। यह खाने गाड़ी में एक ओर थे, और उनके सामने छोटे से गलियारे की जगह थी, जहां पिस्तौल लिए एक पहरेदार घूमता रहता था।

गाड़ी के एक सिरे पर पाखाना बना हुआ था, और दूसरे सिरे पर पहरेदारों के बैठने की जगह बनी हुई थी। पूरे दिन के बाद रात को यह बंद गाड़ी एक ट्रेन के साथ जोड़ दी गई, जो सात दिन तक चलती ट्रेन के साथ जुड़ी रही।

सात दिन के बाद एक जगह यह बंद गाड़ी ट्रेन से अलग कर दी गई, और हरदत्त ने देखा—अब सामने फिर वही 'पहाड़ी कौवे' लारियां खड़ी हुई थीं। गाड़ी वाले पिंजरे में से निकालकर उसे और कैदियों समेत लारी में बिठाया गया। वह लारी जब एक बड़ी-सी इमारत के सामने रुकी, तो इमारत के भीतर जाते हुए उसने देखा—वह बड़ी साफ-सुथरी इमारत है। उसे लगा—जैसे वह एक अस्पताल हो।

वहां एक कमरे में फिर तलाशी ली गई, और उसके बाद उसे टाइलों वाले बड़े साफ-सुथरे गुसलखाने में भेज दिया गया, जहां उसने बहुत गर्म पानी में पिछले सात दिनों की गन्ध, जितनी भर धोई जा सकती थी, धो डाली।

एक संतरी जब उसे एक कमरे की ओर ले जा रहा था, उसने बरामदे

मे लगी एक घडी देखी जिस पर, ग्यारह बजे हुए थे। अब जिस कमरे मे एक उसे बद किया गया, वहा चार चारपाइया बिछी हुई थी, जिनमे से सिर्फ एक खाली थी, उसके लिए। कमरे मे नीले रग का बल्ब जल रहा था, जिसकी रोशनी से ओट करने के लिए बाकी तीनो कैदियो ने आखो पर तौलिए रखे हुए थे। सतरी जब कमरे का बद करके चला गया, तो एक ने आखो से तौलिया हटाकर मदन से अग्रेजी मे पूछा—'तुम भी किसी दूसरे देश के हो ?'

हा, मैं हिन्दुस्तानी हू। यह अस्पताल है ?' हरदत्त ने उससे पूछा, तो वह आदमी मुस्करा दिया 'नही यह मास्को की जेल है, लुबियानका। पर अब चुपचाप सो जाओ, दस बजे के बाद बातें करने की इजाजत नही है। सुबह बातें करेंगे।'

'ओ खुदाया ! यह मास्को है ?'—और माथे मे पडे हुए मास्को के सपने बेचैनी मे करवटें लेने लगे।

फिर धीरे धीरे उसने अपना ओवरकोट उतारा, सिर की पगडी उतारी और पैरो की चप्पल उतारी और चारपाई पर कबल तानकर लेट गया। उस वक्त दरवाजे के पास खडा हुआ सतरी अन्दर आया और मदन की दोनो बाहे कबल से बाहर निकालकर, दोनो हाथ उसकी छाती पर इस तरह रख दिए, जैसे वह हाथ प्रार्थना मे जुडे हो। उस वक्त मदन ने बाकी तीनो की ओर देखा—वह भी उसी तरह हाथ जोडकर लेट हुए थे।

सुबह जब उसकी आख खुली, देखा इस कमरे के एक ओर बडा-सा मेज था, जिस पर कुछ किताबें भी थी और शतरज भी। एक ओर लोहे के ढक्कन वाला कमोड था, जो रोज सुबह बाहर जाकर खाली करना होता था क्या यही मास्को था ? उसका मक्का ? हरदत्त की छाती मे एक हौल-सा उठा, पर साथ ही तस्कीन भी मिली कि यहा उसे सफदर भी मिलेगा, और सफदर के दोस्त—अफसर भी, जो इस भयानक गलती से पछता जाएगे, और उसे लिपटकर कहेगे 'तुम तो सच्चे इन्कलाबी हो, हमारे वफादार दोस्त '

और उसकी ख्याली तस्वीर मे और रग भर उठा, जब नाश्ते के लिए उसे सफेद डबलरोटी और बहुत-सी चीनी मिली। पर जब कोठरी का वह

साथी जिसने रात को उसके साथ अंग्रेज़ी में बात की थी हँसकर कहने ल
'तुम शायद जल्दी आज़ाद हो जाओगे, अगर तुमने इन लोगों का जासू
बनना मान लिया, तो हरदत्त के खयाली तस्वीर के रंग धुल गए। कह
लगा—"मैं उन्हें बता चुका हूँ कि न मैं अंग्रेज़ों का जासूस हूँ, न किसी औ
का बन सकता हूँ। मैं अपने मुल्क की आज़ादी के लिए यहाँ सिर्फ सियास
अगवाई लेने के लिए आया हूँ।'

उस वक्त उसकी कोठरी के साथी ने अपना तआरुफ कराया। व
आदमी लुडविग स्पैंगा था, पोलैंड की डिपलामैटिक सर्विस में। जब र
और जर्मनी ने पोलैंड का बटवारा किया, उस वक्त वह वारसा में था। उ
वक्त पोलैंड के सरकारी तबके की पकड़ा धकड़ी शुरू हो गई थी, औ
स्पैंगा तब से यहाँ से लुबियानका में कैद था

कमरे के बाकी दो साथी अंग्रेज़ी नहीं जानते थे, इसलिए स्पैंगा
उनकी वाकिफी मदन के साथ करवाई। उनमें से एक निकिता सिदेरेनव
था, स्पैंगा से कोई दस बरस छोटी उम्र का पच्छिमी युक्रेन का एक इंज
नियर था। और स्पैंगा ने बताया कि जब पच्छिमी युक्रेन के हज़ारों लो
पकड़े गए वह भी उनमें से एक था। वहाँ एक नेशनल मूवमैंट बहु
ताकतवर थी और शायद निकिता उसका मैंबर था, पर वह किसी के सा
बातचीत नहीं करता था इसलिए उसके बारे में स्पैंगा को भी इतना भ
ही मालूम था और दूसरा—तकरीबन पतीस बरस का इस्साक जेलैंसके
मास्को का एक कम्युनिस्ट यहूदी था जो इसलिए पकड़ा गया कि व
ट्रौटस्की-पक्ष का था, और—स्पैंगा ने मदन को बताया 'ट्रौटस्की-पक्ष के
लोगों को मौजूदा स्तालिन सरकार ने अपना दुश्मन मान लिया है। व
क्योंकि सरकार के दुश्मन हैं, इसलिए लोगों के दुश्मन हैं। औ
साथ ही स्पैंगा ने बताया कि इस्साक, स्तालिन को 'इंटरनैशनल गैंगस्टर
समझता है।

हरदत्त का बहुत मन किया इस्साक के साथ बातें करने के लिए।
उसने थोड़ी-सी रूसी इन दिनों में सीख ली थी पर वह रोटी, चीनी, चाय,
पानी और गुसल जैसे लफ्ज़ों तक ही महदूद थी

यहाँ रोज़मर्रा ठीक छह बजे सुबह उठना होता था, और बारी-बारी

से कमरे को साफ करना होता था। फिर गुसलखाने मे जाकर, हाथ मुह धोकर, वह वापस अपनी चारपाइयो पर बैठ सकते थे, पर लेट नही सकते थे। बाते कर सकते थे, कमरे मे रखी किताबे पढ सकते थे, या शतरज खेल सकते थे। बीस मिनट के लिए उन्ह छत पर ले जाकर हवाखोरी करवाई जाती थी। और हर दस दिनो के बाद उनके बाल कटवाकर, गरम पानी का गुसल देकर, कपडे बदलवाए जाते थे। उनमे से सिर्फ जेलसकी था जो स्टोर मे से कुछ चीज़ें खरीद सकता था, इसलिए वह कई बार स्पैंगा को सिग्रेट खरीद देता था।

धीरे-धीरे हरदत्त ने इस कमरे की सियासत को भी पहचाना—स्पगा को जेलसकी पसद नही था, उसकी नज़र म बालशविक्स, मनशविक्स, और ट्रौटस्कीज सभी एक से थे। वह बहस करता और कहता 'डिक्टेटरशिप इसा आइडियालोजी को विरासत मे मिलती है। यह इल्ज़ाम सिर्फ स्तालिन पर क्यो ? ट्रौटस्की होता तो भी यही कुछ होता।'

स्पैंगा को शुबहा था कि ज़ेलसकी 'इन्फामर' है। वह मदन को बताता कि एक कमरे मे रखे जाने वाले कैदी बडी एहतियात से चुने जाते हैं। वह, जो हम-खयाल न हो। कमरे का सतरी उनके बीच होने वाली हर बात का ध्यान रखता है, और उसकी खबर 'ऊपर' भेजता है। उसी के मुताबिक कैदी को ज्यादा रोटी और सिग्रेट दिए जाते हैं, और उसकी सजा भी कम की जाती है।

पर हरदत्त के मन मे ज़ेलसकी के लिए काई भेद भाव नही आया। उसकी नज़र मे वह कामरेड था, इन्कलाबी था। ज़ेलसकी अग्रेजी सीखना चाहता था, और हरदत्त को रूसी ज़ुबान सीखने की ज़रूरत थी, इसलिए दोना एक दूसरे से यह ज़ुबाने सीखने लगे। स्पैंगा इस बात मे दानो की मदद करता रहा। कागज पैंसिल हाते तो सीखना आसान हो जाता। पर मुह ज़ुबानी याद करते हुए भी दोनो को धीरे धीरे यह ज़ुबानें समझ मे आन लगी।

स्पैंगा को यूरोप की सियासी हालत का खासा इल्म था। हरदत्त का भले ही कई बातो पर उसस इख्तलाफ था, पर वह स्पैंगा का बहुत आदर करता था। स्पैंगा कहता था कि हिटलर ने जो हथकडे पोलैंड के लिए बरते

हैं, वही एक दिन रूस के खिलाफ भी बरतेगा । हरदत्त का ख्याल था कि पोलड पर हिटलर के हमले का रूस जिम्मेदार नही है, यह बरतानिया और अमरीका ने पोलड से विश्वासघात किया है । पर तीन महीने बाद उसने जाना कि स्पैंगा सच कहता था, क्योकि तब रूस पर जमन हमले की खबर आ गई थी

महात्मा गाधी के बारे मे हरदत्त का कहना था कि अहिंसा से और शातिपूण विरोध से आजादी की जग नही लडी जा सकती। इस पर उसने पहली बार देखा कि हमेशा चुप रहने वाला सिदेरनको ताव मे आ गया, कहने लगा तुम देशभक्त कैसे हो सकते हो, जबकि तुम अपने आपको कम्यूनिस्ट समझते हो ? कम्यूनिस्ट की वफा अपनी नीति के साथ होती है, देश के साथ नही होती । मैंने भी अपने लोगो के लिए स्वतत्रता चाही थी, जिस तरह तुम अपने लोगो के लिए चाहते हो । मुझे बहुत कुछ देने की पेशकश की गई, इस शत पर कि मैं अपनी 'तग-नजर देश भक्ति' त्याग दू । मैं अपने लोगो की कीमत पर यह सौदा कभी नही कर सकता, इसी-लिए आवाम के बहिश्त मे मैं कैदी हू '

सिदेरैनको ताव खा जाने वाला आदमी था, इसलिए हरदत्त ने उसके साथ बहस नही की । यह बहस उसने अपने आप से की—'सिदेरैनको की वफा किन लोगो के साथ है ? अपनी श्रेणी के लोगो के साथ ? यह कामगरो और मजदूरो के साथ नही, उनकी स्वतत्रता के साथ नही '

इस तरह दो हफ्ते गुजरे थे, जब दो सतरी हरदत्त को कमरे से बाहर ले गए। एक जगह एक सतरी से दस्तखत करवाकर एक चिट दी गई । अब अगले बरामदे से बाहर परो के नीचे रबर का फश नही था वहा मोटे कालीन बिछे हुए थे । वहा एक कमरे मे हरदत्त को एक अफसर के आगे पेश किया गया । अफसर ने हरदत्त को कुर्सी पर बैठन के लिए कहकर कहा कि उसके मुकदमे की तफतीश उसके पास है । इतने म एक प्यारी-सी लडकी कमरे म आकर चाय, चीनी नीबू के टुकडे और सिके हुए टोस्ट दे गई । अफसर ने हरदत्त को चाय पीने के लिए कहा—तो इस दोस्ताना रवय्ये पर उसका जसे गला सूख गया

उसने चाय पी, पर उनके बीच बातचीत के लिए जो ताजिक दुभाषिया

बुलाया गया था, उसके द्वारा बातचीत मे इतनी मुश्किल पेश आई कि एक सन्तरी बुलाकर उसे फिर उसके कमरे म भेज दिया। पर उसे तसल्ली हुई कि आखिर सुनवाई होन लगी है, और वह भी दास्ताना रवैय्ये से। पर पाचवें दिन फिर जब उसे उस अफसर के आगे पेश किया गया, एक दुभाषिया औरत की हाजिरी मे, अफसर का लहजा ठडा और सख्त था। नाम, पता, उम्र वगैरा, विवरण कागज पर लिखने के बाद अफसर ने पूछा—'हरदत्त ! अब तुम समझ गए कि जासूस के तौर पर तुमने सोवियत रूस मे दाखिल होकर कितना सगीन जुर्म किया है ?'

'मैंने कोई जुर्म नही किया, क्योकि मैं जासूस नही हू' उसने भी सख्त लहजे मे जवाब दिया।

'फिर तुम यहा आए क्यो थे ?'

'मैंने अश्काबाद मे भी बताया था कि मैं सियासी अगवाई लेने के लिए आया हू।'

'अगर यही कारण था, ता अब तुम्हे कैद मे कैसा लगता है ?'

'मेरा नजरिया नही बदला। मैं कम्यूनिस्ट इकलाबी हू। अब भी मेरी एक ही ख्वाहिश है कि अपने से ज्यादा समझदार और तजुर्बेकार कामरेडो से मैं कुछ सीख सकू।'

'फिर कुल आलमी इन्कलाब के लिए तुम सोवियत रूस के लिए काम करोगे ?'

'नही ! मेरा जासूसी मे यकीन नही है। मेरा यकीन इकलाबी जद्दोजहद मे है।'

'पर हम मालूम है कि तुम बरतानवी जासूस हो। यू ही हमारा वक्त क्यो जाया करते हो, जितनी जल्दी तुम अपने जुर्म का इकबाल कर लो, उतना ही अच्छा है।'

'पर मैंने काई जुर्म ही नही किया, इकबाल किसका करू ? मेरी वफा अपने मुल्क के साथ है, मैं बरतानिया का जासूस कैसे हो सकता हू ?'

अफसर न मेज पर जार से मुक्का मारा, और तीखी आवाज म कहा—'हमे जितन सबूत चाहिए थे, मिल चुके हैं। तुम्हारा ख्याल है हम लोगा न तुम्हे यू ही गिरफ्तार कर लिया है ? तुम्हारे हलफिया बयान के

कागज तैयार करके तुम्हे दे दिए जाएगे—दस्तखत करन के लिए। तुम्हारे जैसे दुमुहे आदमियो के साथ हम निपटना जानत हैं '

हरदत्त कुर्सी पर बैठा हुआ गुस्से से कापने लगा

उस कमरे मे वापस भेज दिया गया, जहा वह चारपाई पर बठकर उस सामन वाली सफेद दीवार को ताकने लगा—जो दीवार उसका मुकद्दर बन गई लगती थी

अगली सुबह स्पैंगा, हरदत्त से उस पर जो गुजरी बीती, सुनकर हैरान नही हुआ, तो हरदत्त ने हैरान होकर कहा मैं उस जुम का इकबाल किस तरह करू, जो जुम मैंने किया नही' तो स्पैंगा मुस्करा दिया 'आज लाखो लोग सोवियत जेलो म भरे हुए हैं, तुम्हारा क्या ख्याल है कि वह सभी जासूस थे ?'

हरदत्त न ताव खाकर कहा 'पर मैं झूठे बयान पर दस्तखत नही करूगा' और स्पैंगा ने मुस्कराकर कहा 'वह इस तरह के दस्तखत करवाना जानते हैं।

इसी बेचैनी मे महीना गुजर गया। हरदत्त की फिर सुनवाई नही हुई। पर उस जो रियायती खुराक मिलती थी वह बद हो गई। स्पगा ने बताया कि उसे भी पहले रियायती खुराक मिलती थी, चाक्लेट और सिग्रेट भी, पर जब उसने रूस का जासूस होने से साफ लफ्जो म इन्कार कर दिया, तो वह बढिया खुराक बद हो गई थी।

हरदत्त की स्पैंगा के साथ बडी अजीबोगरीब दोस्ती हो गई—उसकी सूझ-बूझ और अक्लमदी की वह बडी कद्र करता था, पर उसके ख्यालो को वह रिऐक्शनरी' कहता और बहस करता कि उन्होने हमे भले ही गलती से कैद कर लिया है, पर इसके साथ बुनियादी असूल किस तरह गलत हो गए ?

स्पैंगा उसे कहता 'तुम आदशवादी आदमी हो हरदत्त ! तुम इतना नही देखते कि बुनियादी असूलों की अगर कोई जगह होती, तो सारा फलसफा एक ही आदमी के इशारो पर क्या चलता ? लेनिन की मौत के बाद यह स्तालिन उन लोगो का कत्ल क्यो करवाता जो राजसी ताकत मे इसके रकीब थे ? सिफ इतना भर नही कहा जाता है कि लेनिन को

मरवाने मे भी स्तालिन का हाथ था

पर हरदत्त की आखें अपने नजरिए से हिल नही पाइ। वह कहता—'पर जो कुछ इतने थोडे वक्त मे इस मुल्क ने कर दिखाया है, वह दुनिया म कही नही हुआ।'

अब तक हरदत्त ने कुछ समझने-समझाने लायक रूसी जुबान सीख ली थी, और जेलसकी ने अग्रेजी। हरदत्त उससे स्तालिन और ट्रौटस्की के बीच के बुनियादी फक को समझना चाहता था, जिसके लिए जेलसकी ने उसे लेनिन के उस खत का हवाला दिया, जा आखिरी वक्त उसन स्तालिन और ट्रौटस्की के अलावा पार्टी सट्रल कमेटी के बाकी सभी मैंबरो को लिखा था कि 'स्तालिन ईमानदार और काम को अर्पित आदमी है, बहुत बहादुर इन्कलाबी, पर वह सियासी दूर-अदशी मे परिपक्व नहीं है। बिना सोचे-समझे बहुत जल्दबाजी से कदम उठा लेता है। मुझे खतरा है कि उसकी जल्दबाजी उसे डिक्टेटरशिप की ओर ले जाएगी। वह इन्कलाब के अदरूनी और बाहरी, दुश्मनो के हत्थे भी चढ सकता है। पर ट्रौटस्की गभीर स्वभाव का है, इसलिए वह मुखालिफ राय को भी सलीके से सुन सकता है। आने वाले वक्त मे कई नई और पेचीदा मुश्किलें सामने आएगी, जिहे बडे ढग से निपटाना होगा। इसलिए मेरी राय है कि बालशविक पार्टी का जनरल सैक्रेटरी उसे चुना जाना चाहिए '

इस तरह का बहस मुबाहसा चल रहा था, कि एक शाम कोई छह बजे हरदत्त और स्पैगा का अलग कमरे मे भेज दिया गया। उस कमरे मे आठ चारपाइया थी, जिनमे से पाच, दूसरे कैदियो के पास थी। उनमे से एक बूढे से कैदी ने हरदत्त की ओर इशारा करके स्पैगा से पूछा—'यह हिदुस्तानी है ?' और जब स्पगा ने बताया कि 'हा, यह हिदुस्तानी है', तो वह कहने लगा यह जिस तरह कमरे मे आकर, तन कर खडा रहा, मैं समझ गया कि यह हिदुस्तानी है। इसे देखकर मुझे एम० एन० राय याद आ गया

हरदत्त जल्दी से उसकी ओर बढा, 'तुम एम० एन० राय को जानते थे ?' तो उसने हरदत्त का हाथ पकडकर उसे अपनी चारपाई पर बिठाते हुए कहा, 'हर सच्चा इन्कलाबी उसे जानता था। लेनिन उसे बहुत प्यार

करता था। वह बहुत बडा इन्कलाबी था, और बहुत ज़हीन। जब वह पार्टी का मैंबर था, मैं उससे मिला था '

यह यूरीस्तिकलोव था, जिसन ओदीसा मे कामगरो की पहली समाजवादी जमहूरी पार्टी की बुनियाद रखी थी। उसे ज़ार की खुफिया पुलिस ने पकड लिया था, और उसे दस बरसा के लिए 'वरकुता' मे जलावतन कर दिया गया था। पाच बरस बाद वह फरार होकर जब स्विटज़रल ड पहुचा, तो वहा लेनिन के साथ उसकी मुलाकात हुई थी। और वह 1905 मे रूस लौटकर बालशविक टिकट पर रसी-डूमा (असवली) का मैंबर चुना गया था। ज़ार सरकार ने उसे फिर जलावतन कर दिया था, पर वह बालशविक इकलाबी के बाद फिर लौट आया था, और 1917 से लेकर 1925 तक 'इज़वेंसतिया' का सपादक रहा था। स्तालिन से कई बातो मे उसकी मुख्तलिफ राय होती थी, इसलिए वह 'काउटर रैवाल्यूशनरी' के इल्ज़ाम मे अब कद था और खुले लफ्ज़ो मे वह तफतीश के अफसरा को बेरिया की वदबू कहता था। उसके ख्याल मे स्तालिन बिल्कुल बेखबर था, और यह खौफ्ज़दा हालतें बेरिया की ईजाद थी '

इस नए कमरे मे एक चुप और शर्मीला सा इक्कीस बरस का लडका था जिसे हरदत्त न बाता म लगाकर पूछा कि वह क्या कैद है ? उसन कुछ झिझककर कहा, 'पता नही, पर वह कहते हैं कि मैं कम्यूनिज़म के खिलाफ हू। मुझे कोई नही बताता कि कम्यूनिज़म क्या है ? अगर तुम्ह पता है तो बताओ कि वह क्या हाता है ?'

हरदत्त सिर झुकाकर चारपाई पर बैठ गया

फिर जून का दूसरा हफ्ता था, लुबियानका म चौदह हफ्ते गुज़ारने के बाद जब हरदत्त को वहा से निकालकर मास्का की एक और जेल बुतीरका मे डाल दिया गया।

यह जेल लुबियानका जैसी नही थी। हरदत्त को एक बहुत छोटी-सी कोठरी मे बन्द कर दिया गया। थोडे दिन गुज़रे थे जब एक अफसर के सामने पेश किया गया, तो उसने हैरान होकर देखा कि यह वही पहला अफसर था, वही उसकी सैक्रेटरी लडकी। और उसे एक कोने मे बिठा

कर, वह अफसर और उसकी सैक्रेटरी लडकी शराब पीने लगे और सासेजिज़ खाने लगे। कुछ देर बाद उन्होने हरदत्त के सामने अंग्रेजी मे टाइप किए हुए कागज़ रखकर उसे कलम पकडाई—दस्तखत करने के लिए। और बताया कि तफतीश खतम हो गई है।

'तफतीश तो हुई नही। मेरा दोस्त सफदर कहा है? उसके बारे म मुझे कुछ नही बताया गया, कुछ भी नही पूछा गया,' हरदत्त न गुस्से से कहा, तो वह अफसर कडककर बोला—'तुम हमें तफतीश करनी सिखाओगे?'

'यह कागज़ काहे के हैं?'

'तफतीश खतम होने के, और काहे के'

हरदत्त ने कुछ कहना चाहा, पर देखा सुनवाई नही हो सकती। और हर सफे पर, जहा वह सैक्रेटरी लडकी इशारा करती रही, हरदत्त ने दस्तखत कर दिए। उसने लम्बे-लम्बे सफो म से कुछ अक्षर पढने की कोशिश की, पर उसे लगा—हर अक्षर की गोलाई पिघलकर एक लम्बी लकीर बन गई है—जेल की सलाखो जैसी।

14

23 जून 1941 की सुबह थी, जब एक सतरी न हरदत्त को चुपके से बताया कि कल जमनी ने रूस पर हमला कर दिया है। हरदत्त को स्पैंगा बहुत याद आया जिसने चार महीने पहले यह पेशीनगोई की थी। हरदत्त अकेला बैठकर जमन-रूस मुआयदे के टूटने से बरतानवी और अमरीकी सियासत के हथकडो का अनुमान लगाता रहा। फिर अगली दोपहर का वक्त था जब उसे बाहर के हॉल कमरे मे लाया गया, जहा कैदियो की भीड लगी हुई थी। शाम तक यह भीड बढती गई, और कैदी आपस म इस जग की बाते करते हुए कभी यह अनुमान लगाने लगते कि आज वह अचानक छूटने वाले है, और कभी यह अनुमान लगाते कि आज उन सबको गोली से मार दिया जाएगा

रात को कोई दस बजे का वक्त था, जब हजारों कैदियों के छोटे-छोटे गिरोह बनाकर उन्हें बाहर के आंगन में लाया गया, और 'काले पहाड़ी कौवे' लारियों में भर दिया गया। हरदत्त वाली लारी भी इतनी ठसाठस भरी हुई थी कि वह खांसी, पसीने और गन्ध से लदी हुई लगती थी। यह लारी जब एक जगह पर रुकी, सुबह का सूरज चढ़ आया था।

यहां से कैदियों को एक लम्बी माल गाड़ी में भर दिया गया। कई घंटों के बेचैनी भरे इंतजार के बाद कैदियों को काली रोटी के टुकड़े और नमक वाली कच्ची मछली खाने को मिली। पर सूरज डूब गया था, जिस वक्त उनकी गिनती हुई, और गाड़ी चल पाई।

वह गाड़ी फिर दो दिन तक कहीं नहीं रुकी। तीसरी रात जहां गाड़ी रुकी, वह वाल्गा दरिया के किनारे का शहर सराताव था। पर कैदियों को खड़ी गाड़ी में से, अगली सुबह बाहर निकाला गया, और पांच-पांच की कतार बनाकर जमीन पर बैठने के लिए कहा गया। हथियार बन्द सिपाहियों के पास जंजीरों से बंधे हुए खूंखार कुत्ते थे, तो भी हुक्म दिया गया कि जो भी खड़ा होगा, उसे गोली मार दी जाएगी। उस वक्त उनकी गिनती करने से हरदत्त ने जाना की पूरी गाड़ी में ढाई हजार कैदी थे।

हुक्म मिला—शागोम माश ! यानी आगे बढ़ो !

कैदी स्टेशन से शहर की ओर चलने लगे। उनके इर्द गिर्द पांच सौ हथियार बंद सिपाही थे, और एक सौ कुत्ते।

यह नयी जेल पूरे एक शहर जितनी थी, जिसके भीतर कितनी ही इमारतें थीं। उस भीड़ में कई कैदी अर्से से खोए हुए दोस्तों को ढूंढ रहे थे, हरदत्त भी सफ्दर और मोहम्मद को ढूंढने लगा। सफ्दर नहीं, पर अचानक उसे मोहम्मद दिख गया, जिसे गले से लगाते हुए हरदत्त ने पूछा—तुमने कहीं मेरे भाई सफदर को देखा है ?" मोहम्मद तड़प कर बोला उसका नाम मत लो ! अब मैं जान गया हूं कि वह तुम्हारा भाई नहीं था, वह मुल्ला भी नहीं था। वह जासूस था, उसे खुदा की मार, जो मुझे मेरी विधवा मां से छीन कर यहां ले आया

हरदत्त ने बहुत समझाया कि अगर हम यहां फंस गए हैं, तो यह

उसका कसूर नही है । पर मोहम्मद कहने लगा—'फिर तुम्हे हकीकत का इल्म नही है । उसने हम कहा था कि यहा उसका सोना गडा हुआ है । यह बात उसन भी धोखा देने के लिए बनाई थी । तुम्हे और मुझे यहा दोज़ख मे डालने के लिए '

अब हरदत्त उसे किसी भी तरह यकीन नही दिला सकता था कि सफदर नेक नीयत था । उसका सचमुच यकीन था कि हमारे रूसी दोस्त मोहम्मद को हमारी मदद करने के एवज़ मे कुछ इनाम देकर खुश कर देंगे

'यह सब बातें किस तरह उलटी पड गयी, यह तो सब सीधी थी ' हरदत्त ने कहना चाहा, पर उसकी आवाज़ उसके तालू से टकराकर उसकी ज़ुबान पर टूट गई

उसने मोहम्मद के कधे पर हाथ रखा हुआ था कि एक सतरी उसका हाथ खीचकर उसे कैदियो की उस बडी सी कोठरी मे ले गया, जो चालीस कैदियो के लिए बनी हुई थी पर उसमे साठ आदमी भर रखे थे

बदी हालत की इतनी भयानकता हरदत्त ने पहले नही देखी थी । छह बजे शाम को, दिन की दूसरी रोटी मिलती थी, जो कोठरी के बीच मे रखे मेज पर सूप के बडे कडाहे की सूरत मे रख दी जाती थी, जिसमे से हर कैदी को अपना मग भरकर वह सूप पीना होता था । उस वक्त हरदत्त ने देखा कि कई कैदी वह सूप पीने के लिए कतार के पिछले हिस्से मे खडे हो गए, ताकि ऊपर-ऊपर मे पानी सा पीने की बजाय, वह नीचे का कुछ गाढा सूप ले सके । भूख से सभी की हड्डिया निकल आयी थी, और दूसरे से तीसरा फिकरा बोलते हुए उनकी ताकत टूटने लगती थी

रात के दो बजे कोठरी मे आए नए बदियो को जगाकर, हमाम वाली इमारत मे ले जाकर उनके बाल कटवाये गये । वह नाई भी पुराने कैदियो म से थे, जो सर्दी से कापते हुए नीले पड रहे थे

इन नये कैदियो के कपडे उतरवा कर गुसल के लिए तैयार किया गया, तो एक सतरी ने साबुन के घोल मे ब्रुश डुबो कर, ब्रुश को एक बार हर कैदी की पीठ पर फेरा एक बार छाती पर । आगे पहुचकर उन्होने देखा कि गुसलखाने की चार टोटिया मे से तीन ठडे पानी की थी, और

एक गर्म पानी की जिसकी धार इतनी पतली थी कि उसके पानी के इंतजार में एक एक को कितनी देर तक खड़े रहना पड़ता था, और इंतजार में खड़े कैदियों की कतार सर्दी से कांपती हुई नीली हुई जाती थी

इस सरातोव जेल में महीने में एक बार कैदियों के बाल कटवा कर गुसल दिया जाता था। हरदत्त की जब ऐसी तीसरी बारी आयी तो उसने देखा—इस बार नाई मर्द नहीं थे, औरतें थीं। कैदियों के कपड़े उतरवा कर जब उन्हें नाई-औरतों के सामने कतार में खड़ा किया गया, हरदत्त कतार के आखिर में जा खड़ा हुआ—इस जिल्लत से कुछ मिनट और बचने के लिए। उस वक्त कतार के अगले हिस्से में से उसने किसी कैदी की आवाज सुनी 'दोस्तो! देखो! यह मुल्क है, जहां औरतों को बराबर के हक मिले हुए हैं। अगर आपने हजामत करवाने से इन्कार किया, तो आप पुराने दकियानूसी ख्यालों के गिने जायेंगे, और आप पर 'काउंटर रेवाल्यूशनरी' होने का संगीन जुर्म लग जाएगा। सो जाओ! इन्कलाब के हामी बनो।'

इस जेल में कैदी बंटे हुए थे, एक आम कैदी थे एक खास कैदी। खास कैदी क्योंकि सियासी थे, इसलिए उन्हें 'स्तोप बनार' कहा जाता था, और दूसरों को हजामत करने और रोटी पकाने जैसे कामों पर लगाया जाता था। हरदत्त ने देखा कि वह दूसरे कुछ फायदे में रहते थे क्योंकि उन्हें कुछ ज्यादा खाने का मौका मिल जाता था।

यहां हरदत्त ने यह भी जाना कि सियासी मुजरिमों में से एक फी सदी से ज्यादा कोई नहीं था, जिनकी सोवियत निजाम के खिलाफ कोई आइडियालाजी थी। वह सिर्फ अनजाने में ही सियासी मजाक सुनते हुए, सोवियत निजाम के मुखालिफ करार दे दिए गए थे।

इस कैदी खाने में सुबह की खुराक, काली डबल रोटी, एक प्याला गर्म पानी का और एक चम्मच नमक का मिलता था। दोपहर को सूप के नाम पर गर्म पानी, जिसमें काली रोटी के कुछ टुकड़े और प्याज के मोटे छिलके तैरते थे। और रात को नमकीन मछली का एक छोटा सा टुकड़ा और गर्म पानी का एक प्याला। पर ज्यों ज्यों जंग बढ़ती गयी, यह

'खुराक' और कम होती गयी

एक दिन बीस मिनट की हवाखोरी के दौरान एक जवान बंदी ने लोहे का एक छोटा टुकड़ा पा लिया जिसे वह छुपाकर कोठरी में ले आया और मिट्टी के प्याले पर घिस कर उसे कुछ तीखा करके अपना गला चीर लिया। आत्महत्या की इस कोशिश के बाद, कैदियों की हर कोठरी की महीने में तीन बार तलाशी होने लगी ताकि कोई बंदी 'जिन्दगी के खिलाफ' यह फालतू मुजाहरा न करे।

जंग की खबर किसी न किसी दरार में से भीतर आ जाती थी कि जर्मन फौज जीत रही है उन्होंने पश्चिमी रूस का बहुत सा हिस्सा अपने कब्जे में कर लिया है। और कैदी अपनी घुटती हुई जिन्दगी में ऐसी खबरों का इस तरह इंतजार करते, जिस तरह यह खबरें आक्सीजन' हों।

हरदत्त ने सुना था कि अक्टूबर इन्कलाब के बाद, खाना जंगी के दौरान भी भूखे और निहत्थे लोगों ने लड़कर विदेशी-दखल से अपने मुल्क को बचा लिया था। वह हैरान था कि अब अपने मुल्क की हिफाजत में लोगों का वह रूसी रूह कहां चली गयी थी? वह यह सोचने से इन्कारी था कि नमम घोजा को जीत सकती हैं।

हरदत्त की जानकारी में जो कुछ समझदार बुजुर्ग कैद में थे, उन्होंने हरदत्त को बताया कि लेनिन लोगों के दिलों का खुदा बन गया था। उसने लोगों को जार की गुलामी में से निकाला था। इन्सान के लिए किसी न किसी खुदा का तसव्वुर जरूरी होता है, इसलिए लोगों ने ख्याली खुदा की बजाय जब लेनिन में हकीकी-खुदा देख लिया तो उनके निहत्थे हाथों में भी बला की ताकत आ गयी थी। पर स्तालिन के वक्त उन्होंने देखा कि इतना समर्थ स्तालिन उनको बेरिया के खौफजदा माहौल में से नहीं निकाल सकता, तो उनका खुदा अपने आसन से हिल गया है। इसलिए उनकी सारी ताकत उनके परों में से निकल गयी है।

हरदत्त के लिए यह भयानक इत्तलाह थी कि बेरिया, बाहरी ताकतों का एक खौफनाक सिरा बन कर इस जमीन पर गड़ा हुआ है।

बरस बीतने को हो आया। इस दौरान हरदत्त ने किसी नये बंदी से बाहर की सिर्फ यह खबर सुनी कि जुलाई 1942 में चर्चिल आया था।

जवान कैदी महीना म बूढे होन लगे थे, तपेदिक के मरीज़ हान लग थे। हरदत्त न घबराकर कुछ दिन अस्पताल म पडना माधा, जिसके लिए सुबह वाले चम्मच भर नमक म से कुछ बचा-बचाकर उसने तीन चम्मच नमक जमा कर लिया, और एक दिन वह नमक गम पानी मे घालकर पी गया। उसे जब उल्टिया आन लगी, पेट म वल पडने लग, तो उसे अस्पताल मे पहुचा दिया गया। पर वहा पहुच कर उसने देखा कि रोज एक मरीज़ जरूर मर जाता है। अस्पताल म एस्प्रीन के बिना कोई दवाई नही थी। जो मरीज़ मर जाता था, बाकी के मरीज़ उसकी अन-खायी रोटी पर झपटने के अलावा कुछ नही कर सकत थे कोई हफ्ते बाद डाक्टरा ने मुआयना किया कि हरदत्त को कोई बीमारी नही है, इसलिए अस्पताल म स खारिज कर दिया।

1942 के अगस्त महीन के आखिरी दिन थे, जब एक दिन अचानक हरदत्त को एक अफसर के सामन पेश किया गया, जिसन उसका नाम-पता पूछकर, एक कागज पर उसे दस्तखत करने के लिए कहा, और बताया कि चौरासी दफा के अन्तगत उसे तीन साल की सजा सुनाई गयी है।

'काहे की सजा ?' हरदत्त न जब हैरानी से पूछा, तो बताया गया, 'बिना इजाज़त के सोवियत सरहद पार करने की'। पर जब हरदत्त ने कहा कि उसे किसी अदालत म क्या नही पेश किया गया, तो अफसर ने सिफ इतना भर कहा, यह सज़ा ओ० एस० ने सुनाई है और यह बताने से इन्कार कर दिया कि ओ० एस० क्या चीज़ है।

हरदत्त ने दस्तखत कर दिए, और जब वह कागज अफसर ने झपट कर उसके हाथ स छीन लिया, हरदत्त के हिन्दू संस्कार चीख कर बोले— 'चौरासी लाख योनियो का चक्कर तो सुना था, पर यह चौरासी दफा नही सुनी थी, जहा मुसिफ की सूरत भी नही देखी, और आदमी मुजरिम बन गया '

अब हरदत्त का वक्ती इंतज़ार वाले उस कमरे में बिठा दिया गया, जहाँ बहुत से कैदी थे। वह भी जिन्हें लम्बी-लम्बी सजाएँ सुनाई गई थी। पर कैदी इस तकदीर पर खुश थे, कि इन कोठरियों से 'लेबर कैंप' अच्छा है जहाँ खुली हवा होगी। वहाँ भले ही जान तोड़कर मुशक्कत करनी पड़ेगी, पर रोटी इसमें ज्यादा मिलेगी।

हरदत्त का ख्याल था कि वक्ती इंतजार वाले कमरे में मुश्किल से एक दो दिन गुज़रेंगे पर जब कई हफ्ते गुज़र गए तो उसने देखा—उसका सारा बदन काले-काले फोड़ों से भर उठा है, और मसूड़े फटने को हो आए हैं। इस बीमारी ने हरदत्त को अधमरा सा कर डाला और दो मिनट से ज्यादा देर खड़े हो पाना उसके लिए मुश्किल हो गया।

एक दिन अफसरों ने जेल का मुआयना करते हुए, जब इस वक्ती-इंतज़ार वाले हिस्से में पाँव रखा तो कैदियों ने अपनी बीमारियों का ज़िक्र करते हुए चारपाइयों के खटमल और कमरे के कीड़े दिखाए, तो एक अफसर ने बहुत लम्बी तकरीर करते हुए उनसे कहा, 'यह शिकायतें करने के बजाय, आप लोगों को यह सज़ा अपने महान नेता स्तालिन के साथ वफादारी का सबूत देते हुए बड़ी ईमानदारी से भोगनी चाहिए। कामगरों और मज़दूरों के मुहाफिज़ स्तालिन की पंचवर्षीय योजना को कामयाबी देने के लिए, लेबर कैंप में जाकर इस तरह मेहनत करनी चाहिए कि हम फासिस्ट दरिंदों का अच्छी तरह से मुकाबला कर सकें।'

जब अफसर चले गए, कमरे का ताला लग गया तो कई घंटे इस तरह गुजरे कि कैदियों में से बारी-बारी से एक 'अफसर' बन जाता उस तकरीर की नकल उतारता, और बाकी सब उस तकरीर की दाद देते हर हफ्ते कुछ नए कैदी इस वक्ती इंतज़ार वाली कोठरी में डाल दिए जाते और कुछ को लेबर कैंप में भेज दिया जाता।

ढाई महीने बाद एक दिन कैदियों को निकालकर पैदल स्टेशन ले जाया गया, तो चल चलकर बेहाल हुआ हरदत्त, गाड़ी में जाकर इस तरह गिर पड़ा, जैसे वह मौत के बिस्तर पर गिर

यह गाडी जगह जगह रुकती रही, और नए 'मुसाफिरो' को चढाती रही, पर हरदत्त को सिर्फ इतना भर होश रहा कि खडी हुई गाडी के चलने से जो पहले धक्के लगते थे, उनसे उसका जिस्म टुकडे-टुकडे हुआ जाता था

बहुत दिनो बाद जब कैदियो को गाडी म से उतारा गया, हरदत्त ने उस स्टेशन का नाम पढ़ा—नीचनी तागिल ।

यह दिसबर का महीना था, और सुबह का समय था। हरदत्त ने बदन को खीचकर गाडी म से निकाला, तो बाहर निकलकर उसे लगा—वह बफ की खाई म गिर पडा है ।

कैदियो की हाजिरी लगाने के बाद उन्ह हुक्म मिला। सागोम मार्श !

बाहर सारे रास्ते पर बफ बिछी हुई थी। पता लगा कि लेबर कप वहा से कई मील दूर है। पर कुछ कैदियो ने हरदत्त से कहा 'इस वक्त चलेंगे तो शायद जिन्दा रह जाएगे, नहीं तो बफ मे जम जाएगे।' हरदत्त ने चलने की कोशिश की, पर दस कदम चलकर गिर पडा, तो भौंकते हुए कुत्ते उसकी जख्मी टागो की ओर बढे, साथ ही एक सतरी की आवाज आई 'अगर तुम उठकर चलोगे नही तो यही तुम्हें गोली मार दी जाएगी।'

हरदत्त ने पैरो के बल खडे होने की कोशिश की, पर फिर गिर पडा तो दो कैदियो ने आकर उसे दोनो बाहो से सहारा देकर उठाया, और उसी तरह कधो का सहारा देते हुए उसे चलाने लगे। उसके कारण सभी की चाल धीमी पड गई थी, इसलिए कई कैदी उसे गुस्से से घूरने लगे। जजीरो वाले कुत्ते भी उसे भौंकने लगे। उस वक्त दूर से एक कैदी ने उसे आवाज दी, 'हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट ! अब मुझे बताओ कि तुम्हारे बाप मार्क्स की इस बफ के दोजख के बारे मे क्या थ्योरी है ?' उस वक्त मदन मुस्करा दिया, कहने लगा—'य कुत्ते काफी भौंक रहे हैं इसलिए हमे भौंकने की जरूरत नहीं।'

कप मे पहुचकर हाजिरी लगवाने के बाद सारे कैदी गुसल के लिए पहुचे, तो अचानक हरदत्त को लगा कि उसके पैर जसे आग पर रखे हुए हैं, और हजारो सूइया इकट्ठी उसके परो म चुभ रही हैं। उसके कराहने की आवाज सुनकर, एक कैदी ने उसके पैरो से पठानी चप्पलें उतारी, और

जोर-जोर से उसके पर मलने लगा। खून की कुछ हरकत उसके परो मे हुई तो उस कैदी न हरदत्त को बताया—'अभी ता दिसम्बर का महीना है। जाने की शुरुआत यहा का रूसी जाडा अभी तुम्हे देखना है '

गम पानी के गुसल न हरदत्त के बदन को कुछ सुख दिया पर उसने देखा कि बदन के फोडो की हालत और बिगड गई है। उसे जब डिस्पसरी म ले जाया गया, उस दिन की डाक्टर एक औरत थी, एक भारी स खूबसूरत चेहरे वाली औरत पर जिसके हाथ और आवाज नम थी। उसने एक नस से हरदत्त के फटने को हो रहे बदन पर मरहम लगाकर उसे अस्पताल भिजवा दिया।

अस्पताल म हरदत्त ने जाना कि वह डाक्टर औरत गालीना स्तेपानोवना पतरावा एक मेहरबान दिल की औरत है अस्पताल के बडे डाक्टर की असिसटट है, भले ही खुद कैदी है। उसकी कैद का कारण भी हरदत्त ने जाना कि उसने अपने 'काउटर रवोल्यूशनरी' खाविद की मुखबिरी नही की थी, इसलिए जहा उसके चीफ इजीनियर खाविद को पन्द्रह बरस की सजा दी गई है, वहा उसे भी सजा का हकदार समझा गया है।

हरदत्त वाले वाड का डाक्टर कैदी भी मेहरबान दिल का आदमी था, जिससे एक दिन हरदत्त ने पेट म उठते दद की दवाई मागी तो वह उसास लेकर कहने लगा असल मे यह भूख का दर्द है, इसकी दवाई सिर्फ रोटी है, जो मैं नही दे सकता।

रोटी की कमी के कारण बहुत से कैदी बीमार थे और हरदत्त ने देखा कि यह अस्पताल असल मे कब्र के रास्ते मे आनेवाला पडाव मात्र है बीमार कदियो की सारी सियासी बहसें भूल चुकी थी, और वह लजीज खानो के नाम ले लेकर सारा दिन एक मुह जुबानी दावत सजाते रहते थे हरदत्त जागती हुई हालत मे अपना दिमागी तवाजन बनाए रखने की कोशिश करता रहा, पर जब उसे नीद आ जाती—उसके सपने चावलो के पुलाव की देगें और भरी हुई हाडिया उसके आगे रख जाते थे।

काई महीने भर बाद एक दिन डाक्टर गालीना, और डाक्टर निकोलाई हरदत्त का मुआयना करते हुए कितनी देर तक आपस म बातें करते रहे। फिर जाने से पहले डाक्टर गालीना न हरदत्त के कधे पर हाथ

कहा, 'मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश करूंगी।'

कुछ दिन बाद डॉक्टर निकोलाई ने उससे कहा कि वह अस्पताल के बावर्चीखाने की सोनिया से मिले। सोनिया ने उसे बताया कि कोई स्टाफ के गलियारे में से रात को कोई बिजली के बल्ब उतार कर ले जाता है। अगर वह रात को जागकर गलियारे का ध्यान रखे, तो उसके बदले में उसे कुछ ज्यादा रोटी मिल जाया करेगी

रात को जागना होता था, बिस्तर में सोना नहीं होता था, इसलिए हरदत्त को एक ठंडा, पर मोटा कोट, घुटनों तक बूट, और कानों तक सिर को ढापने वाली रुई की टोपी मिल गई। वह सारी रात यह कपड़े पहन कर लम्बे गलियारे में घूमता रहता, और सुबह होते ही यह कपड़े उतारकर बावर्चीखाने में चला जाता, जहां उसे रोटी का एक बड़ा-सा टुकड़ा और मांस वाले सूप से भरा हुआ एक प्याला मिल जाता।

अगले कुछ हफ्तों में जैसे उसकी जान लौट आई। बदन के रिसते जख्मों पर भी खुरंड आने लगे।

अस्पताल के कई कैदी उसे बताते कि सोनिया बहुत बड़े अफसरों के साथ हम बिस्तर होती है, इसलिए उसे अलग कमरा भी मिला हुआ है और मनमर्जी की रोटी भी। पर हरदत्त को वह सिर्फ एक रहमदिल औरत लगती। उसने कभी हरदत्त को अपनी जिंदगी के बारे में कुछ नहीं बताया था। अगर कभी दोस्ताना लहजे में हरदत्त कुछ पूछ बैठता, तो वह होंठों पर उंगली रख लेती, धीरे से कहती—चुप, दीवारों के भी कान होते हैं

मार्च का महीना चढ़ आया तो हरदत्त भले ही बिलकुल तंदरुस्त नहीं हो पाया था, उसे अस्पताल से खारिज करके एक उस बड़े कमरे में भेज दिया गया, जहां सिर्फ जख्मी कैदी रखे जाते थे। कैदियों के नाकारा हो जाने से क्योंकि काम का हर्ज होता था, इसलिए यहां उन्हें कुछ अच्छी खुराक दी जाती थी, ताकि तंदरुस्त होकर वह जल्दी काम पर लौट सकें। इस कैंप में सारा दिन लाउडस्पीकर पर रेडियो की खबरें सुनाई जाती थीं कि किस तरह रूसी फौजें जीत रही हैं। फासिस्टों के जुल्मों की कहानी इतनी बार दोहराई जाती कि कई कैदी खीझकर कहते, 'अगर नाजियों को कनसंट्रेशन कैंप चलाने नहीं आते तो आकर कामरेड स्तालिन से सीख लें।'

इस कमरे मे कभी सियासी वहस भी हा जाती थी। एक वडी उम्र का रूसी था, जा इस निज़ाम पर लानतें देते हुए हरदत्त स कहता, तुम हिदुस्तानी हो, इसलिए तुम मेरी मुखबिरी नही करोगे, तो हरदत्त उसे कहता 'मुखबिरी मैं किसलिए करूगा, पर मै तुम्हारे साथ मुतफ्फिक नही हू। आज स्तालिन अगर अच्छा लीडर नही है, तो कल को अच्छा लीडर आ जाएगा। पर स्तालिन के गलत होने स बुनियादी असूल किस तरह गलत हो गए ?' और हरदत्त कहता— जब तक मैं जेलो और कपो से बाहर जाकर लोगो की जिदगी का मुतालया न कर लू, असल मे मुझे यह भी हक नही वनता कि मैं स्तालिन को गलत कहू

कुछ हफ्तो बाद मरीज़ो वाले इस कमरे म स निकालकर हरदत्त को अपाहिज ब्रिगेड मे भेज दिया गया, जहा उन सबको खेता म काम करना होता था। ज्यादा खेत आलुओ के और बदगोभी के थे, कुछ एक गाजर, प्याज और लाल मूली के। यह काम भारी नही गिना जाता था, हर कैदी से पाच घटे की लगातार मेहनत ली जाती थी, पर साथ ही तीन घटे आनजान के मिलाकर, कई कमज़ोर कैदियो के लिए यह जान-तोड महनत थी। वहा एक दिन हरदत्त काम करते हुए वेहोश होकर गिर पडा, तो ब्रिगड के मुखिया ने उसे ठोकरे लगाकर उठाया और मुक्को से मारने लगा।

दा कैदी जब सहारा देकर हरदत्त को वापस कप म लाए, तो उसके नीले-पीले हो गए चेहरे, और सूजी हुई आख को देखकर, और सूजे हुए होठो म से लहू रिसता देखकर कप का मुनीम हैरान हुआ तो उस वक्त एक सतरी ने उसे सारी बात बताई। उसने ब्रिगेड के मुखिया को बुलाकर बहुत फटकारा कि कैदियो से काम लेने का यह तरीका नही होता, अब वह चारछह दिन चारपाई पर पड जाएगा तो उसका नुकसान नही होगा काम का नुकसान हागा। और साथ ही जब यह कहा कि हरदत्त हिदुस्तान का आदमी है, तो ब्रिगेड के मुखिया ने आकर हरदत्त से वहुत माफी मागी। उस दिन हरदत्त ने हिदुस्तान के नाम का जादू देखा

मई मे भले ही मौसम कुछ खुल गया था पर हरदत्त का लगा कि अगला जाडा वह नही काट पाएगा। वह जरूर आने वाले जाडे मे सर्दी से मर जाएगा। कप के कुछ कैदी दक्षिण की ओर भेजे जा रहे थ—वाजा

किस्तान के यंजकाजगान मे जहा इस तरह का जाडा नही पडता था। इसलिए हरदत्त ने एक दिन कैदी मुनीम के आग गुजारिश की कि उसे भी वहा भेज दिया जाए। वह हस दिया कि आने वाले जाडे मे उसे मरने नही दिया जाएगा, किसी एसे काम पर लगा दिया जाएगा, जो कप के भीतर होगा, पर 1943 के जून के आखिरी दिन थे जब हरदत्त को यंजकाजगान भेज दिया गया।

हरदत्त और पचास दूसरे कैदी जब सात दिनो के गाडी के सफर के बाद वहा पहुचे, सूरजी मौसम न हरदत्त की हडियो मे कुछ जान डाल दी। यह कप बिल्कुल वीराने म था। मीलो लम्बे वीरान म सिफ एक अधूरी-सी इमारत दिखाई देती थी, जहा एक फैक्टरी बननी थी, पर जग के कारण रुक गई थी। असल म यह इलाका ताबे की खानो का था, जहा एक इडस्ट्रियल शहर बसाया जाना था। फिलहाल यह कप उन नाकारा हो चुके कैदियो के लिए बनाया गया था जो वहा रहकर मौत के दिन पूरे कर सकें।

यहा रेतीले इलाके म कैदिया से न भीतर सोया जाता था, न बाहर। भीतर चारपाइया खटमलों से भरी हुई थी, और बाहर बिच्छू घूमते थे। हरदत्त थोडे से हफ्तो म ही फिर इतना बीमार पड गया कि उसे अस्पताल म भेज दिया गया।

अस्पताल मे सिफ एक ही दवाई थी, एस्प्रीन, और एक ही औजार था—थर्मामीटर। पर इस अस्पताल मे हरदत्त ने फिर हिदुस्तान के नाम का जादू देखा, जहा तीस बरस की डाक्टर सोफिया सोइसेयेवना हरदत्त की आप-बीती सुनकर उसकी दोस्त बन गई। वह अस्पताल की डाक्टर भी थी, और दस बरस की सजा भी भुगत रही थी।

हरदत्त को इस अस्पताल में आए एक महीना हुआ था कि डाक्टर सोफिया बडे उत्साह से आकर उसे कहने लगी कि यहा वह कमीशन आ रहा है, जो कपा का मुआयना करके उन बीमार कैदियो को रिहा कर रहा है, जो काम करन के बिल्कुल काबिल नही रहे। और डाक्टर सोफिया ने कहा, शुक्र है तुम सियासी कैदी नहीं हो। तुमन सिफ सरहद चोरन का जुम किया था। सियासी कैदिया को किसी हालत म भी रिहा नही

किया जाता। पर मुझे यह पता नही कि विदेशी कैदियो पर रिहाई वाली बात लागू होती है कि नही, तो भी मैं तुम्हारी सिफारिश करगी '

और ठीक दस दिन क बाद डाक्टर सोफिया ने हरदत्त को अपने दफ्तर के कमरे मे बुलाकर, उसे गले से लगाते हुए कहा कि कमीशन ने उस मेहनत मजदूरी के नाकाबिल समझकर रिहाई का हुक्म दे दिया है।

जिस रिहाई लफ्ज को हरदत्त नाउम्मीदी के अधेरे मे टटाल टटोल-कर खोजता था, आज जब सचमुच उसकी उगलिया उस लफ्ज मे छू गई, तो उसके हाथ कापने लगे

अगले दिन हरदत्त और दूसरे पच्चीस बदी सिक्योरिटी आफिस मे बुलाए गए। हरदत्त की बारी आने पर अफ्सर ने पूछा—'तुम रिहा होकर कहा जाना चाहोगे ?' हरदत्त को सफदर का तलाश करना था, इसलिए उसके मुह मे निकला 'मास्को' पर अफसर ने कहा, 'सजायाफ्ता लोग मास्को नही जा सकते' और साथ ही उसकी फाइल के कागज देखते हुए पूछा, 'तुम्हारा पासपोट कहा है ?'

'पासपोट नही है, था ही नही' हरदत्त ने कहा तो अफसर बोला, 'फिर तुम्हारा कोई वतन नही है। तुम्हे कहा भेजा जाए ?'

'किसी गम इलाके मे' हरदत्त को अब सिफ रूस की सर्दी का खौफ लग रहा था।

अफ्सर की सैक्रेटरी लडकियो म से एक ने पास से कहा—'इसे काज़ाकिस्तान के ईली शहर मे भेज दीजिए, वह काफी गम जगह है' और उसकी आवाज सुनकर दूसरी दो लडकिया भी कहन लगी, 'हा, ईली ठीक रहगा।'

अब हरदत्त के हाथ नही काप रह थे, सिफ होठो पर एक कापती हुई हसी आ गई कि इस वक्त कई लडकिया मिलकर उसके लिए 'घर' ढूढ रही हैं। लडकिया की इस दिलचस्पी से हरदत्त को जाती नाम पर नही, अपने वतन के नाम पर फख्र महसूस हुआ

हरदत्त को रिहाई का परवाना मिल गया, तो एक अफ्सर औरत ने उसके सामने टाइप किया हुआ एक कागज रखकर दस्तखत करने के लिए कहा। हरदत्त ने जब सुनना चाहा कि कागज पर क्या लिखा हुआ है, तो

उस अफसर ने बताया कि यह एक इकरारनामा है कि वह बाहर जाकर जेलों की और कैपों की बातें किसी को नहीं सुनाएगा। अगर सुनाएगा तो अपनी दोबारा गिरफ्तारी का जिम्मेदार होगा। हरदत्त ने उस कागज़ पर दस्तखत कर दिए।

उस रात हरदत्त को सफर के दिनों के लिए रोटी और उबले हुए मांस के कुछ टुकड़े बांधकर दे दिए गए।

हरदत्त के पास डाक्टर सोफिया का शुक्राना करने के लिए न कोई लफ्ज़ था, न कोई चीज़ थी। सोच-सोचकर उसे तीन साल पहले काबुल में खरीदा हुआ अपना ओवरकोट ही एक ऐसी चीज़ दिखा जो वह डाक्टर सोफिया को दे सकता था, और वह रात का कंबल की तरह उसे काम में ला सकती थी।

उसने जब झिझकते हुए सोफिया को वह मामूली-सा कोट पेश किया तो सोफिया ने कहा, 'मैं जेल के भीतर हूं, मेरा गुज़ारा हो जाएगा, पर तुम्हें जेल से बाहर जाना है, बाहर इस कोट के बिना तुम्हारा गुज़ारा नहीं हो सकता' और कोट लौटाते हुए उसने कोट की जेब में पचास रूबल डाल दिए। साथ ही कहा, 'तुम्हें देखकर लगता है कि हिंदुस्तान के लोग बहुत अच्छे होते हैं।'

यह पल—दो इंसानों के लिए हिंदुस्तान और रूस की दो—खूबसूरत रूहों को पहचानने का पल था, इसलिए हरदत्त की आंखों में भी पानी भर आया, और डाक्टर सोफिया की आंखों में भी

16

रिहा होने वाले पच्चीस आदमी जब स्टेशन पर पहुंचे, देखा वेटिंग रूम और प्लेटफार्म लोगों से भरे हुए थे। बहुत से परिवार दो दो, तीन तीन दिन से वहां गाडी के चलने के इंतज़ार में बैठे हुए थे। हरदत्त हैरान हुआ कि सिर्फ मर्दों और औरतों के चेहरों पर नहीं, बच्चों के चेहरों पर भी एक अजीब तरह का संताप झलक रहा है

इन रिहा हुए कैदियों की आमद से लोगो की उदासीन आखो मे एक दिलचस्पी-सी जाग उठी, पर हरदत्त फिर हैरान हुआ कि लोगो की यह दिलचस्पी उनसे जेल की खुराक खरीदने के लिए थी। हरदत्त ने बडी खुशी से, जेल वाली उबले हुए बदमजा मास की पाटली और सूखी हुई नमकीन मछली उन लोगो की रोटी से बदल ली।

शाम हो गई तो हरदत्त के साथियो ने दरख्तो के कुछ झाड पत्ते लेकर, प्लेटफाम के एक कोने म आग जला ली। उन्हे जेल की तरफ से धातु का एक एक कटोरा और लकडी का एक एक चम्मच भी मिला था, उन्होने अपने उसी कटोरे मे रोटी के कुछ टुकडे उबालकर, नमक डालकर खा लिए।

अगली सुबह गाडी के चलने की हिलजुल हुई तो जेल की ओर से आए सतरी उन रिहा हुए कैदिया को गाडी की सीटा पर बिठाकर चले गए।

रिहाई के इस पहले और नए एहसास ने हरदत्त के भीतर उसकी बहुत दिनो मे दबी हुइ भूख इस तरह जगा दी कि अपनी छह दिनो की बधी हुई रोटी, उसने बेसब्र होकर दो दिनो मे खा डाली।

बाकी रिहाईयाफ्ता कैदिया का भी यही हाल था। उनमे से बहुत से साथ के मुसाफिरो से रोटी मागने लगे, तो हरदत्त को मागकर खाना बहुत मुश्किल लगा और उसने डाक्टर सोफिया के दिए हुए पचास रूबल निकालकर कुछ मुसाफिरो से रोटी खरीद ली।

गाडी का यह सफर छह दिन लम्बा था, और अभी पूरे तीन दिन बाकी थे। हरदत्त के भीतर भूख के मारे ऐसे बल पडने लगे कि आखिर उसने अपना ओवरकोट देकर, एक स्टेशन से दो लिटर दूध और पाच किलो रोटी खरीद ली

इन लोगा मे से पन्द्रह आदमिया को ईली स्टेशन पर उतरना था, और शहर में पहुचकर सबसे पहले थाने म खबर देनी थी, जहा से उन्हे क्षेत्रीय-पासपोट मिलना था, जो अब रूस के हर शहरी के लिए जरूरी हो गया था। इस पासपोट के बिना न किसी को रोजगार मिल सकता था, न रहने की जगह।

इन रिहा हुए आदमियो मे से सिफ हरदत्त था, जिसके वतन की

तसदीक के लिए उनके पास कोई सबूत नहीं था। इसलिए उसे बताया गया कि उसे एक अलग तरह का पासपोर्ट मिलेगा, जो बेवतन लोगों को यहां रहने की इजाजत के लिए मिलता है। और जिसे हर तीन महीने बाद M G B के एक खास महकमे में जाकर नया कराना होता है।

हरदत्त जब गाड़ी में से उतरा, शाम के चार बजे थे। वह और उसके साथी सीधे थाने में चले गए, इत्तलाह देने के लिए, पर थाने के आगे लोगों की कतारें बंधी हुई थीं, जो अपने अपने क्षेत्रीय-पासपोर्ट को दोबारा नया करवाने के लिए खड़े हुए थे। वहां सिर्फ चार अफसर थे, जिन्हें सारी भीड़ को भुगताना था। वहां खड़े खड़े शाम के साढ़े-पांच बज गए, तो उन्होंने जान लिया कि आज उनकी बारी नहीं आ सकती।

अब सामने कुछ रोटी खाने का और रात को कहीं सोने का सवाल था, जिसकी तलाश में वह सब शहर की गलियों में घूमते हुए कई दरवाजे खटखटाते रहे, पर उन्हें कोई ठिकाना या मदद कहीं से नहीं मिल सकी। सबने हारकर थाने के बरामदे में ही रात की पनाह लेनी सोची, पर अभी उन्होंने टांगें पसारी ही थीं कि ड्यूटी अफसर ने गालियां बकते हुए उन्हें वहां से उठा दिया।

रेलवे स्टेशन वहां से चार मील दूर था, पर उन्होंने सोचा कि रात को वह वेटिंगरूम के बेंचों पर सो सकते हैं, इसलिए सभी स्टेशन की ओर चल दिए। वहां वेटिंग रूम खुला था, इसलिए सभी जब बेंचों पर लेट गए, तो उनकी अभी आंख ही लगी थी, जब स्टेशन मास्टर की कड़कती हुई आवाज ने उन्हें जगा दिया, और वहां से निकाल दिया।

रात की बर्फीली हवा में वह स्टेशन से निकाले हुए, जब बाहर कितनी देर तक अंधेरे में खड़े रहे तो हरदत्त की छाती में से मुद्दत से भूले बिसरे बाहू की हूक जैसी एक हूक उठी 'शाला मुसाफिर कोई न थीवे, कक्ख जिन्हां तो भारे हू'

यह हूक शायद स्टेशन मास्टर ने भी सुन ली, और सबने जब दोबारा उसकी मिन्नत की, उसने बाकी रात के लिए उन्हें वेटिंग रूम में सो जाने की इजाजत दे दी।

अगली सुबह वह सब 'स्वतन्त्र' लोग फिर सीधे थाने में पहुंचे, तो देखा

कि लोगा की धक्के लगाती हुई भीड थाने के सामने जमा हो चुकी थी। हरदत्त एक ओर खडा हो गया कि इन लागा को आखिर काम पर पहुचना हागा, इसलिए जल्दी चले जाएगे, पर उसे किसी काम पर नही पहुचना है, इसलिए उसे धक्के खाने की जरूरत नही है। वह अकेला अलग-सा खडा हुआ था, इसलिए पास के एक आदमी न उसे पूछा—'तुम भई कहा से आए हा ? तुम किसी बाहर के देश से आए लगते हो' और जब हरदत्त न कहा 'कप मे से रिहा हाकर आया हू, वैसे मैं हिन्दुस्तान से हू' ता वह हस-सा दिया, कहने लगा, 'हिन्दुस्तान से। मैंने सुना हुआ है कि हिन्दुस्तान के लोग अहिंसावादी होते हे, तभी तुम भीड मे धक्का मुक्की नही कर रहे। पर मैं तुम्हे एक बात बता दू कि अगर तुम्ह काई रोजगार खोजना है तो इस शहर मे तुम्ह कोई नही मिल पाएगा। यहा तुम भूखे मर जाओगे।'

हरदत्त साच मे पड गया, पर कहने लगा 'मुझे यहा रहने की इजाजत मिली है, मैं और किसी शहर कसबे मे नही जा सकता।'

वह आदमी कहने लगा 'तुम चिन्ता न करो। मैं जम्बूल जा रहा हू, वहा कई फैक्ट्रिया हैं, तुम्हे काम मिल जाएगा '

अफसर के सामने जब हरदत्त की बारी आई तो उसने हिम्मत बटोर कर कहा—'मुझे जम्बूल जाने का इजाजतनामा दे दीजिए, इस शहर मे मेरा कोई वाकिफ नही है, पर जम्बूल मे एक दोस्त रहता है '

अफसर का चेहरा गुस्सैला था, पर जब उसने सुना कि हरदत्त हिन्दुस्तानी है, तो उसका चेहरा नम पड गया। फाइल के कागजो की ओर देखते हुए उसने एक बार कहा, 'हमारे अपने कैदी कम हैं, जो तुम बाहर के मुल्क वाले भी यहीं कैद होने के लिए आ जाते हो, और हमे मुश्किल मे डाल देते हो' पर थाडे से मिनटो के बाद स्टप पैड की सूखी हुई स्याही पर उसने तीन बार थूककर उसे गीला करके, हरदत्त के कागज पर माहर लगा दी, दस्तखत करके, उसे जम्बूल जाने की इजाजत दे दी।

अब दोनो को राशन-काड लेना था, रोटी खाने के लिए, इसलिए वहा की कतार मे जा खडे हुए ता उस नए बने दोस्त ने बताया कि उसका नाम ओल्फ रैपापाट है वह कम्यूनिस्ट है, इसलिए उसे अपना देश पालैंड

कर यहा आना पडा है। जम्बूल मे उसे काम मिला हुआ है, और रहने की जगह भी एक मेहरबान विधवा औरत के घर म मिली हुई है। वहा वह ढाई बरस से रह रहा है—

राशनकार्ड मिल गए, तो रोटी की दुकान पर जाकर पता लगा कि शहर की बकरी की मुरम्मत हो रही है, इसलिए रोटी नही मिलेगी, सिर्फ आटा मिलेगा। रैपापोट तजुर्बेकार था, उसने जल्दी से आटा ले लिया, और हरदत्त को बताया कि आटे को बेचकर वह रेल की टिकट भी खरीद सकेंगे, और रास्ते के लिए रोटी भी

यह 'रोटी' सूरजमुखी के बीजो से बनाई हुई कुछ टिकिया-सी थी, जो आमतौर पर जानवरो को डाली जाती हैं। पर पोलिश दोस्त ने बताया कि यह बहुत सस्ती भी होती है, और बहुत ताकतवर भी।

'अब चलो फिर सीधे स्टेशन पर चलें!' जब हरदत्त ने कहा तो उसका पोलिश दोस्त हस दिया 'इतनी जल्दी? टिकट खरीदते वक्त डाक्टर का पर्चा भी दिखाना पडता है कि हमे कोई छूत की बीमारी नही हैं' हरदत्त को भूख भी लगी हुई थी, और किसी सिरे पर पहुचने की तमन्ना भी थी, पर उसे डाक्टर के पर्चे वाली बात बडी असूल वाली लगी। दोनो वह रोटी टिक्की चबाते हुए डाक्टर के पास पहुचे तो उसने बताया कि पहले उन्हे जाकर 'जनता गुसलघर' मे गुसल लेना पडेगा। वहा उनके बदन और कपडे जाचकर एक पर्चा मिलेगा कि उन्हे कोई छूत लगी हुई है कि नही। उसके बाद डाक्टर अपना पर्चा देगा।

वह 'जनता गुसलघर' पहुचे तो पता लगा कि इधन की किल्लत होने से, बीस दिन के लिए गर्म पानी का गुसलघर बद है। उस वक्त हरदत्त को फिक्र हुआ कि अब बीस दिन इस बेदरो-दीवार की 'आवारा कैद' मे क्या बनेगा, पर उसके पोलिश दोस्त ने उसे हौंसला दिया, और आगे बढकर गुसलघर के मुनीम की मुट्ठी मे तीन रूबल थमा दिए। उसने जल्दी से पर्चा लिखा दिया कि दाना के कपडा मे कोई जू नही है और न उनके बदन पर कोई छूत की बीमारी का लक्षण है।

आगे डाक्टर ने जल्दी से मुआयना करके उन्ह सेहतयाबी का पर्चा थमा दिया तो दोना गाडी की टिकटें खरीदकर जम्बूल क राह पड गए।

साथी थोडी सी रोटी और रात का बचा हुआ सूप लेकर अपने काम पर चला गया, पर हरदत्त को सबसे पहले थाने मे जाना था, अपने पहुचने की इत्तलाह देने के लिए और स्थान पता लिखवाने के लिए, जिसके लिए उस औरत ने अपना पता लिखवाने की भी उसे इजाजत दे दी, और साथ ही कुछ बची-खुची रोटी भी खिला दी।

थाने की ओर जाते हुए—रास्ते मे एक जगह हरदत्त ने बहुत भीड देखी, तो पता लगा कि जो लोग रिफ्यूजी बनकर यहा आए हैं, यहा उन्हे रोटी के कूपन मिल रहे हैं। हरदत्त यह सोचकर—कि जाने फिर कूपन और रोटी खत्म ही न हो जाए, वह भी एक कतार मे खडा हो गया। घटे भर बाद उसकी बारी आई तो अफसर औरत को उसने बताया कि वह कल रात पहली बार जम्बूल मे आया है, काम की तलाश मे, तो उससे हिन्दुस्तानी होने का नाम सुनकर, उस औरत ने उसे साथ की कुर्सी पर बिठा लिया। कहने लगी 'तुम कैसे बुरे वक्त आए हो, जब जर्मनो ने लोगो को बडी मुश्किल हालत मे डाल रखा है। मैं जितनी भर तुम्हारी मदद कर सकती हू, कर देती हू। हम आमतौर पर एक हफ्ते के राशन के लिए कूपन देते है पर तुम्हे मैं दो हफ्ता के दे देती हू। साथ ही उसने कहा कि अगर तुम्हे पैसो की जरूरत है, तो वह भी दे सकती हू। उस वक्त हरदत्त को पैसे मागते हुए शर्म आई। कहने लगा मेरे पास अभी पैसे हैं।'

वह कूपन लेकर जाने लगा, तो उस अफसर औरत ने पूछा, "अब कहा जाओगे?" और जब हरदत्त ने बताया, 'पहले थाने मे जाकर रहने का ठिकाना लिखवाऊगा, फिर कोई काम तलाश करने जाऊगा,' तो उस औरत ने थाने मे टेलिफोन करके किसी को उसकी मदद करने के लिए कह दिया।

रास्ते मे रोटी की दुकान आई तो हरदत्त ने सोचा कि उसके लौटने तक दुकान बद ही न हो जाए, इसलिए पाच कूपन देकर उसने रोटी ले ली। यह दो किलो और ढाई सौ ग्राम रोटी थी। पर जब वह रोटी उठाकर चलने लगा, तो दुकान वाली यहूदी औरत ने शोर मचा दिया पकडो पकडो। यह आदमी दुकान मे से रोटी उठाकर भाग रहा है।' हरदत्त ठिठककर खडा हो गया। उसने सोचा था कि कूपनो पर मिलने वाली

रोटी सरकार की ओर से मिलती है उसने सारी रोटी फिर दुकान के काउंटर पर रख दी। वह यहूदी औरत जल्दी से रोटी को उठाकर परे रखती हुई गालियां बकती हुई बोली 'तुम्हारी रोटी के पैसे मुझे तुम्हारा बाप देगा ?'

हरदत्त की आखें भर आइं। उसे वह वक्त याद आया, जब मौलाना चोग मे, रूस की सरहद चीरने के वक्त वह झूमकर गा उठा था—'राझा जोगीटा बण आया इस जोगी दी की वे निशानी, हत्थ विच्च तसबी अक्ख विच्च पाणी ' और इस वक्त सहज ही उसके मुह से निकला, 'इस जोगी दी की व निशानी, कन्न विच्च गाला अक्ख विच्च पाणी '

और वह रोटी की दुकान की ओर से मुह फेर कर सोचने लगा—इस लोकगीत वाले राझे के कान म वाले थे और आख मे पानी था पर आज का लोकगीत कौन लिखेगा—जब कान की बाले कान की गालियां बन गए हैं

17

राटी की दुकान पर खडे हुए उसे रोटी खरीदती हुई किसी औरत ने बताया था कि उस जैसे लोगो को रोटी के कूपनो के साथ पैसे भी मिलते हैं, उसने गलती की थी कि कूपन ले लिए, पर पैसे नही लिए। और उस औरत ने अपने पास से दस रूबल उसे दे दिए थे—रोटी खरीदने के लिए।

थाने मे हमेशा की तरह बहुत भीड लगी हुई थी, पर वह हैरान हुआ, जब भीड मे से उसे खोज कर किसी ने उसका नाम पूछा, और फिर अन्दर ले जाकर, उसका नाम पता दर्ज करके, उसे 'बे वतन लोगो को रहने की इजाजत' वाली पर्ची दे दी। साथ ही एक और पर्ची 'जम्बल डिस्टिलरी के डायरक्टर' के नाम दे दी, उसे काम देने के लिए।

वह जब रोटी वाला थैला अपनी मकान मालकिन के घर छोडने गया, तो वह घबरा गई। पर हरदत्त के साथ जो बीती थी, सुनकर हस दी, 'मैं डर गई थी कि हाय राम ! तुम यह रोटी कहा से चुराकर ले

आए '

डिस्टिलरी वहा से कई मील दूर थी, पर हरदत्त को किसी भी तरह काम खाजना था, इसलिए रास्त म दम ल लेकर जब वह ठिकान पर पहुचा शाम के छह वज गए थे। डायरेक्टर ने पर्ची पढी, साथ ही हडियो के ढाचे जैसे हरदत्त का सिर से पाव तक देखा, और खीझकर कहन लगा "यह काम तुमस नही हा सकता पर उसी कागज पर कुछ लिखकर उसे कागज पकडा दिया 'जा ा, ओवर सियर कूतसाव से पूछ ला, अगर उसके पास तुम्हारे लायक कोई काम हो।'

अब और शाम हो गई थी। न ओवरसियर से मिलने का वक्त था, न लौटकर कई मील चल कर जान का। पर उसकी टूटती हुइ टागा म लपककर दो कदम उठान की हिम्मत आ गई, जब बाहर के दरवाजे के पास उसे किसी न बताया कि वह सामने कामरेड कूतसोव खडा है।

कूतसोव बडे मजबूत डीलडौल का और हसते चेहर वाला आदमी था। बोला, 'तुम हिदुस्तान स आए हो ? तुम्हे जरूर हमारे साथ बेपनाह इश्क होगा। हमे मशकूर होना चाहिए' और उसने अपने दफ्तर की एक औरत को बुलाकर वहा नताशा ! तुम्हारी ब्रिगेड मे कोई मद नही है। तुम लडकिया इसे देखकर बहुत खुश हागी। कल से कामरेड हरदत्त तुम लोगा के साथ काम करेगा'—साथ ही हरदत्त से कहा, 'सुबह ठीक नौ बजे आ जाना।'

हरदत्त न बचन का सास लिया। पर पूछा, 'यहा रात को रहन की काई जगह नही है ?' कूतसोव कहने लगा, 'क्या नही, दफ्तर के तहखाने मे सो लेना।'

वह अधेरे तहखान मे उतर गया, जहा सोन के लिए भूसा बिछा हुआ था, और सिरहान के लिए कुछ इटें भी थी। हरदत्त न टागें फैलाकर ईंट के सिरहाने पर सिर रखा, ता उसके होठा पर हल्की-सी हसी आ गई। वह भी वक्त था, जब मैं छोटा-सा मदन हुआ करता था, और घर के चौबारे वाली निवार की चारपाई को छोडकर जमीन पर सोते वक्त सिरहान के नीचे इट रख लेता था कि सिर को ईंट के सिरहान पर सोने की आदत हो जाए '

तहखाने के अंधेरे में उसको एक साथ बिजली की तरह कौंध गई कि यह कौन सी शक्ति होती है, जो आने वाले समय की घटनाओं का पता लगा लेती है

वह नींद में करवट बदल रहा था, जब तहखाने में और छह आदमी आ गए। उन्होंने एक कोने में आग जलाकर कुछ पकाया और खाया। उन्होंने हरदत्त को एक ओर सोए हुए देखा, पर वहां कुछ नहीं। यह उसे बाद में पता लगा कि वह भी इसी फैक्टरी में काम करते थे, और चोरी करने लगे थे, जिससे उन्हें कैद हो गई थी। उस रात वह कैद से छूटकर आए थे, और पुरानी जगह पर आकर चोरी से आ गए थे।

सुबह डिस्टिलरी के आंगन वाले छोटे से नाले में हाथ मुंह धोकर हरदत्त दफ्तर के दरवाजे के सामने जा खड़ा हुआ। कल रात को उसने कुछ नहीं खाया था, पर भूख के कारण उसकी आंतें और भी कुलबुलाने लगीं, जब उसने देखा कि बाकी के कामगर दफ्तर की कैंटीन की ओर जा रहे हैं। उसे अभी कैंटीन में जाने वाली पर्ची नहीं मिली थी, इसलिए वह हाजिरी लगवाने के लिए दरवाजे के पास खड़ा रहा। नताशा आई तो हंसकर उससे पूछने लगी 'तुमने कुछ खाया है?' हरदत्त ने ना में सिर हिलाया, तो वह और हंस दी 'तुम्हें तो अभी पर्ची नहीं मिली, तुमने कैंटीन में से रोटी कैसे खा ली?' और नताशा ने कैंटीन में जाकर, अपनी पर्ची पर मिली रोटी और सूप बांटकर, हरदत्त के सामने रख दिया।

लड़कियों वाले इस ब्रिगेड का काम, फैक्टरी के निर्माण के लिए, नजदीक के दरिया पर जाकर उसके किनारे से रेत लाना था। उन्हें एक ठेला मिला हुआ था, रेत ढोने के लिए। दरिया के किनारे पर जाकर सभी लड़कियों ने अपने-अपने बेलचे उठा लिए। जब एक बेलचा हरदत्त ने भी उठा लिया, तो नताशा जल्दी से कहने लगी— न,हीं नहीं, कामरेड हरदत्त! तुमसे बेलचा टूट जाएगा' और वह हंसकर कहने लगी 'तुम कुछ सूखी झाड़ियां चुन लाओ, यहां आग जलाने के लिए।'

काफी सर्दी उतर आई थी। काम भले ही मुशक्कत का था पर रेत ढोते हुए सब लड़कियों के हाथ पैर सुन्न से हो जाते थे, और उन्हें थोड़ी थोड़ी देर बाद आग पर हाथ पैर तापने पड़ते थे। हरदत्त घास पत्ते बटोर-

कर लाया, आग जलाई, पर फिर हाथ मे वेलचा उठा लिया 'यह लडकिया काम करती हो और मैं खाली वैठकर आग तापता हुआ अच्छा लगता हू ?'—उस वक्त नताशा ने उसके हाथ से वेलचा लेत हुए कहा, 'दा चार दिन आराम कर लो, जिस्म मे जान पड जाएगी, तो जितना जी मे आए काम कर लेना !'

जव कुछ दिना वाद इस रहम दिल नताशा के वारे मे हरदत्त न कुछ ज्यादा जाना, तो उसके मन मे उदासी उतर गई कि उसका खाविंद एक दिन अचानक उसे छाडकर चला गया था, और वह अपनी छाटी-सी वटी का पालने के लिए यह मेहनत मजदूरी करने के लिए अकेली रह गई थी

हरदत्त का काम हल्का था, पर हफ्ते बाद कोहरे जैसी सर्दी पडने लगी तो उसके दात बजने लगे। अपने देश म उसने विजली का काम सीखा हुआ था इसलिए ओवरसियर ने उसे फैक्टरी के भीतर, उस काम पर लगा दिया। उस काम मे ज्यादा पोलिश लोग थे जव उन्ह पता चला कि हरदत्त हिदुस्तानी है तो काम के बाद वह अकसर उसे घेर कर वैठ जाते और पूछते उसने महात्मा गाधी को देखा हुआ है ? सुभापचन्द्र वास जमनी क्या चला गया ?' और वह हरदत्त से महात्मा वुद्ध, विवेकानद, टैगोर और नेहरू के वारे मे कई सवाल पूछत रहते। और उन्होने जब जाना कि हरदत्त रात का तहखान मे सोता है, तो वह उसे अपन साथ रहन के कामगरा के वार्डिंग हाउस मे ले गए। यह वोर्डिंग हाउस जसे लेवर कम्प की वरको की हू-व-हू नकल था पर एक फक था—कि इसके गुसलखान मे शीशा लगा हुआ था। हरदत्त ने तीन वरस बाद शीशे मे अपनी शक्ल देखी और देखा—छब्बीस बरस की जवान उम्र वाले चेहरे की जगह, उसके कधा पर, किसी सूखे हुए और झुरिया वाले बूढे आदमी का चेहरा लगा हुआ है

बिजली की मरम्मत वाले काम मे, हरदत्त को कई इमारतो की ओर भी भागना पडता था, और खम्भो पर भी चढ़ना हाता था। इसलिए लगभग तीन हफ्तो बाद फोरमैन ने साचा कि हरदत्त को कोई कम थकान वाला काम मिलना चाहिए। उसन उसे वडे इजीनियर के पास भेजा,

हरदत्त के बदन पर अभी तक वही कपड़े थे जो जेल में से रिहा होते वक्त उसने पहन रखे थे। कपड़ा सिर्फ काले बाज़ार में से मिल सकता था इसलिए उसकी कीमत चुका पाना उसके बस की बात नहीं थी।

1944 का नवम्बर आ गया। इन्क़लाब की सत्ताइसवीं वर्षगांठ मनाई जाने वाली थी, इसलिए कामगरों को उस दिन की छुट्टी मिल गई, पर जलसे में जरूरी शामिल होने का हुक्म भी मिला। जलसे की लम्बी लम्बी तकरीरों के बाद, जिन कामगरों ने प्रोडक्शन बढ़ाया था, उन्हें अब कुछ गज कपड़ा, या बूट, या कुछ लिटर तेल जैसे इनाम बांटे गए तो हरदत्त को फर का कालर इनाम में मिला। यह कालर ओवरकोट के ऊपर से पहनकर गरदन को गर्माने के लिए था, पर उसके पास अब कोट कोई न था, सो इस दुखान्त पर हंसकर उसने कालर को भी दियो में

सभालकर रख लिया। पर यह हरदत्त की पौन चार बरस की जिन्दगी म पहला दिन था—जब उसा जश्न का लजीज खाना बगकर देगा

1945 चढ़ा तो नाज़ियों के हारने के आसार दिखाई देने लगे। अब पोलैंड और युक्रेन के लोग, और दक्षिणी रूस के लोग, जो जर्मन हमले के दौरान यहां पनाहगीर होकर आए थे, घरों को लौटने लगे। पोलिश कामगरों ने काम के माहौल को गुनगवार बना रखा था। वह चले गए तो मज़दूर घर का रहन-सहन भी बहुत घटिया हो गया, और वहां चोरी जैसी घटना भी आए दिन होने लगी। हरदत्त ने अब अपने रहने के लिए बाहर कोई जगह खोजनी चाही, इसलिए खोज खोजकर उसे एक विधवा औरत के कच्चे घर मे पनाह मिल गई, जहां वह और उसकी एक बेटी नऊरा रहती थी, जिनमे से सिर्फ नऊरा काम करती थी, और छह सौ ग्राम रोटी ले सकती थी। इसलिए वह दोनों खुश हुई कि हरदत्त के आने से घर का राशन बढ़ जाएगा।

इस कच्चे घर की रसोई घर की सबसे खुशनुमा जगह थी जहां बनी हुई घर की साग भाजी खाकर हरदत्त की सेहत म कुछ फर्क पड़ने लगा। अब उसकी तनख्वाह म से भी कुछ पैसे बचने लगे थे, जिनसे उसने एक पुराना कमीज पायजामा भी खरीद लिया, और एक पुराना जूता भी।

कच्चे घरों की बस्ती से कारखाने मे जाने का और कारखाने से बस्ती मे लौट आने का एक नियम-सा बन गया था, पर हरदत्त के भीतर का अकेलापन कभी-कभी उसके अन्तस को सालने लगता। वह उदास होकर सोचता—उसने पुराने कपड़े तो खोज लिए पर वह अपना पुराना दोस्त कहीं नहीं खोज सका

सोफिया और नताशा जसी मेहरबान औरतें उसने जरूर देखी थीं पर सफदर जैसे दोस्त के लिए वह कभी-कभी तरस जाता था।

वह जानता था कि वह पुलिस की निगरानी म है इसलिए काम से ताल्लुक रखने वाली बात के बिना वह किसी से दुआ-सलाम करने से भी सकोच करता था। पर एक दिन उसे खुशी भी हुई हैरानी भी, जब डिस्टिलरी के प्लानिंग सैक्शन के ईवान प्रगारिविच लैवचकों ने बड़े उत्साह से उसे बुलाया और हिन्दू फिलासफी के बारे म कई बातें पूछता रहा।

ग्रैगोरिविच यूक्रेन का था। जार की फौज मे अफसर था, जब पहली बडी जग के दौरान उसकी एक टाग मे गोली लग गई थी इन्कलाब के वक्त उसे पकडकर साइबेरिया भेज दिया गया था जहा से लौटकर वह अब मास्को नही जा सकता था, जहा उसकी बेटी रहती थी। उसकी बीवी मर चुकी थी, और इकलौता बेटा लापता हो चुका था। यह ग्रैगारिविच की तन्हाई थी जिसके साथ हरदत्त को कुछ अपनत्व सा महसूस होने लगा था।

वहा एक हादसा सा हो गया, जब ट्रेड यूनियन की सदर, एक जवान और खूबसूरत औरत साशा सैक्लेरैनको उस पर अचानक मेहरबान हो गई। हरदत्त ने सुना हुआ था कि वह काले बाजार मे वोदका बेचकर खूब पैसे कमाती है, इसलिए वह साशा की मेहरबानी से घबरा गया।

एक दिन साशा ने कहा कि हरदत्त बहुत बढिया कामगर है, इसलिए उसे पार्टी के स्टडी सकल मे आना चाहिए। यह मीटिंग हर वहस्पतिवार होती थी। यह बात जब हरदत्त ने ग्रैगोरिविच को बताइ वह हसने लगा 'तुम्हे जरूर जाना चाहिए, यह तुम्हारी तरक्की का रास्ता है' पर एक ही बार जाकर हरदत्त ने देख लिया कि बडी सतही सी बातचीत के बिना, वहा कुछ नही होता, तो वह मीटिंग मे जाने से गुरेज करने लगा।

इस पर साशा ने उसके बेटे को अग्रेजी पढाने के लिए हरदत्त से कहा। पर वह जब साशा के घर गया, उसने साशा के जाल को सूघ लिया, और उसके लिए दावत जैसे सजाए हुए मेज का शुक्रिया करके लौट आया।

हरदत्त ने अपने कधे से लिपटी हुई साशा की बाह को भले ही बडी शाइस्तगी के साथ परे हटाया था, पर कुछ दिनो बाद उसने देखा कि साशा की नाराजगी उसे बडी मुश्किलो की ओर धकेल रही है—शायद किसी काले अधेरे की ओर

18

अधेरे के घिर आए बादलो मे से एक दिन अचानक एक किरण फूट पडी। हरदत्त अपने ध्यान मे कारखाने की ओर चला जा रहा था, कि एक गली

मे, एक सुख किरण जैसी जवान लडकी उनके सामने आ खडी हुई। कहने लगी— कामरेड हरदत्त ! मेरा खयाल है कि तुम रहन के लिए कोई जगह ढूढ रहे हो।"

"वैसे तो जहा रहता हू, ठीक है, फिर भी तलाश कर रहा हू' हरदत्त ने कहा, तो वह लडकी कहने लगी मेरा बाप घोडो के अस्तबल मे सइस है, हफ्ते मे एक बार घर मे आता है छुट्टी वाले दिन। बाकी छह दिन मैं और मेरी मा अकेली होती हैं। इसलिए हमारे घर मे तुम्हारे लिए खुली जगह होगी '

हरदत्त हस सा दिया 'तुमने खुली जगह की बात तो बताई, पर यह बताया ही नही कि घर किस जगह पर है ? तुमने अपना नाम भी नहीं बताया

वह किरण सरीखी शरमाकर हस दी 'तुम जाख उठाकर देखो, तो तुम्हे पता लगे घर उसी गली म है, जहा तुम रहते हो। मेरा नाम नाता है—नतालिया मार्कोविना लारियोनोवा। रविवार को आकर घर भी देख जाना और मेरे मा-बाप से भी मिल लेना ।'

'अच्छा' कहकर हरदत्त काम पर चला गया। पर यह बात उसे याद नही थी, जब अगले रविवार उसने रविवारी बाजार म से कुछ मिर्चे प्याज और मछली खरीदी, पर मकान मालकिन के रसोई घर मे बठकर जब पकाने लगा तो देखा—'चूल्हा जलाने के लिए ईंधन नहीं था। उस वक्त उसे खयाल आया कि नाता का घर नजदीक है, शायद उनके घर मे इधन होगा। और साथ ही खयाल आया कि उसने रविवार को अपने घर बुलाया था

नाता की मा भी नाता की तरह खूबसूरत, भूरी आखो वाली और खुशमिजाज औरत थी। उसने हरदत्त को चाय पिलाई और हिदुस्तान की बातें करती हुई, उसके मां-बाप और बहन भाइयो की छोटी छोटी बातें पूछती रही। अपना दुख भी कहती रही कि उसका एक ही बेटा था, पर जग मे मारा गया

नाता का बाप जब घर आया, वह भी हरदत्त से तपाक से मिला। बताता रहा कि वह कुलाक है, बहुत आज़ाद-तबियत। और उसने बताया

कि कुलाक बहुत जिगर वाले लोग होते है, असली जमीदार। इसलिए इन्कलाब के वक्त वह अपनी जमीन नही छोडना चाहते थे। पर सरकार ने जबरदस्ती जमीन छीन ली, और उन्हे घर से बेघर कर दिया। वह अमीरो की गिनती मे आते थे, इसलिए इन्कलाबियो ने बहुतो को कत्ल कर दिया, पर कुछ थोडे से थे, जो मारे मारे फिरते हुए बच गए

मजहब की और सियासत की बाते करते हुए हरदत्त कई जगह नाता के बाप के साथ मुतफिक नही हुआ, तो भी उसने पहली बार किसी के घर में अपने आपको घर का आदमी सा महसूस किया। उसे नाता और उसके मा-बाप अच्छे लोग लगे।

हरदत्त ने अपनी रिहायश नही बदली, पर उसका काम के बाद का वक्त नाता के खयालो से भरा रहने लगा। नाता दिन भर लोगो के कपडो की मरम्मत करते हुए और सिलाई करते हुए शाम के वक्त का इतजार करने लगी—जब हरदत्त के आने पर वह गिटार बजाएगी, और लोक गीत गायेगी

इस दोस्ती के धागे दोनो के मन मे लिपटने लगे थे कि एक दोपहर कारखाने के दुकान मैनेजर ने उसे बुलाकर एक कागज पर दस्तखत करने के लिए कहा। यह सरकार के ऋण पत्र थे, जो लोगो को मर्जी से खरीदने होते थे। हरदत्त ने जब एक हजार रूबल की रकम के सामने अपना नाम भरा हुआ देखा, तो घबराकर कहने लगा 'मैं इतनी बडी रकम नही दे पाऊगा।'

मनेजर ने उसके साथियो के नामो के आगे भी बडी रकम लिखी हुई दिखाइ, और कहा 'यह रकम इक्टठी नही देनी होगी, हर महीने तुम्हारी तनख्वाह मे कटौती करके पूरी कर ली जाएगी।'

पूरी तनख्वाह से जिस तरह की रोटी नसीब होती थी, हरदत्त जानता था। इसलिए कहने लगा 'तनख्वाह म भी कटौती हो गई, तो खाऊगा क्या ?'

मनेजर ने मेज पर जोर से एक मुक्का मारा 'सो तुम्ह इस मुल्क की खुशहाली से कोई वास्ता नही है। जाहिर है कि तुम इन्कलाब के दुश्मन हो।'

और हरदत्त ने सिर झुकाकर 'मर्जी से' कागज पर दस्तखत कर दिए।

यह एक नई उदासी घिर आई थी, इसलिए नाता ने इस उदासी को बाटते हुए हरदत्त से कहा कि उसके साथ वह विवाह करना चाहेगी।

उस वक्त हरदत्त अट्ठाईस बरस का था, और नाता छब्बीस बरस की। और दोनो ने भरी जवानी के दरिया मे—अपने-अपने गुज़रे वक्त की उदासियां बहा दी '

यह बरस 1946 का था। फरवरी की छब्बीस तारीख विवाह के लिए पक्की हो गई, तो नाता ने बाहों मे सारा जादू लपटकर यह बाह हरदत्त के गले म डाल दी 'देखो ! मेरे पिता का मन रख लो। उसका मन चाहता है कि तुम क्रिश्चियन बन जाओ

हरदत्त अपने हाल पर जोर से हसने लगा, तो नाता घबरा गई। हरदत्त ने कहा 'प्यारी प्यारी नाता ! मैं जिन्दगी पर हस रहा हूं कि उसे मुझे कितने रग दिखाने है ? मैंने एक हिन्दू ब्राह्मण के घर जन्म लिया। जवान हुआ तो कम्युनिस्ट बन गया। फिर बरतानवी सरकार से छुपना पडा, तो मुसलमान बनकर रोजाना पाच नमाजें पढता रहा। और अब जिसे प्यार किया है उसका बाप चाहता है कि ईसाई बन जाऊ '

26 तारीख की आधी रात थी, जिस वक्त एक पादरी ने आकर विवाह की रस्म पूरी कर दी, और दोनो को एक-दूसरे की रोशनी मे बिठाकर खुद जिस तरह अधेरे म से आया था, अधेरे में चला गया।

रहने के खयाल से हरदत्त ने पहली बार नाता के घर को देखा, तो पूछा 'पर हम सोएगे कहा ?'

इस एक कमरे वाले घर म जहा रोटी पकाई जाती थी, सभी वही पर सोते थे इसलिए नाता ने कहा 'जहा सब लोग सोते है, और कहा ?'

उस वक्त हरदत्त ने जाना कि इस सारी बस्ती मे सब लोग इसी तरह रहते और जीते हैं इसलिए नाता उसके मन की हालत की थाह नही पा सकती।

और उस रात हरदत्त के कहने पर नाता ने भूसे वाली कोठरी को धोकर अपनी और हरदत्त की शगुनो वाली चारपाई बिछा दी

9 मई को पार्टी की जिला कमेटी ने जब कामगारो और मजदूरो को

अच्छे काम के प्रमाण पत्र दिए, हरदत्त को भी एक प्रमाण पत्र मिला, और साथ ही कोट का गम कपडा भी। पर कुछ हफ्तो बाद जब वह रात करीब बारह बजे वाली शिफ्ट पर गया तो इमसे पहली शिफ्ट के खरादिय फार मैन शौमातको ने उसे बुलाया। वह घबराया हुआ लग रहा था। कहने लगा पार्टी की जिला कमेटी म अभी अभी एक आडर भेजा है—अडतालीस ट्रक-बाल्टस बनाने का। यह सुवह उन तक पहुच जाने चाहिए। "पर किस तरह ?" हरदत्त न कहा, और बताया 'आप जानते है कि इस काम के लिए जा सडसी चाहिए वह टूटी पडी है। आज रात की शिफ्ट वाला लुहार भी नही आया कि उसकी मरम्मत हो सके'

खराद के हथियार पूरे नही थे तो भी हरदत्त न सारी रात लगाकर अटठारह बोल्टस तैयार कर दिए। पर सुबह वह जवाबदेह था कि पूरे अडतालीस क्यो नही तैयार हुए ?

'क्यो' का जवाब सार अफसर जानते थे, पर उनका 'क्यो' के साथ वास्ता नही था। 'क्यो' का वास्ता सिफ टूटी हुई सडसी के साथ था, और वह मुह से बोल नही सकती थी।

उस वक्त हरदत्त का लगा कि वह भी एक टूटी हुई सडसी की तरह है, जो कभी मुहसे नही बाल पाएगा

इस तरह मुह बद किए हरदत्त के कुछ दिन गुजर गए पर एक दिन शाम को जब वह काम से लौटा, उसकी बीवी नाता की एक सहेली आई हुई थी, जो नाता के पास बैठकर रो रही थी। हरदत्त जानता था कि नाता की वह सहेली पास के गाव मे रहती है जहा वह लोग खेती-बाडी पर गुजारा करते हैं। उसने बताया कि उस गाव के लाग भले ही मवेशी नही रख सकते, पर सरकारी कानून के मुताबिक उन्हे जरूर रखने चाहिए, और टैक्स के तौर पर सौ किला दूध, पद्रह किलो मक्खन, और कुछ मास सरकार को देना चाहिए। इसलिए बहुत से परिवार मिलकर एक बैल खरीद लेते हैं, और उसे मारकर मास से टैक्स भर देते हैं। पर इस बरस अजीब मुश्किल आ पडी है। पहले की तरह उन्हाने इस बरस भी आलू बोए हैं। पहले हमेशा वह सरकार का आलू देते थे, पर इस बरस इस्पैक्टर गेहू मागता है। वह कहता है कि आलू की बजाय गेहू वसूल करन का नियम

वन गया है। और नाता की सहेली डर से कापती हुई कहन लगी 'अब हम गेहू कहा से लाए ? हम लोगा न बहुत कहा कि अगल बरस हम आलू नहीं बोएग, गहू बाएगे, पर हमारी कोई नही सुनता। अब वह हमारी जमीन छीन लेंगे, और हम लेबर-कप मे डाल देंगे '

हरदत्त न लेनिन के विचारा को अक्षर-अक्षर पढ रखा था, उसके फलसफे की रूह को पहचानता था, इसलिए अपन दोस्त ग्रेगोरिविच के पास जाकर जब एसी हालता पर कुछ गुस्से मे बोलन लगा, ता ग्रेगारिविच हस दिया। कहने लगा 'तुम बहुत बोलन लगे हा हरदत्त ! तुम्हारा क्या बनेगा '

यह जम्बूल मे चुनाव के दिन थे एक दिन काम से लौटते हुए हरदत्त ने देखा कि एक बूढे कज्जाख न बहुत शराब पी रखी थी, इतनी ज्यादा कि उसस चला नही जा रहा था। पर दा जवान आदमी उसे गालिया बकते हुए घसीट रहे थे। हरदत्त से रहा नही गया, उसन दोना जवाना स कहा इसकी उम्र का लिहाज करा, बेचारे को घसीट क्या रहे हा' ता वह आगबबूला होते हुए कहने लगे चुनाव वाले वाड मे खडे खडे हम रात हाने लगी है, यही एक बूढा रह गया है जा वोट डालन नही गया। कल हम लोग जवाबदेह हाग कि एक वोट किस तरह कम हा गई—?'

हरदत्त जीभ को दातो तले दबाकर अपन राह चल दिया। पर उसका यह रास्ता अब अपनी बीवी नाता के पास पहुचकर एक दीवार के सामन रुक जाता था। यह एक नई दीवार थी, जो उसके और नाता के पैरा के आगे, दिन-ब दिन ऊची हाने लगी थी। नाता के बाप को उम्मीद थी कि उसका दामाद घर की गाय भी चराकर लायेगा, घर के पिछवाडे वाली जमीन म खाद डालकर कोई साग भाजी भी उगाएगा, और इधन के लिए उपले भी थापेगा। पर खराद के काम से थका हुआ आकर वह जब कोई किताब या अखबार पढने लगता, तो रोज के उलाहना की दीवार पर किसी न किसी तनज की नई इट रखी जाती और दीवार और ऊची हो जाती

नाता अपन बाप के रवैय से खुश नही थी, पर उसके आग बाल नहीं सकती थी। इसलिए चुप और उदास, हरदत्त की बाह स लगकर सो जाती थी

घर मे उठती हुई यह दीवार एक दिन सिर से ऊची उठ गई। जब कारखाने के कामगरा का सब्जी भाजी उगाने के लिए थोडी-थोडी ज़मीन बाटी गई। यह बटवारा उस साशा सिक्लेरैनको को करना था, जिसकी 'मेहरबानी' को एक दिन हरदत्त ने कबूल नही किया था, इसलिए हरदत्त जानता था कि इस बटवारे मे उसका हिस्सा नही हागा। जब यही हुआ तो नाता के पिता की नजरो मे वह बिल्कुल निकम्मा हो गया

नाता ने रोकर जब साशा सिक्लेरैनको से मिलने के लिए हरदत्त से कहा, ता वह मजबूर पैरो से साशा के पास चला गया, पर उसका बुझा हुआ चेहरा देखकर जब साशा का चेहरा चमक उठा, और उसन तनज से कहा 'कामरेड हरदत्त ! जमीन के यह टुकडे सिफ गरीब कामगरो के लिए हैं, तुमन एक अमीर बाप की बेटी से ब्याह किया है, तुम्हे क्या जरूरत है ज़मीन के छाटे से टुकडे की ' तो हरदत्त न जान लिया कि उसके भविष्य की झाली मे आग की कोई चिगारी पड गई है

यह 1947 के सितबर का महीना था।

हरदत्त को हर तीन महीन के बाद थाने मे जाकर बवतन आदमी के पासपोट' पर माहर लगवानी होती थी, पर इस बार जब मोहर लगवाने के लिए वह थाने के सामने खडा था, उसने एक अखबार मे पढा कि हिदुस्तान प द्रह अगस्त वाले दिन आज़ाद हो गया था

खुशी का एक कपन हरदत्त के माथे मे से गुजरता हुआ उसक हाथो की उगलियो म उतर आया—वहा, जहा उसने अपने बेवतन होने का पासपोर्ट पकडा हुआ था

हरदत्त ने एक बार पासपाट की आर देखा, फिर एक बार थान की आर, और उसे लगा—जैसे पठानी इलाके के लोगो ने चिराग जलान के लिए एक सैय्यद मुल्ला को मारकर कब्र बना ली थी। वक्त न भी उसे एक कब्र मे इसलिए दफना दिया है कि उसकी कब्र पर उसके वतन की आज़ादी का चिराग जला सके

खराद क कारखान की ओर से, जब सभी कामगरा का निजी जरूरता के लिए साग सब्जी बोने के लिए जमीन मिल गई, पर हरदत्त को न मिली, तो मजदूर हक के लिए दी गई अर्जिया से यहा तक नौबत आ पहुची कि हरदत्त का काम स इस्तीफा देना पडा।

चुलक ताऊ जम्बूल स कोई नब्बे मील दूरी पर था, जहा खाद के कारखान म खरादिया की जरूरत थी। हरदत्त ने सोचा कि भल ही उसे जम्बूल मे बाहर जान की कानून की ओर से मनाही है, पर चुलक ताऊ जम्बूल के जिले मे पडता है, इसलिए एतराज नही हो सकता। पर उसने जब अपनी बीवी नाता को अपने साथ वहा जान के लिए कहा, नाता न सकोच से कहा—'मेरा यहा से दूर जाना मेरे बाप को अच्छा नही लगेगा।'

हरदत्त ने अपन अकेले रह गए पैरो की ओर एक बार देखा फिर सभलकर कहन लगा 'अच्छा, काम का भी अभी कोई भरोसा नही है। मैं काम खोज कर रहने की कोई जगह बना लू, फिर तुम्ह ले जाऊगा ' पर जब जाते वक्त उसने नाता को बाहो मे भरकर गले से लगाया, तो उसे लगा—जसे वह नाता के दिए हुए सुखो को अतिम बार गले से लगाकर देख रहा है

चुलक ताऊ म पहुचकर दो दिन बाद उसे एक उस फैक्टरी मे काम मिल गया, जहा पहली बार उसने बहुत बढिया खराद देखे। पता लगा कि किसी जर्मी मुआयदे के मुताबिक—यह मशीनें जमनी से आई थीं, तो भी हरदत्त के कारण हाथो ने जब उन्हे छुआ—मशीना के भीतर एक दोस्त से हाथ मिलान जैसा तपाक जाग उठा।

यहा का रहन-सहन खराब था। कामगरो के बोर्डिंग हाउस की हालत एक अस्तबल से भी गई गुजरी थी। सीले हुए दिना के बाद कभी धूप चन्नी तो कज़ाख औरतें बाहर जमीन पर बठकर एक दूसरी की जुए निकालने लगती। रात पडते ही मद घर की बनाई हुई वोदका पी-पीकर बेसुध हा जाना चाहते। खान के लिए काली राटी के बिना कही कुछ नही

मिलता था। सिर्फ एक गनीमत हुई कि कारखाने के एक बिजली कर्मचारी ने हरदत्त के सोने के लिए अपने घर के कमरे मे एक चारपाई डलवा दी।

पर यहा हरदत्त को पहले से ज्यादा पैसे मिलते थे—इसलिए उसके मन में आया—अगर नाता पास हो तो कैटीन की सूखी रोटी की बजाय, वह घर में कुछ बढ़िया पका सकते हैं

वह कुछ दिनो बाद जम्बूल जाकर नाता से मिल आता था, पर नाता के बाप का रवैया हर बार उसके पैरो का सोच मे डाल देता था। पर एक बार उसने हिम्मत बटोरकर नाता का मन की बात बताई, तो लगा—उसकी बात वही ज़मीन पर उसके पैरो के पास गिर पड़ी है

इस कारखाने मे कितने ही जापानी, जगी कैदी काम करते थे। रात को उन्हें जेल मे रखा जाता था, दिन मे काम पर लाया जाता था। उनके साथ बाकी कामगरो को बात करने की मनाही थी। हरदत्त सिर्फ इतना जानता था कि वह अपने जिस मुखिया के नीचे काम करते है, उसे अंग्रेजी आती है, और उसका नाम यामामोतो है। एक दिन जब फोरमैन वहा नही था वह यामामोतो किसी काम के बहाने हरदत्त वाली मशीन के पास आ खड़ा हुआ, और उसने दोनो हाथ जोड़कर कहा "नमस्ते!" बताया कि वह बुद्ध की जन्मभूमि मे आए हरदत्त के साथ कई दिनो से बात करना चाहता था। उसी ने हरदत्त को बताया कि सुभाषचन्द्र की एक हवाई हादसे से मौत हो गई है

रोज़ कुछ कुछ मिनट की मुलाकात होने लगी तो दोनो को दोस्ती का एहसास होने लगा। इसी दौरान एक दिन यामामोतो ने कहा कि उसकी दुभाषिया ओल्गा इस्साकोवना हरदत्त से मिलना चाहती है।

ओल्गा का घर जेल के पास ही था, जहा उसके बुलाने पर हरदत्त शाम का मिलने गया, तो ओल्गा ने बताया कि उसने मास्को की ओरियंटल स्टडीज़ की इंस्टीच्यूट मे जापानी सीखी थी, और उसकी एशियाई मुल्को म बड़ी दिलचस्पी है

ओल्गा और हरदत्त चाय पीते हुए छोटी छोटी बाते करते रहे, पर जब ओल्गा ने जाना कि हरदत्त को रूसी के अलावा अंग्रेज़ी, उर्दू और हिन्दी भी आती है, कुछ फारसी भी, तो उसका चेहरा चमक उठा। कहने

लगी ' फिर मैंने ठीक ही सोचा था। तुम खराद के काम में यूं ही वक्त गवा रहे हो। हमारे मुल्क को यह जुबानें जानने वालों की बडी जरूरत है, तुम्हें आरियंटल स्टडीज की इंस्टीच्यूट में काम करना चाहिए। मैं अभी तुम्हारी ओर से अर्जी लिखती हू, और डायरैक्टर को भेज देती हू "

हरदत्त को कोई आस नही बधी पर दूसरे दिन जब ओल्गा ने उसकी ओर से अर्जी लिख दी, हरदत्त ने दस्तखत कर दिए

हफ्ते गुजर गए, तो हरदत्त को लगा ओल्गा को अपने मुल्क की जरूरतों के बारे में गलतफहमी हुई है। उसे अपनी छाती में कोई सपना नही पालना चाहिए। पर उसकी छाती में उसके सास धडकने लगे, करीब महीने बाद, अचानक डायरेक्टर का खत आ गया कि वह इंटरव्यू देने के लिए मास्को में आ जाए।

यह आठ बरस बाद वह घडी थी सपनों से भरी हुई, जो हरदत्त ने 1914 में रूस की जमीन पर पाव रखते वक्त देखी थी।

चूकि ताऊ में आए उसे तीन महीने भी नही हुए थे, इसलिए मास्को जाने की इजाजत अभी यहा से नही मिल सकती थी, वह जम्बूल के रजिस्ट्रेशन दफ्तर से ही मिल सकती थी। वहा जाने में, इजाजत लेने में, फिर मास्को जाकर लौटने में उसे कई हफ्ते लग जाते, इसलिए अब काम से इस्तीफा देने के सिवा चारा नही था। कारखाने के सुपरवाइजर ने उसे समझाया कि इस तरह का काम उसे फिर नही मिल पाएगा सुपरवाइजर ने खुमारी हुई आवाज में उसको यह भी समझाया कि आगे से इस तरह के कामों की उसे जरूरत ही नही पडेगी, वह चिन्ता क्या करता है ?

मास्को के इल्मी महकमे में काम करने की तजवीज ने नाता को भी खुश कर दिया, और उसके बाप को भी मेहरबान कर दिया।

रजिस्ट्रेशन दफ्तर ने उसकी दरख्वास्त ले ली, और बताया—कुछ दिनों बाद इजाजत मिलने पर इतलाह कर दी जाएगी। हफ्ता गुजर गया कोई इत्तलाह न आई, वह फिर पता करने गया तो कहा गया, और कुछ दिनों में इतलाह मिल जाएगी।

इस तरह महीना गुजरने को आ गया तो एक अफसर ने बताया कि यह इजाजत जिस खास स्याही से लिखनी होती है वह एक खास हिफाजत

टिकट लेकर कहा—'यह टिकट तुम्हें वापिस मिल जाएगी, तुम इसी टिकट पर जा सकोगे, पर पहले पासपोर्ट पर इजाज़त की मोहर लगवानी होगी। अगर इजाज़त न मिली तो यह टिकट ज़ब्त कर ली जाएगी—कि तुम गैर-कानूनी तौर पर जम्हूरियत से बाहर जा रहे थे।'

जिस टिकट से हरदत्त को अपने जिस्म पर पर उग आए लगे थे, वह पुलिस-अफसर ने छीनकर अपनी जेब में डाल ली, तो हरदत्त पैरों को घसीटता हुआ सा स्टेशन से बाहर आ गया।

वह शहर के थाना अफसर के पास गया, जिसने ज़ुबानी इजाज़त दी थी, पर जिस तरह ज़ुबानी इजाज़त दी थी उसी तरह ज़ुबानी-गलती कबूल कर ली।

और इजाज़त लिखने वाली वह खास-स्याही, जो एक बड़ी महफूज़ जगह पर पड़ी हुई थी, कभी भी गैर महफूज़ जगह पर नहीं आई

20

हरदत्त ने अपने खयालों के बिखरे हुए टुकड़ों को एक बार फिर से जोड़ा। ओल्गा से उसने सुना था कि भारतीय ज़ुबानों के मुतालयों का एक महकमा ताशकंद में भी है, जहां वह ज़ुबानें जानने वालों की ज़रूरत है। उसने सोचा कि जेलयाफ्ता लोगों का मास्को में जाना की मनाही है, पर ताशकंद जाने की मनाही नहीं होगी, क्योंकि मास्को तो सोवियत रूस की राजधानी है, पर ताशकंद सिर्फ एक रिपब्लिक उज़बेकिस्तान की राजधानी है। उसने हिम्मत बटोरकर ताशकंद की सेंट्रल एशियन स्टेट यूनिवर्सिटी को एक अर्ज़ी लिखी कि वहां वह उर्दू ज़ुबान बखूबी पढ़ा सकेगा।

जानता था—अर्ज़ी का जवाब आने में कई हफ्ते लग जाएंगे। यह भी जानता था कि उसे अब लौटकर चुलक ताऊ में छोड़ी हुई नौकरी नहीं मिलेगी। इसलिए वह कोई छोटा मोटा रोज़गार खोजने की फिक्र में था, कि नाता के बाप ने एक दिन अखबार पढ़ते हुए हरदत्त के हाथ में से अखबार छीनकर कहा 'तुम्हें खुदा की मार, उठाओ अपनी गठरी-पोटली,

और निकल जाओ मेरे घर से। तू निखट्टू हरामखोर, स्तालिन का गधा कहा म मरी वटी क पल्ल पट गया

नाता और उसकी मा रान लगी पर वह नाता के बाप के आगे जुबान नहा खाल सकती थी। और जिस भूसे वाली कोठरी का धो पोछकर हरदत्त न अपना कमरा बनाया हुआ था, उसम स अपनी गठरी-पोटली उठाकर वह घर म चल दिया। शहर म कही ठिकाना नही था इसलिए उसन प्रैगारिविच के पास जाकर दा राता क लिए पनाह मागी, और अगले दिन सुबह रेल-मजदूरा के दफ्तर म भर्ती हान चला गया।

सोवियत यूनियन मे रेल का महकमा फौजी महकमे की तरह काम करता है, इसलिए रेल-अफसरा के ओहदे भी फौज-अफसरो जैसे होते है। वहा रेल-मेजर न उस कहा कि रल पटरिया की मरम्मत वाले काम मे उसे साधारण मजदूरी मिलेगी तीन सौ या काम के मुताबिक चार सौ रूबल, यहा उस खरान के काम म जितने पसे नही मिल पाएगे। पर जिस वक्त हरदत्त न कहा कि उसे काम चाहिए भले ही झाडू लगाने का काम मिल जाए, तो मजर न उस उसी वक्त मरदूर भर्ती कर लिया।

रलवे लाइन के नजदीक रहने के लिए एक कोठरी लेकर हरदत्त कापते हुए पैरा स एक बार फिर नाता से मिलने गया 'मेरी जान! सिफ यह कहन के लिए आया हू कि आओ! आज बीवी खाविंद के रिश्ते को हम दोस्ती म बदल ल! मेरे पास तुम्हार लिए कोई अच्छा भविष्य नही है, और तुम्हारे घर मे मेरे लिए कोई वनमान नही है। हमारा मजहबी रस्म का विवाह यहा के कानून की नजर म विवाह नही इसलिए कानून को तलाकनामे की जरूरत नही है। पर हम उम्र भर दोस्त रहगे '

नाता न जब भरी हुई आखा से अपनी मा को बताया कि वह दोनो एक दूसर स अलग हा रहे हैं, ता मा न उठकर हरदत्त को गले से लगा लिया 'तुम मर बटे जैस हो, मैं नही जानती—कानून को क्या चाहिए, और क्या नही चाहिए पर तुम्हार दिन फिर जाए तो लौट आना

नाता न भी इकरार मागा कभी मिलन तो आया कराग न!'

और हरदत्त ने इस नाजुक स इकरार को अपनी रूह मे सभालकर, रिश्ता की सारी गाठे खाल दी

पटरिया की मरम्मत का काम जान-तोड था, पर हरदत्त का शिकायन नही थी। वह कुछ हैरान हुआ, जब कुछ हफ्ता बाद मेजर न उमे लुहार खाने मे भेज दिया। जहा बढिया लुहार का छह सौ रूबल मिलत थे, पर साधारण कामगर को सिफ दो सौ। हरदत्त फिक्रमद हुआ ता मेजर ने कहा, 'तुम्ह साधारण कामगर की तनख्वाह नही मिलेगी, तुम्ह एक खरादिए की तनख्वाह मिलगी—पाच।'

इस लाहे के काम म हरदत्त के कुछ हफ्ते गुजरे थे कि एक दिन मेजर ने बुलाकर कहा 'शहर की साबियत इमारत म अभी चले जाओ। वहा तुमसे मिलन के लिए कोई इतजार कर रहा है', वहा जाकर हरदत्त ने जाना कि ताशकद यूनिवर्सिटी ने उसे इटरव्यू के बुलावे की जो चिट्ठी डाली थी, उसे मिली नही थी। और अब सरेब्रियाकोव नाम का एक प्रोफेसर खासतौर पर पता करन आया था कि वह ताशकद यूनिवर्सिटी म काम करना चाहता है कि नही।

यह फिर वह घडी थी—जब हरदत्त की रगा मे लहू की हरकत तीखी हा गई

वह कभी कभी नाता से मिलने जाता था नाता खुश होती थी, पर एक दिन मा ने बताया कि उसके आन स नाता का बाप उनके कई दिन बडे मुश्किल बना देता है और हरदत्त ने अपनी तन्हा शाम तलाश दरिया के किनारो को सौंप दी

इसी दरिया के किनारे एक दिन वह जाने लगा था कि उसने देखा, रेलवे डिस्पसरी की आनिया कताएवा बडी मिन्नत से रेलवे ड्राइवर से थोडा-सा कोयला माग रही है, और वह आनिया को गालिया जैसे लहजे मे डाट रहा है। हरदत्त जानता था कि वह ड्राइवर रोज अपन लिए कितना कोयला चुगता है—इसलिए उसने गिलानी से मुह फेर लिया। पर दरिया की ओर जाते हुए उसके पैर कुछ सोच मे पड गए और चार कदम चल कर पीछे बडे लुहार कामरेड सीच की ओर लौट पडे, जिससे लुहारखाने की चाबी मागकर, उसन कोयला की एक बाल्टी भर ली, और डिस्पसरी मे जाकर आनिया को दे आया।

लकडी से बनी एक छोटी सी कोठरी रेलवे डिस्पसरी भी थी, और

आनिया का घर भी। एक दिन हरदत्त जब सिर-दर्द के लिए एस्प्रीन लेने गया—तो आनिया कुछ गुस्से से बोली 'मैं जानती थी तुम्हें सिर दर्द हो जाएगा। तुम रोज शाम को नगे सिर दरिया पर जाते हो, मैं रोज तुम्हें जाते हुए खिडकी म से देखती थी। तुम सिर पर कोई टोपी पहनकर क्यो नही जाते ? कोई मफलर ही सिर पर लपेट लिया करो।'

हरदत्त न हसकर कहा, 'फिर तुम मेरे सिर-दर्द का इतजार क्यों करती रही ? तुमने खिडकी मे से आवाज देकर सिर को ढापने के लिए क्या नही कह दिया ?'

उस दिन आनिया न हरदत्त को चूल्हे के पास बिठाकर चाय पिलाई, और कितन ही घटे बठने के बाद जब हरदत्त लौटा—उसे लगा, उसने कभी नही सोचा था, पर वह कितना अकेला था कितना अकेला

आनिया की जिन्दगी मुल्क की हजारो औरतो जैसी थी—कि जब जग के दिना मे वह फौजी नस बनकर चली गई थी, तो उसके लौटने तक उसके मा बाप नही रहे थे। उसके फौजी खाविंद को किसी और औरत से मोहब्बत हो गई थी, और उसने आनिया को तलाक दे दिया था

यह आनिया नाता से कही ज्यादा समझदार और सजीदा औरत थी, जिसका जिस्म नाजुक और रेशमी था, पर भीतर से वह लोहे की तार जैसी मजबूत थी। इस आनिया की मोहब्बत मे हरदत्त न पहचाना कि मोहब्बत की दीवानगी क्या होती है

पर इन खुमारी भरे दिना पर एक हादसा आज की तरह झपट पडा, जब एक शाम हरदत्त ने देखा कि उन्नीस नबर रेलवे यूनिट का एक बडा कज्जाख अफसर आनिया की केबिन मे बठा हुआ, उठने का नाम नही ले रहा था। हरदत्त वहा से लौटकर आया—तो पूरी दो शाम दरिया के किनारे एक पत्थर की तरह बैठा रहा। तीसरी सुबह आनिया ने पत्थर से हो गए हरदत्त को हिलाया तुम्हें गुस्सा बनता। वह आदमी पाच बच्चो का बाप है, पर मेरे उस डिस्पेंसरी मे से जान के लिए नही कह सकती, कोई अलग कोठरी खोज रही हू, वहा आने के लिए नहीं होगा '

बाद हफ्ते भर बाद आनिया ने रहने के लिए अलग कोठरी खोज ली, पर चार दिन नहीं गुजरे थे कि उस अफसर ने हरदत्त को बुलाकर कहा कि कारखाने में कोई खराद नहीं है, इसलिए फाइनेंस डिपार्टमेंट ने एतराज किया है कि उस खराद कारीगर को पांच सौ रूबल तनख्वाह क्यों दी जाती है। आगे से उसे एक साधारण मजदूर की दो सौ रूबल तनख्वाह मिलेगी।

हरदत्त ने ताव खाकर जवाब दिया, 'और इतने दिन फाइनेंस वाले इंतजार करते रहे कि कब आनिया रहने के लिए अलग कोठरी लेगी, और मेरी तनख्वाह घटाई जाएगी ?'

'चुप रहो !' अफसर ने कड़ककर कहा, 'यह बरतानिया की पार्लियामेंट नहीं है जहां कोई भी बकवास की जा सकती है।'

'फिर मैं दो सौ रूबल पर काम नहीं करूंगा।' हरदत्त ने कहा तो अफसर ने एक कागज सामने रख दिया—यह बात लिखकर देने के लिए।

हरदत्त ने कागज पर दस्तखत कर दिए और बेकार होकर लौटता हुआ आनिया के पास आकर कहने लगा, 'एम० जी० बी० वाले अब मुझे गिरफ्तार कर लेंगे' आनिया को उसका खौफ बेबुनियाद लगा, कहने लगी, 'कुछ नहीं होगा, तुम किसी और जगह काम खोज लो, मैं तुम्हारे साथ रहूंगी तुम्हारे पास।'

तालास जिले के एक गांव में ट्रैक्टरों का स्टेशन था जहां हरदत्त को काम मिल सकता था, वहां पांच खराद थे। पर वह दूसरा जिला था, जिसके लिए शहर से बाहर जाने की पुलिस से इजाजत लेनी थी। हरदत्त वह इजाजत लेने के लिए गया तो पुलिस अफसर हंस दिया, कहने लगा, 'मैं तुम्हें ताशकंद जाने की इजाजत लिख देता हूं। वहां यूनिवर्सिटी ने अगर तुम्हें नौकरी दे दी तो वहां रहने की इजाजत भी लिख दूंगा।'

हरदत्त हैरान हुआ कि पुलिस का उसके ताशकंद जाने वाला सपना या हुक्म किस तरह हो गया। पर यह पाबन्दी उसकी उम्मीद से बहुत बड़ी थी—इसलिए हरदत्त दूसरे ही दिन ताशकंद चला गया।

उसे अपने आने की इत्तला नहीं दी थी—इसलिए यूनिवर्सिटी पहुंचकर जब उसने डीन से मिलना चाहा तो उसे हैरानी नहीं हुई—जब बताया गया कि डीन पार्टी मीटिंग में है आज मुलाकात नहीं

हो सकती।

पर उसे हैरानी हुई—जब उसका नाम पता सुनकर उसे बैठने के लिए कहा गया, और बताया गया कि डीन उसका इंतजार कर रहा है।

डीन की मुलाकात उसके लिए तपाक से भरी हुई थी। डीन ने कुछ मिनटों की बातचीत के बाद उसे नौकरी की लिखित मजूरी दे दी, जो हरदत्त को वापस जम्बूल जाकर पुलिस थाने को दिखानी थी और पक्के तौर पर ताशकन्द रहने की इजाजत लिखवानी थी।

हरदत्त के लिए रात को रहने का बन्दोबस्त डीन ने दफ्तर में कर दिया था। रात का खाना खाने के लिए जब वह ताशकंद के बाजारों में गया—तो एशियाई माहौल ने उसकी रूह को जैसे हरिया दिया। उसने कुछ नान और कबाब खाए फिर देखा कि वहां बाजारों में देसी-साबुन भी बिक रहा है और सूती कपड़ा भी। यह नज़ारा जम्बूल के लोगों के लिए एक सपना होकर रह गया था। उसने जल्दी से साबुन की कुछ टिकियां और तीन कमीज़ों का फूलदार कपड़ा खरीद लिया—एक आनिया के लिए एक नाता के लिए, और एक नाता की मां के लिए

दूसरे दिन उड़ते हुए पैरों से हरदत्त जम्बूल लौटा। सबसे पहले आनिया के पास जाकर उसने अपनी नौकरी की खुशखबरी बताई, और फिर थाने में जाकर नौकरी की लिखित मजूरी उनके मेज पर रख दी। अफसर ने हंस दिया 'कामरेड हरदत्त! अब तुम ताशकंद जाने के लिए स्वतन्त्र हो। अब वहां रहने की मजूरी ताशकन्द रजिस्ट्रेशन दफ्तर से मिलेगी।'

यह रात आनिया और हरदत्त की वह सोती जागती रात थी—जिसका भविष्य इकरारों से भरा हुआ था कि हरदत्त को ताशकन्द जाकर जब रहने की जगह मिल जाएगी आनिया इस रेलवे डिस्पेंसरी के काम से इस्तीफा देकर उसके पास ताशकंद आ जाएगी।

अगले दिन हरदत्त ने अलविदा वाली मुलाकात में—नाता को भी कमीज़ का तोहफा दिया और नाता की मां को भी।

और ताशकन्द लौटकर जब उसने यूनिवर्सिटी में उर्दू और हिंदी पढ़ानी शुरू की, हैरान हुआ कि उसकी तनख्वाह एक हज़ार छह सौ बत्तीस रूबल

मुश्तरर हुई है

यह 1948 का फरवरी महीना था। धुप में और आनिया की याम्म म भरा हुआ। पर अप्रैल म सूरजी दि—उस न्नि और सूरजी हा उठे, तब वह आनिया का लेने क निए स्टेशन पर गया।

आनिया के ताशकन्द म शामिल हो। की दूतलाह याने में देकर, दोना ने सोचा था कि वह जल्दी ही विवाह कर लेंगे, पर इस सपन न उन्हें निक यहन-सा दिया जब पुलिस थाने वाला ने कहा कि ताशकन्द म रहन के निए जिस खास इजाजत की जरूरत होती है उस मिलन म कई महीने लग जाएंगे।

आनिया ताशकन्द म नही रह सकती थी—इसलिए उसने बाहर, कोई सौ मील दूर एक गाव म उसन एक नौकरी खोज ली, जहा रहकर वह हफ्ते की छुट्टी वाले दिन हरदत्त स मिल सकती थी। पुलिस न बताया था कि आने वाले सितम्बर तक आनिया को ताशकन्द म रहने की इजाजत मिल जाएगी।

अप्रैल महीने के तीसरे हफ्ते का सोमवार था, जिसकी पहली शाम वाला आनिया का मिलन हरदत्त क अंगों म अभी भी खुमारी की तरह लगा हुआ था कि डीन न उसे अपन कमरे म बुला भेजा। हरदत्त न गौर नही किया कि डीन का चेहरा कुछ उतरा हुआ है। उसने कुर्सी पर बैठते हुए से हाथ मिलाया। और डीन कहने लगा, "कामरेड हरदत्त! यूनिवर्सिटी तुम्हें कुछ दिना के लिए जम्मूल भेजना चाहती है। तुम जानते हो कि चीन के सिनकियाग इलाके में कई इगूज जम्बूल आकर बसे हुए हैं। यहा जो विद्यार्थी वह जुबान सीख रहे हैं हम कुछ महीना के लिए उन्हें जम्बूल भेजना चाहते है ताकि उनका उच्चारण सही हो जाए। तुम जम्बूल मे तीन चार बरस रह चुके हो इसलिए विद्यार्थियो के रहन का और खाने का बन्दोबस्त करने के लिए तुम्हें भेजना ही मुनासिब है"

कब जाना होगा?" हरदत्त ने पूछा तो डीन न टिकट उसके सामने रख दी। साथ ही ऊपर के खर्च के लिए नौ सौ रूबल भी। और कहा—शाम की गाडी से।

शाम की गाडी पकडनी थी, और इस दौरान आनिया को खबर देने

का कोई साधन नही था, इसलिए हरदत्त उदास हुआ पर उसने रात के आठ बजे वाली गाडी पकड ली।

अगली दोपहर जब जम्बूल का स्टेशन नजदीक आ गया, कडक्टर ने हरदत्त के डिब्बे मे आकर कहा कि उसकी केबिन मे उससे कोई मिलना चाहता है। हरदत्त कडक्टर के साथ उसकी केबिन म गया तो देखा वह एक मुसाफिर था, जो उसके साथ ही ताशकद से गाडी म चढा था।

'मुसाफिर' ने जेब मे से एम० जी० बी० का लाल काड निकालकर हरदत्त को दिखाया, और कहा, "पासपोट मेरे हवाले कर दो। तुम्हे जम्बूल स्टेशन पर उतरने की इजाजत नही है। हम यहा से सीधे आलमअत्ता जा रहे हैं।"

साथ ही अफसर ने जेब मे से पिस्तौल निकालकर कहा कि वह गाडी में से भागने की कोशिश न करे, कम्पाटमेंट मे आधे से ज्यादा मुसाफिर एम० जी० बी० के आदमी हैं।

जम्बूल स्टेशन जिस तरह आया था, उसी तरह गुजर गया। अफसर ने उसके खाने के लिए डाइनिंग कार मे से रोटी मगवाई पर हरदत्त के गले मे से निवाला नही उतर सका। अगली सुबह आलमअत्ता का स्टेशन आया, काजाखिस्तान की राजधानी का, जिसके प्लेट फाम पर एम० जी० बी० के कई गाईज उसके इतजार मे थे।

हरदत्त के गिद एक घेरा डालकर, उसे गाडी म से उतारकर, जब बाहर जीप म उसे धकेला गया, तीन अफसरो ने उसके दाए बाए और पीछे बैठते हुए अपने अपने पिस्तौल निकाल लिए

21

आनिया!

यह एक ही लफ्ज था जो हरदत्त के होठो से फिसल गया। और उसके घरती आवाज उसम ि

उस पूरी तरह होश नही रहा था कि

थी० क हैड-क्वाटर म पहुच गई थी, और किस वक्त एक कमर म वद करक उसे कपडे उतरवाकर, उसके जिस्म क अग अग की तलाशी ली गई थी, और किस वक्त उस एक कोठरी म डालकर कोठरी म ताला लगा दिया गया था

एक ही बात उसके माथे म घूमती रही कि आनिया का क्या होगा? वह बहुत गुस्से वाली है वह जब हरदत्त को बगुनाह कहेगी, तो उसका हशर भी यही होगा क्या वह भी इस वक्त जेल की किसी कोठरी म होगी?

दो हफ्ता स कोठरी म वद हरदत्त को जब एक अफसर क सामने पेश किया गया अफसर ने पिस्तौल निकालकर, मेज पर रखत हुए उसे कोन वाली कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। और कहा 'हरदत्त! तुम्हारी गिरफ्तारी सावियत काउटर इटलीजसी सर्विस की ओर स हुई है, जो दुनिया की सबस बढ़िया इटलीजस सर्विस है। पर तुम अक्तूबर इन्कलाब के खिलाफ जासूसी का अपना जुर्म कबूल कर लो तो तुम्हारी जान बच सकती है।'

अफसर की आवाज कुछ नम पड गई, उसन कहा, मुझे तुम जसे गरीब मुल्कों क साथ हमदर्दी है कि तुम लोग सान की चमक म आकर पश्चिम के जासूस बन जाते हो। अगर तुम अपना जुर्म कबूल कर लो तो मैं तुम्हारी जान बख्शवा दूगा। मैं तुम्हे सोचन क लिए वक्त देता हू—देखो! तुमने बरतानिया क लिए अपने देश के गरीब लोगों क साथ दगा किया है। तुम उस मुल्क के खिलाफ काम करते रहे जो तुम्हारे अपने देश के लोगों की मदद करना चाहता है। अब भी तुम पश्चाताप कर लो तो सोवियत हुकूमत तुम्हे माफ कर देगी

हरदत्त को फिर स कोठरी मे वद कर दिया गया। उसका खयाल था कि एम० जी० बी० को उसके खिलाफ सबूत इकट्ठे करने मे बहुत दिन लगेंगे। पर अगली पेशी म उसने जान लिया कि उसके मुकद्दमे की तयारी बरसो से हो रही थी। जब 1943 के अगस्त मे उसे रिहा किया गया था, सरहद पार करने की सजा पूरी करने के बाद, तब भी इस जासूसी के इल्जाम की तैयारी हो रही थी। वह जहा और जिसका भी कुछ दोस्त बना

था—उसकी छोटी से छोटी तफ्सील भी उनके पास दर्ज है। प्रगारिविच के साथ की गई छोटी सी छोटी बातें भी उनके सामने लिखी हुई हैं

उसकी ग़ैर-कानूनी कारवाइयों की सूची पढ़ी गई—

1 जम्बूल डिस्टिलरी के स्टडी सकल म जाने से उसन इन्कार किया था। सो जाहिर है कि वह सोवियत यूनियन मे सियासी अगवाई लेने के लिए नहीं आया था, बल्कि जासूस था।

2 उसने एक कुलाक की बेटी के साथ विवाह किया, जो साबित करता है कि वह इन्कलाबी नहीं है।

3 जब वह खराद का काम करता था, जिला कमेटी को अडतालीस बोल्टस चाहिए थे, पर उसन सिर्फ अठारह तैयार किए ताकि इन्कलाब के काम मे रुकावट पड जाए।

4 उसने कई बार सोवियत कर की, चुनाव की प्रणाली की, दवाइयों के इतज़ाम की ओर ट्रेड-यूनियन की नुक्ताचीनी की।

5 एक बार उसन जम्बूल से भाग कर मास्को जान की कोशिश की, ताकि राजधानी मे पहुच कर वह जासूसी का सिलसिला जारी रख सके।

6 एक रविवार—जब खूब पानी बरस रहा था, वह जम्बूल के रविवारी बाज़ार मे गया था। उस दिन सडकें पानी से और कीचड से भरी हुई थी। वापसी पर उसने डिस्टिलरी की एक क्लर्क औरत का भारी-सा एक थैला उठाकर उसकी मदद करनी चाही, क्योंकि वह जानता था कि वह बडे मेहरबान स्वभाव की है। पर इतना भार उठाने के बाद जब वह कीचड से भरे रास्ते से गुजर कर घर पहुचा तो उसके पालिश किए हुए बूटो पर कीचड का नाम निशान तक नहीं था। इससे साबित होता है कि वह किसी गरीब घर का नहीं, बल्कि किसी रईस घर का है क्योंकि मेहनत-मजदूरी करने वालो को बारिश और कीचड से अपने जूते बचाने नहीं आते। इसलिए वह किसी बिगडे हुए रईस का बेटा, इन्कलाबी नहीं हो सकता। वह ज़रूर एक जासूस है

हरदत्त ने कागजों की ओट से मुह फेर लिया, और कहना चाहा—अगर आप लोग सबूत इकट्ठे करने मे इतने ताक हैं तो आज तक यह सबूत क्यों नहीं खोजा कि जब मैं स्कूल की सातवीं जमात मे पढ़ता था, जब

मैं सिर्फ चौदह बरस का था, तब आज पचम के जन्म दिन पर, मैंने हिंदुस्तान को गुलाम बनाने वाले बादशाह की तस्वीर जलाई थी

22

पशिया के इस लम्बे सिलसिले में हरदत्त हर बार कहता है, वह समाजवादी निज़ाम का मुख़ालिफ नहीं है। नौकरशाही के तौर-तरीकों की नुक्ताचीनी करना अगर जुर्म है तो वह सज़ा भुगतने को तैयार है पर वह किसी का जासूस नहीं है इसलिए झूठे इल्ज़ाम को कबूल करके किसी भी कागज़ पर वह दस्तखत नहीं करेगा।

हरदत्त के जो पैसे पुलिस के पास जमा थे, उसके हिसाब में से वह अपने लिए फालतू रोटी खरीद सकता था, पर इसकी इजाज़त नहीं मिली। बताया गया कि वह सिर्फ माखोरका खरीद सकता है, रूसी तम्बाकू। वह सिगरेट नहीं पीता था, इसलिए तम्बाकू उसकी ज़रूरत की चीज़ नहीं थी, पर हरदत्त ने गुस्से में आकर बहुत सा तम्बाकू खरीद लिया और उसके सिगरेट बनाकर पीते हुए, सिर्फ काली रोटी को पानी में भिगा कर खाने लगा ताकि किसी को उसकी भूख हड़ताल का पता न चले। उसका ख्याल था कि इस तरह धीरे धीरे मरता हुआ वह कुछ हफ्तों के बाद जेल की इस कोठरी से अपने आप छूट जाएगा। पर दिन ब दिन कमज़ोर होते हुए उसे लगा कि उसके होश-हवास खोने लगे हैं, पर उसे मौत कहीं भी आस पास नज़र नहीं आ रही है

अगली एक नई पेशी के वक्त अफसर ने संतरी को बाहर भेज कर कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया, और हरदत्त के करीब बैठ कर कहने लगा, 'तुम हैरान नहीं हो कि आज तक मैंने तुम्हें कभी भी जिस्मानी यातनाएं नहीं दी। जहां तक मेरे ज़ाती यकीन का सवाल है, मुझे यकीन है कि तुम जासूस नहीं हो। पर अगर यह बात मैं ऊपर वाले अफसरों से कह दूं तो मैं उसी वक्त गिरफ्तार हो जाऊंगा। ठीक उसी कुर्सी पर बिठा दिया जाऊंगा, जहां तुम्हें बिठाया हुआ है। मैं इस तरह की अर्थहीन मौत नहीं

मरना चाहता। तुमने अगर हलफिया बयान के कागजो पर दस्तखत न किए, ता इसी कोठरी मे पडे पडे मर जाओगे। और या तो तुम्हे गाली मार दी जाएगी। पर अगर तुम दस्तखत कर दो तो इस कोठरी मे से निकाल-कर तुम्हे किसी लेबर-कप मे भेज दिया जाएगा, जहा खुली हवा म और कई साथी बात करन के लिए होगे और फिर क्या पता, यह वक्त कब और किस तरह बदल जाए '

हरदत्त हैरान हुआ, जब अफसर ने कहा, 'मैंने इस वक्त एम जी बी की वर्दी पहन रखी है, पर आखिर रूसी हू, मेरी रूह उसी मिट्टी की है, जिसन तालस्ताय, लेरमोनतोव, और पुशकिन जसे लोग पैदा किए थे, जिन्होन कभी भी जुल्म और तरद्दुद का साथ नही दिया था '

और अफसर न एक गहरा सास भर कर कहा, 'कल अगर मेरा तबादला हो गया, ता नया अफसर तुम्हे भयानक यातनाए दे देकर दस्तखत करवा लेगा। उससे अच्छा है कि तुम अभी दस्तखत कर दो, और इस अज़ाब मे स छूटकर लेबरकैम्प मे चले जाओ।'

यह एक दिल चीर देने वाली घडी थी, जब हरदत्त को लगा कि उसे आज तक जो भी दो आखो स दिखाई देता था वह पूरा सच नही था। इन दिख रही हकीकतो से आगे एक और हकीकत है, जिसे देखन के लिए आज उनकी तीसरी आख खुल रही है

और हरदत्त न तीसरी आख से कागज का देखत हुए, उस पर दस्तखत कर दिए

अगले हफ्तो मे हरदत्त की कोटरी का जो भी दूसरा साथी वनता रहा, उसकी आप-बीती एक अजीब हकीकत की तहे खोलती रही।

इनम से एक लगडा और बूढा रूसी था, जो जग के दिना मे महाज पर सिगनल दिया करता था। दुश्मन के गोला बारूद को उडात वक्त उसके काना क पर्दे फट गए थे? और जिसकी गिरफ्तारी के वक्त डाक्टर ने मुआयना करके कहा था कि वह मुश्किल से छह महीन भर जि दा रह पाएगा। इस पर गैर-सोवियत एजीटेशन करन का इल्जाम था। पर वह सियासत स इतना भी वाकिफ नही था कि जब उस पर मोनारकिस्ट होने का इल्ज़ाम लगाया गया, वह कहन लगा—फासिस्ट लफ्ज ता मैंन सुना

हुआ है, यह मानारक्स्टि क्या होता है?—उसकी हालत इन पेशियो के दौरान इतनी बिगडती चली गई, कि एक दिन कोठरी म ही बेसुध हो गया। उसे एक सतरी उठाकर कहीं ले गया। पर हरदत्त ने फिर कभी उसकी सूरत नही देखी।

इसी तरह एक बार हरदत्त की काठरी का एक साथी वह इजीनियर था, जिसने जग के दौरान, नियत वक्त मे, एक रलवे-लाइन बिछा दी थी। अब उस पर इल्जाम था कि उसने जमन फौजो के लिए वह लाइन जल्दी से तयार कर दी थी ताकि वह फौजे आगे बढ सकें। यह इजीनियर कहता था कि वह आत्महत्या कर लेगा, पर झूठे इल्जाम के कागजो पर दस्तखत नही करेगा। वह एक बार पेशी पर गया तो लौटकर नही आया।

इसी तरह एक युक्रेनियन जवान था, वास्या नाम का जो अपना गाव खाली होने पर, आलमअत्ता की एक फैक्टरी मे काम करने लगा था। वहा उसकी दोस्त-लडकी ने कुछ राशन-कार्ड चुराए थे, जो वास्या ने बाहर बेच दिए थे। इसकी सजा होने पर उसने अफसरो से कहा था कि जेल की कोठरी मे बद रहने की बजाय, वह जगी महाज पर जाकर लडना चाहेगा। वहा एक दिन जब जवान सिपाही दुश्मन की चौकी पर हमला करके दुश्मन की मशीनगन के सामने मर रहे थे, उसका कमाडर पीछे हटने लगा था। तब वास्या और कई सिपाही नाजियो के कब्जे मे आ गए थे। वह जगी कैदी जब छूटकर आए थे, उनके स्वागत के लिए महाज पर सजावट की गई थी, पर कुछ कदमो की दूरी पर उनके लिए जेलो की लारियाँ खडी थी

1949 का फरवरी का महीना खत्म होने को था, जब जेल के बडे वार्डन ने हरदत्त को बुलाकर एक कागज सामने रख दिया, और दस्तखत करने के लिए कहा।

'यह कैसा कागज है?' हरदत्त ने पूछा, तो वार्डन ने कहा 'तुम्हारी सजा का। तुम्हे पच्चीस बरस साइबेरिया मे रहने की सजा हुई है।'

उस वक्त कागज पर दस्तखत करते हुए हरदत्त को पूरी तरह सुध नही रही कि इस कागज के हर्फ सिर्फ दो आँखो से पढ रहा है कि तीसरी आख से भी

शाहीमहला के दीवान-आम और दीवान खास की तरह, उन दिनो सावियत जेला की काठरी आम और कोठरी खास हुआ करती थी। खास सिफ उन कैदियो के लिए थी, जिन्ह सजाए सुनाइ जा चुकी होती थी, पर अभी उन्ह लेबर कैम्पा मे भेजना होता।

आलमअत्ता की जिस खास कोठरी मे हरदत्त को डाला गया, उसमे उस वक्त चौदह कैदी थे। और अगामी दो हफ्ता मे जितन भर बारी बारी से निकाल कर किसी कैम्प मे भेजे गए, करीब उतने ही और नए उसमे डाल दिए गए। और हरदत्त न गौर किया—कि आम-काठरी वाला को अभी क मियाद पेशिया भुगतनी होती है, इसलिए वह उम्मीद और ना उम्मीदी के बीच मे लटकते हुए जितन दुखी होते ह, उतने यह, दस पन्द्रह या पच्चीस बरस की मियाद वाले और नाउम्मीदी के किनारे लग चुके, खास कोठरिया वाले, दुखी नही होते।

हरदत्त वाली खास काठरी मे एक बडा हसमुख बजुग था, जिसे पाच बरस की कैद सुनाई थी। एक दिन हरदत्त न कहा, 'तुम फिर भी खुशनसीब हो, तुम्हारा पाच की गिनती पर ही छुटकारा हो गया', तो वह अफसोस मे सिर हिलाकर कहन लगा, 'दोस्त! जख्मो पर नमक क्यो छिडकते हो? मेरे साथ तो स्तालिन न इन्साफ नही किया, उसन मेरी जिन्दगी सिफ और पाच बरस ही गिनी? मेरा एक दोस्त है पचहत्तर बरस का है, उसे पच्चीस बरस की सजा सुनाई है। इसका मतलब है कि वह ना पूरे सौ बरस जीएगा। देखो! इस अपनी अपनी मियाद से पहले कोई नही मर सकता।—अगर कोई मर जाए तो स्तालिन की हुक्म-अदूली के कारण उसे काउटर रैवोल्यूशनरी समझ लिया जाएगा"

दो हफ्ता बाद हरदत्त की और जिन कैदिया की बारी आई, उन्ह खास कोठरी म से निकालकर 'काले पहाडी कौवे' लारिया म डालकर स्टेशन की उस गाडी मे चढा दिया, जो पहियो वाली काल कोठरिया जैसी बनी होती है।

तीन दिन बाद यह गाडी, नोवीसीबीरस्क नाम के शहर म पहुची, जो

साइबरिया के रास्ते का पहला पडाव था। यहा की जेल मे हर दिशा ओर से आई गाडियो के कैदी इकट्ठे करके, उनका नया बटवारा कि जाता था, अलग अलग कम्पों मे भेजने के लिए।

यहा दो हफ्ते के 'क्याम' के बाद हरदत्त का और दो सौ और कैदि को मालगाडी मे भरकर ताइशेत भेज दिया गया। यह सात दिनो रास्ता, रही-सही जान भी निचाड देने वाला था।

इस स्टेशन से शहर की जेल ज्यादा दूर नही थी, इसलिए कैदियो गिनती करके, जब उन्हे खूखार कुत्तो और हथियारबन्द सिपाहियो 'हिफाजत' म ले जाया गया, हरदत्त हैरान हुआ कि शहर के लोग उन ओर देखते तक नही थे। वह जैसे आम साधारण भेडो का एक रेवड रहा हो

यह भी रास्ते म कैदी स्टाप अड्डा था जहा कैदियो की जिस्मा हालत के मुताबिक उन्हें अलग-अलग कैम्पो म भेजना होता था। इस जे का, नौ फुट ऊची कटीली तारो की दीवार से अलग करके दो हिस्सो बाटा हुआ था—एक जनाना, और एक मर्दाना। मर्दाना हिस्से म हरद ने देखा कि यहूदी और पश्चिमी युक्रेन के लोग ज्यादा थ, वैसे सोवि रूस के हर इलाके स लेकर दुनिया के हर देश के लोग थ। सिर्फ हि स्तानी की ओर स वह अकेला हिदुस्तानी था। इसके अलावा जर्मी के भी थे, और सफेद रूस के वह लोग भी, जो इन्कलाब के वक्त खिसक अ दूसर मुल्को मे चले गए थे, पर जब स्तालिन के बुलाव पर जब देश लौटे थे तो जेलो म डाल दिए गए थे।

इस जेल की कोठरियो म ताले नही लगाए गए थ, इसलिए बहुत कैदी एक कोठरी से दूसरी कोठरी मे घूमते हुए, एक दूसरे के साथ बा कर सकते थे। और हरदत्त को लगा, जैसे यह सबका विदाई मिलन हो

चौदह दिन के बाद हरदत्त को और कई दूसर कैदियो को ताइशे कैम्प यूनिट कैम्प नम्बर पाच मे भेज दिया गया। यह कैम्प ताइशेत औ अगारा दरिया के किनारे पर बसे हुए ब्रातसक के बीच मे पडता था यहा पहुचने पर, कम्प के अफसर ने एक खुली जगह पर सबको खड करवाकर एक तकरीर इस तरह की जैसे वह स्वागत की तकरीर हो

कहा, 'किसी को डरना नहीं चाहिए कि वह साइबेरिया के इस जगल तायगा मे से ज़िंदा वापिस नहीं जाएगा। यह सबके साथ अच्छा सलूक होगा। बशर्ते कि कामरेड स्तालिन की योजना के मुताबिक वह मेहनत से काम करें।' और उस अफ्सर ने यह भी कहा कि अगर वह सहयोग नहीं देंगे तो गोली से मार दिए जाएगे।

हरदत्त को लगा—यह तकरीर जगल मे साय-साय करती हुई और तूफान की तरह गुजरती हुई हवा है, जो इस कैम्प के खौफ और खतरे की पहली सूचना है

बैरको म कैदियो की भीड इस कद्र थी कि रात को वहा तभी सोया जा सकता था, अगर हर कोई करवट लेकर लेट जाए। एक घटा एक ओर सोने के बाद कोई एक कैदी आवाज दे देता कि अब करवट बदलकर, दूसरी ओर सोना है। इस तरह की एक एक घटे बाद उखडने वाली नीद को वह कैदी 'हुक्मी नीद' कहते थे।

हरदत्त वाले कैम्प के कैदियो को एक पुराने कैम्प की बैरको का गिराने का काम मिला, जो उपजाऊ कामो की गिनती मे नहीं आता था, इसलिए दोपहर मे हर एक को छह सौ ग्राम रोटी और सडी हुई बद गोभी और आलू के सूप के बिना कुछ नहीं मिलता था।

लगभग तीन महीने बाद यह कैदी 'उपजाऊ' कामो पर लगाए गए, तो कुछ पेट भर रोटी खाने को मिलने लगी। पर यह काम रीढ की हड्डी तोडने वाला था। घुटनो तक बर्फ मे धस कर चलना पडता था, जिस लिए यह आम बात हो गई कि किसी कैदी के पैर बेकार हो जाते थे किसी की उगलिया झड जाती थी, और किसी के नाक का अगला हिस्सा उतर जाता था। यह हादसा हरदत्त के साथ भी होने को था, जब एक दिन एक पेड काटते हुए को, पास से एक और कैदी ने देखा कि उसका नाक सफेद रग का हो गया है, और उसने भागकर बर्फ की एक मुट्ठी भरकर उसके नाक पर मलनी शुरू कर दी। हरदत्त दर्द से चीख उठा, पर कुछ देर की इस बर्फ-मालिश के बाद मुर्दा होते जा रहे नाक मे खून की हरकत होने लगी।

हुक्म दस घटे मेहनत का था, पर बर्फ मे से गुज़रकर काम पर पहुचने

वाने रास्ते के दो घट, और उमी तरह नौटान वाल दो घट मिनाकर, सुबह शाम की तलाशी वाल चार घट मिलाकर राज का यह वक्त अटठाम्ह घटे का हा जाता था। सुबह व वक्त कम्प के दरवाजे के आगे पाच-पाच की कतार लगाकर, उनके जिस्म और कपडे टटालकर, कम्प वाने गाड उन्हे काम की निगरानी वाल गाडों के हवाा कर देत, और शाम के वक्त काम की निगरानी वाले गाड, उमी तरह पाच-पाच की कतार लगाकर, उनके जिस्म और कपडे टटालकर, उन्हे कैम्प वाले गाडों के हवाले कर देते।

रोज की तलाशी रस्म म चार घटे लगते थे। पर अगर किसी दिन गिनती मे काई गलती हो जाती, ता दाबारा गिनती करते हुए पाच या छह घटे भी लग जाते थे। इसलिए अगर कोई आदमी जगल मे काम करता हुआ किसी दिन मर जाता, ता बाकी के कदी उसकी लाश उठा लात, ताकि गिनती पूरी हो सके।

किसी कैदी के भाग जाने का सवाल पैदा नही होता था, पर मर जाने का मवाल पैदा होता था, इसलिए कई कदी किसी न किसी तरीके से बाह की या टाग की नस चीरकर आत्महत्या कर लेते थे। कइ कैदी एसे भी थे जा बाए हाथ की उगलिया काट लेते थे—ताकि छह महीन जानतोड काम स बचा जा सके। कुछ वह भी थे—जो किसी ब्रिगेडियर या फोरमैन को मार देत, ताकि ट्रायल के और तफ्तीश के लम्बे अर्से म वह मुशक्कत स बच सके।

जिस तरह यह कदी दो हिस्सो मैं बटे हुए थे—एक मुशक्कत करने वाले, और दूसरे करवान वाल इसी तरह मुशक्कती भी आगे तीन तरह के थे। एक वह जा सियासत से बिल्कुल अजान थे या कुछ वह जिनकी थाडी सी रुचि सियासत म हो गई थी जिसके लिए वह अपनी किस्मत को कासत रहत थे और चुपचाप मुशक्कत करत रहत थे। यही तमाम कदिया मे स कोई अस्सी फासदी थे। और दूसरी तरह के वह लोग थे, बहुत थोडी गिनती के जो बीमारिया न इतने नाकारा कर दिए थे कि किसी भी काम के काबिल नही रहे थे। वह चुपचाप धीमी मौत मर रहे थे। और तीसरी तरह के वह जवान कैदी थे, जा अच्छे पढे लिखे थे,

सियासत का ममझत थ, और साचत थे कि मरत मेहनत करना— आज के निज़ाम का ताकतवर बनाकर अपनी ही वडिमा का मज़बूत करना है। यही तीसरी तरह के लाग थे जिन्हे खतरनाक समझ कर सख्त निगरानी मे रखा जाता था।

हर कैम्प का एक हिस्सा कदियो का नए सिर से तालीम-याफ्ता करन के लिए हाता था—जहा सिफ वह किताब पढन के लिए दी जाती थी—जा स्तालिन की लिखी हुइ या स्तालिन के वार मे लिखी हाती थी। या दूसर नताओ की तकरीर हाती थी, जा जिल्दें बधवा कर वहा रखी जाती थी। महीन मे एक बार नाटक मडली कोई एसा नाटक पश करती थी जिसम कदियो का मुखातिब हाकर यह ज़रूर कहा जाता था कि ज्यादा उपज के नियत लक्ष्य का पूरा करन के लिए, वह जी-जान स मुशक्कत करन रहे। और हरदत्त न देखा कि जा कदी इम तलीम कार-वाइ म दिलचस्पी लत थ, या दिलचस्पी जाहिर करत थे, उन्हें खान क लिए कुछ ज्यादा दिया जाता था।

वरस मे तीन बार गुलाग से एक कमिशन आता था, जिसे इस कैम्प के कुछ बलवान लाग चुनकर, उन दूसरे कैम्पो म भेजन होते थे—जिनम उपज का लक्ष्य पूरा नही हो रहा था, और इसलिए ज्यादा मेहनत कर सकन वालो की वहा ज़रूरत थी।

अप्रल 1950 की बात ह, जब सियासी कैदिया के लिए नम्बर बाटे गए। यह नम्बर उनके नामो की जगह पर प्रयोग करने के लिए थे, जा कपड़े के चार इच आठ इच टुकडा पर लिखकर—कैदिया के कोटा, कमीजा, पाजामा और टापिया पर सिल दिए गए। इस वक्त हरदत्त का नाम 666 हा गया।

24

1951 के दरम्यान म, जब हरदत्त ताइशेत के कम्प नम्बर 54 म था, एक दूसरी ब्रिगड का कैदी उसका कुछ दास्त बन गया और उसन बताया कि

चार कैदी मिलकर यहा से भागने की सोच रहे थे, जिसके लिए उन्होने, जगल के दरख्तो को उडाने के लिए मिले बारूद मे से, रोज कुछ बचा बचा कर, थोडे से बम तैयार कर लिए हैं। और उसने पूछा, 'तुम 666 अगर हमारे साथ मिलना चाहो तो मैं तुम्हारा तबादला अपनी ब्रिगेड मे करवा सकता हू।'

'इस दोजख म से निकलना जरूर चाहता हू, पर हम भाग कर कहा जाएगे। इस जगल के दूसरे सिरे पर पहुचने मे ही तीन महीने लग जाएग। रास्ते मे न कोई फल का पेड है, न बेरो की झाडिया' हरदत्त न कहा, और उसे इसी कैम्प मे सुनी हुई वह भयानक कहानिया याद आ गईं कि जिन्होने भाग कर कोई रास्ता खोजना चाहा था, आखिर मे भूख के हाथो वह एक दूसरे का मास खाने की हालत पर पहुच गए थे।

नही दोस्त ! मैं तुम लोगो की खुशकिस्मती चाहूगा, पर मैं तुम्हारे साथ नही जाऊगा' हरदत्त न कहा और थोडे दिनो बाद ही शाम के पाच बजे दूर से कही बन्दूकें चलन की आवाज सुनाई दी। और आधे घटे बाद एक जख्मी अफसर को और जख्मी हो गए शिकारी कुत्ते को लौटते हुए देखा। उस वक्त सतरी न बताया कि आज जो चार कैदी भाग गए थे, उन्होने बम मारकर पीछा करते हुए अफसरो मे से एक को जख्मी कर दिया है।

रात को जब सभी कैदी बैरको मे बैठे थे, उस वक्त खारलामोव नाम के एक कैदी ने हरदत्त के पास आकर पूछा, 'तुमन सुना है कि भागन वालो ने बम चलाए थे, और एक अफ्सर जख्मी हो गया है ?' तो हरदत्त के मुह से निकला 'अफ्सोस यही है कि वह मरा नही।'

और अगली सुबह से हरदत्त की गिनती दूसरे पच्चीस कदियो समेत, "खतरनाक कैदियो मे होने लगी और इसका नतीजा यह हुआ कि हर दो महीने बाद उसका तबादला किसी नए कम्प म कर दिया जाता।

पर हरदत्त ने खुश होकर देखा कि खतरनाक कैदिया म खौफजदा हुए अफसर, भले ही उन्ह इतनी सख्त निगरानी मे रखते थे कि काम पर जाते वक्त उन्ह हथकडिया भी पहना दी जाती, और चार चार कैदियो के लिए, एक-एक हथियारबन्द सतरी निगरानी पर हो गया था, पर जेल के रसोइए

उनसे कुछ डरते हुए उन्हें कुछ ज्यादा रोटी भी देने लगे थे और गाढ़ा सूप भी। साथ ही दोनों वक्त की हाजिरी और तलाशी के लिए उनके लिए एक खास सतरी लगा दिया गया था, जिस लिए उन्हें घंटा भर बर्फीली हवा में खड़े नहीं होना पड़ता था। और रोज के मुकर्रर हुए काम में से अगर वह पांच या दस फीसदी कम भी काम करते थे, तो उस कमी की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। ऊपर से यह कि गर्मी के दिनों में उन्हें बैरकों में ताले लगाकर रखा जाता था क्योंकि वह दिन कैदियों के भागने के लिए, कुछ आसान गिने जाते थे, और इसलिए उन्हें मुशक्कत से छुट्टी मिल जाती थी।

यही 1952 के गर्मियों के दिन थे, जो हरदत्त का और पश्चिमी युक्रेनिया के जवान साथियों को कोठरी में बन्द रहकर गुजारने थे, कि एक दिन युक्रेनिया वाले रो में आकर आजादी के गीत गाने लगे। उनकी जुबान का कोई हर्फ हरदत्त के पल्ले नहीं पड़ा, पर तर्ज में कशिश थी, और उनकी आवाज़ का जोश था कि हरदत्त लकड़ी के तख्ते को तबला-सा बनाकर बजाने लगा। गीत के अर्थ उन्होंने बाद में हरदत्त को बताए, लाल झंडे को उतारकर हमें अपने देश पर अपने देश का झंडा फहराना है।'

अगले दिन से इन 'खतरनाक' आदमियों का खाना, दो हफ्तों के लिए सिर्फ पानी और ढाई सौ ग्राम रोटी हो गया। इस पर युक्रेनियन जवानों ने नाराजगी जाहिर करते हुए भूख हड़ताल करनी चाही, तो हरदत्त ने साथ देते हुए कहा, 'भूख हड़ताल के मामले में मैं अपने भगतसिंह से सहमत हूं।'

हड़ताल के पांचवें दिन एक अफसर ने आकर हरदत्त को समझाया, 'हम जानते हैं, तुम्हारा गांधी इस तरह की हड़ताल से अंग्रेजों को डरा लेता है, और तुम भी गांधी के बुर्जुआ चेले हो, पर इस तरह की धमकियां सोवियत यूनियन में नहीं चल सकतीं' तो हरदत्त ने कहा, 'यह बुर्जुआ अमल नहीं, जमहूरियत का अमल है। सोवियत यूनियन अपने निज़ाम को जमहूरी समाजवादी निज़ाम कहता है, फिर यह गैर कानूनी किस तरह हो गया?'

अफसर ने गुस्से से कहा, 'लगता है तुमने अक्ल की खुराक कुछ ज्यादा...

उस वक्त फोरमन को हैरानी हुई और वह कहने लगा जिन लोगों को काऊंटर रेवोल्यूशनरी कह कर यहां जेलों में डाल रखा है तुमने उनमें से कितने भर काऊंटर रेवाल्यूशनरी देखे हैं ?

हरदत्त अपनी तीसरी आंख के जलवे में आने वाले कल के वक्त को देखता हुआ जो कुछ कह रहा था उस से लौट कर आज के वक्त पर आया, तो कुछ चुप सा हो गया। उसकी तीसरी आंख भी एक दो बार थपक कर कुछ नीची हो गई। कहने लगा, कोई नहीं देगा, सभी सीधे-सादे किसान और कामगर हैं जिन्हें रियासत का कुछ पता नहीं है। या कम पढ़े लिखे लोग हैं जिन्होंने इसी निजाम की हिमायत में काम किया था। इसीलिए मैं कई बार बहुत हैरान हो जाता हूं। पर मैं इसी नुक्ते को खोजने की कोशिश कर रहा हूं कि किस जगह पर, और किससे यह गलती हो गई कि एक बहुत खूबसूरत निज़ाम की सारी सूरत बिगड़ कर इतनी भयानक हो गई है ,

25

अगले दिन हरदत्त को काम पर जाने से रोक लिया गया। शाम को उसकी बैरक में आकर उसके एक दोस्त ने कहा 'तुम बड़े मूर्ख हो हरदत्त। कल तुम फोरमैन के साथ जो बातें कर रहे थे वह किसी अफसर ने सुन ली है। अब तुम्हें खतरनाक' कैदियों वाले कैम्प में भेज दिया जाएगा — और हफ्ता नहीं गुजरा था हरदत्त को उस नए कैम्प में भेज दिया गया — जहां के कैदी रोज़ खुदा से मौत की दुआ मांगते थे।

यहां हरदत्त की एक उस कैदी से दोस्ती हो गई जो शिंघाई से वापस अपने देश लौटा था, और जेल में डाल दिया गया था। यह रूसी अच्छा पढ़ा लिखा और गम्भीर आदमी था इसलिए हरदत्त उससे कई ऐसे सवाल पूछने लगा, जिनका जवाब उसे मिलता नहीं था।

यार ! मुझे यह बताओ कि माओ की लाल फौज ने पूरा चीन जीत लिया, पर दक्षिणी कोरिया और ताएवान पर कब्जा क्यों नहीं कर सका ?'

एक दिन हरदत्त ने पूछा, तो वह आदमी हंस दिया 'तुम्हारा सवाल वाजिब है, पर हकीकत यह है कि माओ अमरीकिया के फेर में आ गया है।'

हरदत्त हैरान होकर उसकी ओर देखने लगा, तो उसने कहा 'सियासत के तक अपने ही होते हैं। बात यह है कि 1917 का अक्तूबर इन्कलाब कामयाब हो गया था। उसका हश्र फ्रांस वली बगावत जैसा नहीं हुआ? इसलिए पश्चिमी ताकतें घबरा गई। इन्कलाब के दौरान और बाद की खानाजंगी में भी पश्चिमी ताकतों की हथियारबन्द दखलअंदाजी का हाथ था। पर रिएक्शनरी ताकतें हार गई तो पश्चिमी ताकतों ने जान लिया कि जब तक रूस के लोग बालशेविक फौजों का साथ देते हैं, तब तक कुछ नहीं हो सकता। ऐंग्लोअमेरिकन ब्लाक फिक्रमन्द था। पर जब तक लेनिन जिन्दा था, वह कुछ नहीं कर सका, लेनिन की मौत के बाद, बालशेविक पार्टी में पड़ चुकी फूट ने, और सियासी ताकतों की खींचातानी ने, उस ब्लाक को मौका दे दिया, और उसने रूस की लोक शक्ति को गुमराह करके, समाजवादी निज़ाम के खिलाफ कर दिया। वह ब्लाक जानता था कि बाहरी ताकत सिफ तभी असर-अन्दाज हो सकती है, जब वह अंदरूनी मुखालफत को अपने साथ मिला लेती है।'

पर ' हरदत्त कुछ कहने लगा था, कि उस दोस्त ने कहा 'यह ठीक है कि उस तरह वह सोवियत रूस के विकास को रोक नहीं पाया था, सिफ उसकी गति को धीमी कर पाया। इसलिए उसने हिटलर की ताकत का मुंह इस ओर मोड़ दिया। वह ब्लाक रूस के लोगों को गुमराह कर चुका था, इसलिए लोगों की बेदिली ने, हिटलर को हमला करने की हिम्मत दे दी पर लोग आखिर रूस के लोग थे, उनकी नजर भी जाग उठी, और फासिस्टों से बचने का फैसला भी जाग उठा '

पर तुमने चीन पर अमेरिकन असर की बात किस तरह कह दी ?' हरदत्त ने पूछा तो उसने कहा 'हिन्दुस्तान जब बरतानवी ताकत के हाथ से निकल गया, तो अमरीका को सोवियत प्रभाव रोकने के लिए, एशिया में कोई जगह चाहिए थी खासकर वह जगह, जो सोवियत रूस के साथ लगती हो। वैसे तो जमहूरियत के नाम पर अमरीका ने कोशिश की थी हिन्दुस्तान को अपनी ओर करने की, पर हिन्दुस्तान का जवाहरलाल नेहरू बहुत

दूरअदेश है। उससे निराश होकर अमरीका ने माओ के बारे में सोचा। अमरीका को मालूम था कि माओ का यकीन कम्यूनिज्म में है, पर वह चीनी स्वभाव को जानते थे कि कुछ भी हो, वह 'शावनिस्ट' जरूर होगा। इसलिए वह बाहर से च्यांग काई शेक को मदद तो भेजते रहे, पर इस तरह कि वह सारा जंगी सामान माओ की फौजों के हाथ पड़ जाए। अब वह अपनी हिटलर वाली गलती नहीं दोहरा सकते थे, इसलिए दक्षिणी कोरिया और ताइवान तक माओ को नहीं पहुंचने दिया।'

हरदत्त हैरान हुआ 'अगर यह सच है तो अमरीका ने लाल चीन को मान्यता क्यों नहीं दी ?' हरदत्त का वह दोस्त हंस दिया। कहने लगा, 'उसके लिए वक्त चाहिए दोस्त ! यह अमरीका की दूरअंदेशी है। अगर तुम जिन्दा रहे तो मेरी आज की बात याद रखना कि बीस बरस के बाद सोवियत यूनियन से बाहर के हर मुल्क में कम्यूनिस्ट पार्टी दो हिस्सों में बंट जाएगी। एक जो मास्को पक्षी होगी, और एक जो पीकिंग पक्षी होगी। और इससे भी भयानक यह बात होगी कि सोवियत रूस के लिए अमरीका इतना सिरदर्दी नहीं रहेगा, जितना चीन हो जाएगा।'

यह वही 'बहुत खतरनाक' कैदियों वाला कैम्प था, जहां हरदत्त की तीसरी आंख में रोशनी बढ़ने लगी। जिस वक्त भी कभी दो चार मिनट मौका मिलता, वह अपने रूसी दोस्त को खोजने लगता। उसे 'स्तालिन' उस पहेली जैसा लगता था, जिसे वह बूझ नहीं पा रहा था। एक दिन जब यह पहेली भी उसने अपने दोस्त के सामने रख दी तो वह हंसने लगा, 'यार ! वह तो रबर की मोहर है, बेरिया के हाथ में पकड़ी हुई।'

और 1953 के मार्च का शुरू था, जब मुशक्कत से लौटते हुए कैदी कैम्प-अफसर के दफ्तर के सामने से गुजरे, तो उन्होंने देखा कि दफ्तर की दीवार पर लगी हुई स्तालिन की तस्वीर के चौखटे पर काला कपड़ा लगा हुआ है।

वह जब बैरकों के पास पहुंचे तो एक अफसर ने उन्हें एक कतार में खड़े होने के लिए कहा और उस वक्त कैदियों ने खुशी, हैरानी और बेयकीनी से उस अफसर से यह खबर सुनी कि समाजवाद के महान नेता स्तालिन की मौत हो गई है।

सभी कैदी जब बरका के भीतर चल गए—ता कुछ मिनट हैरानी स
' दूसर को देखन रहे, फिर खुद ब खुद एक दूसरे से गले मिलन लगे
ो की रात इन्ही अनुमाना म गुजर गई कि अब अचानक उन्ह रिहा कर
ा जाएगा कि नही

हरदत्त न किसी से कहा कुछ नही, पर उसे लगा कि स्तालिन की मौत
कैम्पा म कुछ तब्दीलिया जरूर आएगी, पर बेरियावाद छाटी चीज नही
के राता रात यह कैम्प खत्म हा जाए

अगले कुछ ही दिना म अफवाह आन लगी कि कई कैम्पा मे कैदी
फरमाबरदारी पर उतर आए हैं, जिसके कारण कदिया पर निगरानी
र बढ गइ है। सितबर क दरम्यान म हरदत्त का और दूसर कई कैदिया
ओमसक के लेबरकैम्प मे भेज दिया गया। यहा कैदिया स कैम्प के
ादीक बन रही फैक्टरी के निर्माण का काम लिया जाता था। यहा
दत्त न हाकिम रवैय्ये म एक तबदीली आती हुई दखी कि वह हर बात
बडी एहतियात बरतन लग है।

बाहर की कुछ खबरें भी, जेल की दीवारो मे स छनकर आन लगी,
नम स एक यह खबर भी थी कि स्तालिन कुछ बीमार हा गया था,
क्टरा ने बडे इजेक्शन लगाए पर उनके जिस्म का आधा हिस्सा बकार
गया था। और वह ऐसा बेहोश हो गया कि उस आखिरी वक्त तक
ा नही आया। यह अफवाह भी दीवारो मे स छनकर आई कि स्तालिन
बरिया न जहर देकर मरवाया है फिर यह अफवाह भी जल मे पहुची
बेरिया न क्रेमलिन पर कब्जा करन के लिए एम जी बी के टक भेजे
पर डिफस मिनिस्टर ने वक्त पर जवाबी हमला करके बरिया को
रफ्तार कर लिया है

1954 का जनवरी महीना था—जब हरदत्त को तीन सौ कदियो
ाथ जैजकाजगान मे भेज दिया गया। यह वही जेल थी जहा से वह लग
ा साढे दस बरस पहले रिहा हुआ था

यहा हरदत्त न एक बहुत बडा फर्क देखा कि अफसरा का सलूक
कुल बदल चुका है कदियो का बताया गया कि उन्ह जो भी शिकायत
वह लिख दे, उनकी शिकायत सीधी क्रेमलिन तक भज दी जाएगी।

यह भी बताया गया कि बीमार कैदियों से काम नहीं लिया जाएगा, उन्हें डाक्टरी मदद दी जाएगी। पर हरदत्त को और हैरानी हुई, जब बताया गया कि कैदियों को मेहनत की उजरत भी दी जाएगी

यह वक्त था जब कैदियों की ओर से ऊंची आवाज में एक ही मांग पैदा हुई कि उन्हें रिहा कर दिया जाए। अफसर चुप थे, पर एक दोपहर एक संतरी ने आकर कैदियों से कहा कि आज से रात को बरकों के ताले बंद नहीं किए जाएंगे और नंबरों से भी नहीं बुलाया जाएगा वह कैम्प के डाइनिंग हाल में आकर रोटी खा सकते हैं

कई कैदियों ने आवाज उठाई कि वह जबरी मुशक्कत नहीं करेंगे इस पर कोई हफ्ते बाद एक अफसर ने आकर कैदियों से कहा, हम जानते हैं कि जेलों में पड़े हुए लाखों लोग बेगुनाह हैं। वह जरूर रिहा कर दिए जाएंगे। सबकी सुनवाई हो रही है, पर कुछ वक्त लगेगा। तब तक सब बंदी अगर कामों के निर्माण में लग जाएं—तो वह खुद अपनी मदद कर रहे होंगे'

यह इलाका तांबे के खानों का था, पर दस बरस पहले जो बिल्कुल वीरान पड़ा हुआ था, अब वहां खानों का काम हो रहा था। हरदत्त और कई दूसरे कैदी खानों में जाकर काम करने लगे।

ज्यों-ज्यों दिन गुजरते गए कैदियों की बेचैनी भी बढ़ने लगी। हौसला भी और बगावती जोश भी। इस वक्त हरदत्त को और कई दूसरे कैदियों को नए कैम्प में भेज दिया गया। वहां हरदत्त ने खबर सुनी कि बगावती कैदियों वाले कैम्प में—कैदियों ने मर्दों और औरतों की जेल के बीच की दीवार गिरा दी है। और इसलिए उस कैम्प की बिजली भी काट दी गई है, साथ ही रोटी की सप्लाई भी बंद कर दी गई है। फिर यह भी सुना कि एक इंजीनियर कैदी ने डैनेमो बनाकर कैम्प में बिजली ला दी है, और क्रैमलिन से एक अफसर ने आकर बगावतियों के मुखिया से बात चीत करनी चाही है। फिर सुना कि कैम्प कैदियों ने बात-चीत से इंकार करते हुए एक ही पेशकश सामने रखी कि जबरी मुशक्कत के यह कैम्प बंद किए जाएं और उन्हें आजाद शहरी होने का हक लौटा दिया जाए।

इसके बाद हरदत्त उस तवारीखी किले में बंद कर दिया गया जहां

उसे पता लगा कि इस शहर 'स्विरदलोव' का पुराना नाम यकतरीनवग हुआ करता था, और 1917 वाली बगावत के बाद, इसी किले मे जार निकोलास को उसके सारे शाही परिवार का कत्ल कर दिया गया था

इस किला जेल की हालत हरदत्त के लिए बिल्कुल नई थी। कमरे खुले और रोशन थे। यहा कैदियो को किताब पढ़ने की इजाजत थी, शतरज खेलने की भी। और महीने मे एक बार अपने-अपने घर मे खत लिखने की भी।

यहा जो कैदी अपने-अपने यकीन के मुताबिक अगर इबादत करना चाहते, ता कर सकते थे। बाकी कैम्पा मे हर तरह की मजहबी इबादत पर सख्त पाबदी होती थी। और यहा उन्हे बताया गया कि उनके मुकदमा की जाच पडताल हो रही है, वह जल्दी रिहा कर दिए जाएगे।

हरदत्त इसी किले मे था—जब पता लगा कि हिदुस्तान का वजीर-आलम पडित जवाहर लाल नहरू सावियत यूनियन म आया है, और वह इस तवारीखी शहर को देखने के लिए यहा भी आएगा यह रात थी जब हरदत्त की पलकें नही जुडी वह सारी रात सिगरेट पीता रहा सुबह हाने को थी, जब पहरे के सतरी ने उसे आवाज देकर कहा, 'तुम अभी तक नही साए ? मैंने आज तुम्हार देश के प्राइम मिनिस्टर की एक झलक देखी थी—ईमान से, मैंने कभी इस तरह का रूहानी नूर वाला और इन्सान नही देखा।'

हरदत्त न सतरी का शुक्रिया किया और पलकें मूदकर उस वक्त की कल्पना करने लगा जब आज से बीस बरस पहले जवाहरलाल गुज्जरावाला मे आया था, और उसकी तकरीर का एक-एक हर्फ उसने चौदह बरस की उम्र मे अपनी छाती म उतार लिया था

और हरदत्त का चीख कर रोने को मन हुआ—आज वही उसका जवाहर लाल उसके पास से गुजरा है, पर वह एक दीवार के पीछे बठा हुआ, उसे आवाज नही दे सकता

1955 के मई म हरदत्त को इता के लेबर-कैम्प मे भेज दिया गया। यह कोयले की खाना का शहर था, कोहरे से ढका हुआ। कुछ देर पहले यहा कैदियो की बगावत हुई थी, पर बडी सख्ती से दबा दी गई थी। यहा हरदत्त को एक महीना 'कुआरनटिन' मे रहना था, जिस दौरान उसने किसी अफसर से मिलना चाहा, तो उसकी माग मजूर हो गई। उसने पूछा, ''स्विरदलोव' वम्प मे मुझे बताया गया था कि मेरी सुनवाई हो रही है, पर उसके बाद मुझे कुछ नही बताया गया।'—तो उस वक्त कैम्प कमाडर ने कहा कि इसके लिए वह अर्जी लिखकर भेज सकता है।

हरदत्त न उस वक्त खुगेसोव के नाम एक लम्बा खत लिखा, जिसमे 'आत्मकथा' की तरह जो भी उसके साथ बीती थी, उसे विस्तार से लिख दिया।

'कुआरनटिन' वाले महीन के बाद जब वह कम्प के साथिया से मिला, तो हैरान हुआ कि हर कैदी का उसकी मेहनत की उजरत मिल रही है। हफ्ते मे एक बार कैदियो को कोई फिल्म भी दिखाई जाती है, और साधारण मजदूरो को तकनीकी प्रशिक्षण दिया जा रहा है

काम पर लगने से पहले हरदत्त का डाक्टरी मुआयना हुआ, तो डाक्टर न हर तरह की तफ्तीश करके कहा कि उसे फौरन अस्पताल म भज देना चाहिए, साथ ही अच्छी खुराक दी जाने की हिदायत लिख दी।

यहा अस्पताल मे जब हरदत्त बिल्कुल फुर्सत मे और आरामदेह हालत मे था तो उसन रूसी जुबान के इल्म को काम म लाना चाहा। सोचा—रूसी विद्यार्थियो के लिए यह उर्दू और हिन्दी मे कुछ किताबें लिख सकता है।

इस वक्त कैदिया को यह इजाजत मिल चुकी थी कि कैद हान के वक्त वह जिस जिस क्षेत्र म काम कर रहे थे, उन कामा का वह कैम्पा म जारी रख सकत है। इसलिए हरदत्त न अस्पताल के हर मरीज साथी स पूछा कि अगर किसी का कोई दोस्त या रिश्तेदार मास्को मे रहता हो ता वह कुछ डिक्शनरिया और उत्तर भारत की जुबाना के बारे मे कुछ किताबें

मगवाना चाहेगा। उस वक्त पावलिक नाम के एक जवान रूमी ने उसे मास्का मे रह रही अपनी एक दास्त का पता लिख दिया।

दस सितम्बर का दिन था, जब हरदत्त न पावलिक का हवाला देकर मिस ऐवगनिया लवी मकाया का खत लिखा। जिसके जवाब म तीन अक्तूबर का लिखा हुआ एवगनिया का खत उस मिला कि यह किताबें बहुत थोडी गिनती म छपती हैं, इसलिए इस वक्त नही मिल पाइ पर वह ध्यान रखेगी, और जब भी जा किताब मिल गई, वह भेज देगी।

पावलिक के साथ बातें करने से हरदत्त को पता लगा कि वह और एवगनिया कभी माहब्बत करत थे, पर दस बरस की कद मे पावलिक का नजरिया बदल गया था, जिसस ऐवगनिया परेशान भी थी, और उससे गुस्सा भी।

हरदत्त और ऐवगनिया के अगले खतो म अपनी अपनी जिन्दगी का कुछ हाल हवाल भी लिखा जान लगा था कि हरदत्त का तबादला किराब के कैम्प मे हो गया। यहा भी सिफ दो दिन का 'कयाम' था, जहा से कदियो को गाडी मे गोर्की नाम स शहर म भेज दिया गया। फिर वहा से आग हरदत्त को 6 जनवरी 1956 के दिन जुबोला कम्प मे भेज दिया गया, जहा सारे कदी दूसर मुल्का के थे। यहा किसी कैदी को काम करन के लिए मजबूर नही किया जाता था, और अफवाह थी कि वह सब अपने-अपन मुल्का मे भेजे जान वाले है

यहा से हरदत्त न ऐवगेनिया को अपने नय पत वाला खत लिखा, जिसके जवाब से उसने जाना कि ऐवगनिया इता कम्प मे जाकर पावलिक से मिली थी, पर वक्त न पावलिक के साथ उसकी मोहब्बत के सपन ताड दिए ह। और अब वह हरदत्त की दास्ती का एक गहरे रिश्ते की सूरत मे इतजार कर रही ह। उसन खत म हरदत्त की तस्वीर मागी थी, और चाहे इस कैम्प म तस्वीर उतरवान की इजाजत थी पर भी वह अपनी हड्डियो की मुठठी जैसी सूरत एवगीनिया का दिखाना नही चाहता था।

पर 29 फरवरी को हरदत्त को पता लगा कि उस और किसी कम्प मे भेज दिया जाएगा, और वहा न जान किस तरह की मनाही हागी, इसलिए उसन जल्दी से अपनी एक तस्वीर उतरवा कर ऐवगेनिया को भेज दी।

पोनमा के नये कैम्प मे पहुच कर उसे पता लगा कि शायद जल्दी ही उस मास्को भेज दिया जाएगा, जहा उसके मुकदमे की तफ्तीश हा रही है। उसन यह खबर ऐवगेनिया को लिखी कि अब शायद कुछ देर तक वह खत नही लिख पाएगा।

माच की चार तारीख थी—जब हरदत्त को मास्को की लुबियानका जेल मे भेज दिया गया, जहा आज से पद्रह बरस पहले उसने कई दिन गुजारे थे। और इस जेल की दीवार के भीतर पैर रखत हुए उसे हसी-सी आ गई—'धरती सचमुच गोल हाती है अगर मुझे पद्रह बरस बाद फिर यहा ले आई है, तो आखिर किसी दिन मुझे हिदुस्तान भी ले जाएगी, जहा से मैं चला था '

पर हरदत्त हैरान हुआ जब उसे अकेली कोठरी मे डाल दिया गया। यहा उस खत लिखने की भी मनाही थी। उसके पास एवगनिया के जितन खत थे, वह भी ले लिए गए थे। वह पहरे के सतरी से इसका कारण पूछता रहा पर उसके पास कोई जवाब नहीं था। आखिर डेढ महीने बाद एक अफसर आया, जो तीन दिन बाद उसे तफ्तीश अफसर के पास ले गया।

उस अफसर न बताया कि उसके मुकदमे की दोबारा तफ्तीश नही हो रही, क्याकि अदालत की ओर से सजा नही हुई थी। पर बस पडताल हो रही है, शायद कुछ दिनो बाद उसे अच्छी खबर मिलेगी।

और अफसर ने पूछा, 'तुमने 1948 मे जासूस हान का इल्जाम कबूल क्या किया था ?'

हरदत्त हस-सा दिया, 'खुद विसट चर्चिल न मुझे यह काम सौपा था, यह उस वक्त के अफसरा का मालूम था, मुझ नही।'

तफ्तीश अफसर ने आखे झुका ली, कहा, 'वह बहुत खौफनाक दिन थे—पर अब सब कुछ ठीक हा जाएगा '

अगली सुबह हरदत्त का उस अकेली कोठरी मे से निकालकर दूसर कदियो वाले कमरे मे भेज दिया गया। यहा खत लिखन की इजाजत थी, इसलिए हरदत्त न एक सिगरट सुलगात हुए एक आस भी सुलगा ली और ऐवगनिया का खत लिखा कि बद और आजादी के बीच की जिस एक दीवार का फासला, वह पद्रह बरस स तय कर रहा था—अब वह फासला

खत्म होने को है

1956 के मई महीने की 30 तारीख थी, जब दोपहर को तफ़तीश अफ़सर ने हरदत्त को बुलाकर कहा, 'क्या हाल है कामरेड हरदत्त ?'

हरदत्त के कानों को यकीन नहीं हुआ कि अफ़सर उसे कामरेड कह कर मुखातिब हुआ है। जेलों में इस लफ़्ज़ का प्रयोग करना सख्त मना था।

सूरज की आखिरी लाली अभी आसमान पर थी, जब हरदत्त ने रिहा होकर जेल के बाहर के दरवाज़े में से पैर बाहर निकाले। सामने दिख रहा था कि रात पड़ने वाली है—पर हरदत्त की तीसरी आंख ने सफ़ेद-सफ़ेद काले होते जा रहे आसमान की ओर देखा, और कहा—इस रात के दामन में से नया सूरज चढ़ने को है—उसकी मोहब्बत के आसमान पर भी, और समाजवादी निज़ाम पर भी

□ □

प्रतिष्ठित लेखको की चुनिन्दा एव बहुचर्चित पुस्तके

पराया	रागेय राघव
सांचा	प्रभाकर माचवे
अरथी	श्रीकांत वर्मा
मकबरा	मुद्राराक्षस
आखा की दहलीज	मेहरून्निसा परवेज़
असत्य भाषा	लक्ष्मीनारायण लाल
बम्बई का बागी	सत्यजीत राय
प्रीति कथा	नरेन्द्र कोहली
बाज़ार को निकले हैं लाग	रामदरश मिश्र
हरदत्त का ज़िन्दगीनामा	अमृता प्रीतम
हिमाशु जोशी की कहानिया	हिमाशु जोशी
मालती जोशी की कहानिया	मालती जोशी
नरेन्द्र कोहली की कहानिया	नरेन्द्र कोहली
अमता प्रीतम की कहानिया	अमता प्रीतम
लतीफे अपने-अपन	रमेश बक्षी